प्रस्तावना

इच्छाओंका निरोध करना सो तप है और ऐसे तप बारह प्रकारके हैं उनके अनशन (उपवास) ऊनोदर (एकाशन) आदि छह प्रकारके बाह्य तप हैं और ऐसे तपका अभ्यास करनेके लिये ही जैन धर्ममें अनेक प्रकारके व्रत करनेके विधान हैं तथा उन सब व्रतोंकी विधि व उनके करनेसे क्या २ फल मिलते हैं उनको बतानेवाली उन व्रतोंकी कथायें प्रचलित हैं परन्तु वे प्रायः कवितामें होनेसे तथा एकसाथ न मिलनेसे बड़ी असुविधा थी जिसको दूर करनेके लिये हमने ४ वर्ष हुए गुजराती हिन्दी व मराठी भाषाकी गद्य अथवा पद्य व्रतकथायें संग्रहीत करके उन्हें सरल हिन्दी भाषामें श्री धर्मरत्न पं० दीपचन्दजी वर्णीसे लिखवाकर प्रकट की थीं उनके बिक जाने पर वीर सं० २४५२में उसकी दूसरी आवृत्ति २४५४ में तीसरी २४६२ में चतुर्थ, २४६५ में पांचवीं वी० २४७८ में छठी व वीर सं० २४८३ में सातवीं आवृत्ति प्रकट की थी वह भी बिक जानेपर कागजकी अत्यन्त मंहगी होनेपर भी यह आठवीं आवृत्ति प्रकट की जाती है।

इस कथा संग्रहमें अबकीवार कुल १९ कथाओंका संग्रह हो सका है। यदि और भी कथायें मिल सकेंगी तो आगामी आवृत्तिमें वे भी सम्मिलित की जावेंगी। निस्पृह निस्वार्थ वृत्तिसे ऐसे कई ग्रन्थोंका सम्पादन करनेवाले स्व० धर्मरत्न पं० दीपचन्दजी वर्णीका उपकार हम कभी नहीं भूल सकते। पूज्य वर्णीजीका स्वर्गवास वीरसं० २४९२ फाल्गुन वद २ को अहमदाबादमें हो गया था। अतः अब आपकी लेखनी व उपदेशसे जैन समाज वंचित रहेगा।

हमने इसवार भी "जैनमित्र" व "दिगम्बर जैन" द्वारा सूचना की थी कि उपरोक्त व्रतकथाओंके अतिरिक्त और भी व्रतकथाएँ लिखित या मुद्रित गद्य या पद्यमें किसीके जाननेमें हों तो हमें सूचित करें व भेज दें तो भी नवीन व्रतकथा तो नहीं मिली, लेकिन पं० बारेलालजी जैन राजवैद्य, पटा द्वारा १४४ दि० जैन व्रतोंकी सूची मिली थी जो प्रकट की जाती है—

१४४ प्रकारके व्रतोंकी सूची

अष्टाह्निका	सोलहकारण	दशलक्षण
षटरसी	ज्येष्ठ जिनवर	रविव्रत
समकित चौवीसी	भावना पच्चीसी	पल्यविधान
भाद्रवनसिंहनि क्रीडित	लघुसिंहनिष्क्रिडित	त्रिगुणसार
धर्मचक्रव्रत	बृहद्धर्मचक्रव्रत	बृहद्जिनेन्द्रगुणसम्पत्ति
श्रुतकल्याणक	चतु कल्याणक	लघुकल्याणक
ज्ञानपच्चीसी	बृहद्रत्नावलि	मध्यरत्नावलि
एकावलिव्रत	द्विकावलिव्रत	लघुद्विकावलिव्रत
वज्रमध्यव्रत	मेरुपक्तिव्रत	अखैनिधिव्रत
निर्दोषसप्तमीव्रत	चन्दनषष्ठीव्रत	सुगन्धदशमीव्रत
तीनचौवीसीव्रत	जिनमुखावलोकन	मुकुटसप्तमीव्रत
कर्मचूरव्रत	कर्मक्षयव्रत	अनन्तमीव्रत
ऐसोदशव्रत	कजिकव्रत	श्रुतिपञ्चमीव्रत
गन्धअष्टमीव्रत	नदीश्वरपंक्तिव्रत	विमानपंक्तिव्रत
निर्वाणकल्याणकवेला	बृहत्पचकल्याणक	धनकलश
वीरजयन्तिव्रत	रक्षावन्धनव्रत	दीपमालिका
मनचिन्ती अष्टमीव्रत	सौभाग्यदशमी	दशमिनिमानी
फलदशमी	दीपदशमी	धूपदशमी
रत्नत्रय	पुष्पाञ्जलि	मुष्टिविधान

चन्दनषष्ठी	कोमारसप्तमी	पानदशमी
फूलदशमी	बारसुदमीव्रत	भण्डारदशमी

उपरोक्त ११४ व्रतोंमेंसे ३९ की विधि तो इस कथा ग्रंथमें हैं लेकिन शेष व्रतोंकी विधि तथा वे किन२ दिनोंमें किये जाते हैं, यह 'जैन व्रत विधान संग्रह" ग्रन्थ (मू० २) रु) प० बारेलालजी जैन राजवैद्य-पठा द्वारा प्रकट हुआ है उसमेंसे देख लें, तथा इस संग्रहमें ज्येष्ठ जिनवरको व्रत कथा हिन्दी पद्यसे गद्यमें प० स्वतन्त्रजोसे लिखाकर सम्मिलित की गई है।

विशेष—हरएक भाई व बहिन समयानुसार कोई न कोई जैन व्रत करते ही रहते हैं तथ उस व्रतकी कथाका पाठ करनेकी आवश्यकता होती है इसलिये इस ग्रथकी एक एक प्रति हरएक मंदिर व गृहमें होनेकी आवश्यकता है। आशा है यह कथाग्रंथ व्रतादि करनेवालों तथा सामान्य स्वाध्याय करनेवालोंको भी बहुत उपयोगी है। यह कथाग्रन्थ इस आठवीं वार भी पुस्तकाकार प्रकट किया गया है जिससे पाठकोंको पढनेमें सुभीता होगा। कोई भी व्रत करके उसका उद्यापन करनेवालेको मंदिरोंमें बहुतसे उपकरण आदि चढ़ानेको लिखा गया है जो ठीक है लेकिन मंदिरोंमे आवश्यकतासे अधिक उपकरण न देकर शास्त्रदान व विद्यादान ही अधिक करना चाहिये।

सूरत
श्रावण सुदी २
ता २-८-६२

जैनजातिसेवक—
मूलचन्द किसनदास कापडिया
प्रकाशक।

जयपुर वालों की मार व मक म

व्रतकथा-सूची।

नं०	नाम कथा	पृष्ठ

॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥

जैन व्रत-कथासंग्रह

पीठिका*

प्रणमि देव अर्हन्तको गुरु निर्ग्रंथ मनाय।
नमि जिनवाणी व्रत कथा कहूं स्वपर सुखदाय॥

अनन्तानन्त आकाश (अलोकाकाश) के ठीक मध्य-भागमें ३४३ घन राजू प्रमाण क्षेत्रफलवाला अनादिनिधन यह पुरुषाकार लोकाकाश है जोकि तीन प्रकारके वातवलयों अर्थात् वायु (घनोदधि घन और तनुवातवलय)से घिरा हुआ अपने ही आधार आप स्थित है।

यह लोकाकाश ऊर्ध्व मध्य और अधोलोक इस प्रकार तीन भागोंमें बंटा हुआ है। इस (लोकाकाश) के बीचोंबीच १४ राजू ऊंची और १ राजू चौड़ी लम्बी चौकोर स्तम्भवत् एक त्रस नाड़ी है। अर्थात् इसके बाहर त्रस जीव (दो इंद्रिय तीन इंद्रिय, चार इंद्रिय और पांच इंद्रिय जीव) नहीं रहते हैं। परन्तु एकेन्द्रिय जीव स्थावर निगोद तो समस्त लोकाकाशमें त्रस नाड़ी और उससे बाहर भी वातवलयों पर्यन्त रहते हैं। इस त्रस

---

* यह पीठिका आदिसे अन्ततक प्रत्येक कथाके प्रारम्भमें पढ़ना चाहिये। और इसके पढ़नेके पश्चात् ही कथाका प्रारम्भ

नाड़ीके ऊर्ध्व भागमें सबसे ऊपर तनुवातवलयके अन्तमें समस्त कार्योंसे रहित अनन्तदर्शन, ज्ञान, सुख और वीर्यादि अनन्त गुणोंके धारी अपनी अपनी अवगाहनाको लिये हुवे अनन्त सिद्ध भगवान् विराजमान हैं। उससे नीचे अहमिन्द्रोंका निवास है, और फिर सोलह स्वर्गोंके देवोंका निवास है। स्वर्गोंके नीचे मध्यलोकके ऊर्ध्व भागमें सूर्य चन्द्रमादि ज्योतिषी देवोंका निवास है (इन्हींके चलने अर्थात् नित्य सुदर्शन आदि मेरुओंकी प्रदक्षिणा देनेसे दिन रात और ऋतुओंका भेद अर्थात् कालका विभाग होता है।) फिर नीचेके भागमे पृथ्वीपर मनुष्य तिर्यञ्च पशु और व्यन्तर जातिके देवोंका निवास है। मध्यलोकसे नीचे अधोलोक (पाताल लोक) है। इस पाताल लोकके ऊपरी कुछ भागमें व्यन्तर और भवनवासी देव रहते हैं और शेष भागमें नारकी जीवोंका निवास है।

ऊर्ध्व लोकवासी देव, इन्द्रादि तथा मध्य व पातालवासी (चारों प्रकारके इन्द्रादि देव तो अपने पूर्व संचित पुण्यके उदयजनित फलको प्राप्त हुए इन्द्रिय विषयोंमें निमग्न रहते हैं। अथवा अपनेसे बड़े ऋद्धिधारी इन्द्रादि देवोंकी विभूति व ऐश्वर्यको देखकर सहन न कर सकनेके कारण आर्त्तध्यान (मानसिक दुःखोंमें) निमग्न रहते हैं, और इस प्रकार वे अपनी आयु पूर्ण कर वहांसे चयकर मनुष्य व तिर्यञ्च गतिमें स्वस्व कर्मानुसार उत्पन्न होते हैं।

इसीप्रकार पातालवासी नारकी जीव भी निरन्तर पापके उदयसे परस्पर मारण, ताड़न, छेदन, वध बन्धनादि नाना प्रकारके दुःखोंको भोगते हुए अत्यन्त आर्त्त व रौद्रध्यानसे आयु पूर्ण करके मरते हैं और स्वस्व कर्मानुसार मनुष्य व तिर्यञ्च गतिको प्राप्त करते हैं।

तात्पर्य—ये दोनों (देव तथा नरक) गतियां ऐसी हैं कि इनमेंसे विना आयु पूर्ण हुए न तो निकल सकते हैं और

वहांसे सीधे मोक्ष ही प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि इन दोनों गतिके जीवोंका शरीर वैक्रियक है, जो कि अतिशय पुण्य व पापके कारण उनको उसका फल सुख किंवा दुःख भोगनेके लिए ही प्राप्त हुआ है। इसलिये इनसे इन पर्यायोंमें चारित्र धारण नहीं हो सकता और चारित्र बिना मोक्ष नहीं होता है। इसलिये इन गतियोंसे यहांसे निकलकर मनुष्य या तिर्यंच गतियोंमें आना ही पड़ता है।

तिर्यंच गतिमें भी एकेन्द्रिय दो इन्द्रिय तीन इन्द्रिय, चौ इन्द्रिय और असैनी पंचेन्द्रिय जीवोंके तो मनके अभावसे सम्यग्दर्शन ही नहीं हो सकता है और बिना सम्यग्दर्शनके सम्यग्ज्ञान तथा सम्यक्‌चारित्र भी नहीं होता है। तथा बिना सम्यग्दर्शन ज्ञान और चारित्रके मोक्ष नहीं होता है। रहे सैनी पंचेन्द्रिय जीव सो इनको सम्यक्त्व हो जाने पर प्रत्याख्यानावरण कषायके क्षयोपशम होनेसे एकदेश व्रत हो सकता है, परन्तु पूर्ण व्रत नहीं तब मनुष्य गति ही एक ऐसी गति ठहरी कि जिसमें यह जीव सम्यक्त्व सहित पूर्ण चारित्रको धारण करके अविनाशी मोक्ष-सुखको प्राप्त कर सकता है। मनुष्योंका निवास मध्यलोकहीमें है इसलिये मनुष्य लोकका कुछ संक्षिप्त परिचय देकर कथाओंका प्रारम्भ करेंगे।

लोकाकाशके मध्यमें १ राजू चौड़ा और १ राजू लम्बा मध्यलोक है जिसमें त्रस जीवोंका निवास १ राजू लम्बे और १ राजू चौड़े क्षेत्रहीमें है (मध्यलोकका आकार▭▭▭▭▭▭) इस १ राजू मध्यलोकके क्षेत्रमें जम्बूद्वीप और लवण समुद्र आदि असंख्यात द्वीप और समुद्रके चूड़ीके आकारवत एक दूसरेको घेरे हुए द्वीपसे दूना समुद्र और समुद्रसे दूना द्वीप, इस प्रकार दूने दूने विस्तारवाले हैं।

इन असंख्यात द्वीप समुद्रोंके मध्यमें थालीके आकार गोल एक लाख महायोजन× व्यासवाला जम्बूद्वीप है। इसके आसपास लवण-समुद्र, फिर धातकी खण्डद्वीप, फिर कालोदधि समुद्र, और फिर पुष्कर द्वीपके बीचोंबीच एक गोल भीतके आकारवाले पर्वतसे (जिसे मानुषोत्तर पर्वत कहते हैं) दो भागोंमें बटा हुआ है। इस पर्वतके उस ओर मनुष्य नहीं जा सकता है। इस प्रकार जम्बू, धातकी और पुष्कर आधा (ढाईद्वीप) और लवण तथा कालोदधि ये दो समुद्र मिलकर ४५ लाख महायोजन× व्यासवाला क्षेत्र मनुष्यलोक कहलाता है और इतने क्षेत्रमें मनुष्य रत्नत्रयको धारण करके मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं।

जीव कर्मसे मुक्त होनेपर अपनी स्वाभाविक गतिके अनुसार ऊर्ध्वगमन करते हैं। इसलिये जितने क्षेत्रसे जीव मोक्ष प्राप्त करके ऊर्ध्वगमन करके लोक-शिखरके अंतमें जाकर धर्म द्रव्यका आगे अभाव होनेके कारण अधर्म द्रव्यकी सहायतासे ठहर जाते हैं उतने (लोकके अंतवाले) क्षेत्रको सिद्धक्षेत्र कहते हैं। इस प्रकार सिद्धक्षेत्र भी पैंतालीस लाख योजनका ही ठहरा।

इस ढाईद्वीपमें पांच मेरु और तिन सम्बन्धी बीस विदेह तथा पांच भरत और पांच ऐरावत क्षेत्र हैं। इन क्षेत्रोंमेंसे जीव रत्नत्रयसे कर्म नाश कर सकते हैं। इसके सिवाय और कुछ क्षेत्र ऐसे हैं, जहां भोगभूमि (युगलियों) की रीति प्रचलित है। अर्थात् वहांके जीव मनुष्यादि, अपनी सम्पूर्ण आयु विषयभोगों हीमें बिताया करते हैं। वे भोगभूमियां उत्तम मध्यम और जघन्य ३ प्रकारकी होती हैं और इनकी क्रमसे तीन, दो और एक पल्यकी बड़ी बड़ी आयु होती है। आहार बहुत कम होता है। ये सब समान (राजा प्रजाके भेद रहित) होते

× महायोजन=चार हजार मीलका होता है।

हैं। उनको सब प्रकारकी सामग्री कल्पवृक्षों द्वारा प्राप्त होती है, इसलिये वे व्यापार धन्धा आदिकी झंझटसे बचे रहते हैं। इस प्रकार वे (वहांके जीव) आयु पूर्ण कर मन्द कषायोंके कारण देवगतिको प्राप्त होते हैं।

भरत और ऐरावत क्षेत्रोंके आर्य खण्डोंमें उत्सर्पिणी व अवसर्पिणी (काल चक्र) के छः काल (सुखमा सुखमा सुखमा सुखमा दुखमा, दुखमा सुखमा दुखमा और दुखमा दुखमा) की प्रवृत्ति होती है, जो इनमें भी प्रथमके तीन कालोंमें तो भोगभूमिकी ही रीति प्रवर्तित रहती है शेष तीन काल कर्मभूमिके होते हैं, इसलिये इन शेष कालोंमें चौथा (दुखमा सुखमा) काल है, जिसमें त्रेसठ शलाका आदि महा पुरुष उत्पन्न होते हैं।

पाँचवें और छठवें कालमें क्रमसे आयु, काय बल, वीर्य घट जाता है और इन कालोंमें कोई भी जीव मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता है। विदेह क्षेत्रोंमें ऐसा कालचक्रकी फिरन नहीं होती है। वहां तो सदैव चौथा काल रहता है और कमसे कम २ तथा अधिकसे अधिक ६ श्री तीर्थंकर भगवान तथा अनेकों सामान्य केवली और मुनि श्रावक आदि विद्यमान रहते हैं और इसलिये सदैव ही मोक्षमार्गका उपदेश व साधन रहनेसे जीव मोक्ष प्राप्त करते रहते हैं। जिन क्षेत्रोंमें रहकर जीव आत्म-धर्मको प्राप्त होकर मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं अथवा जिनमें मनुष्य असि मसि कृषि, वाणिज्य शिल्प व विद्यादि द्वारा आजीविका करके जीवन निर्वाह करते हैं वे कर्मभूमिज कहलाते हैं।

इस मनुष्य क्षेत्रके मध्य जो जम्बूद्वीप है उसके बीचोंबीच सुदर्शन मेरु नामका सम्माकार एक लाख योजन ऊँचा पर्वत है। इस पर्वतपर सोलह अकृत्रिम जिन मन्दिर हैं। यह वही पर्वत है कि जिसपर भगवानका जन्माभिषेक इन्द्रादि देवों द्वारा किया जाता है। इसके सिवाय ६ पर्वत और भी एकाकार

(भीतके समान) इस द्वीपमें हैं जिनके कारण यह द्वीप सात क्षेत्रोंमें बट गया है । यह पर्वत सुदर्शन मेरुके उत्तर और दक्षिण दिशामें आड़े पूर्व पश्चिम तक समुद्रसे मिले हुए हैं । इन सात क्षेत्रोंमेंसे दक्षिणकी ओरसे सबके अन्तके क्षेत्रको भरत क्षेत्र कहते हैं ।

इस भरतक्षेत्रमें भी बीचमें विजयार्द्ध पर्वत पड़ जानेसे यह दो भागोंमें बट जाता है । और उत्तरकी ओर जो हिमवन् पर्वत पर पद्मद्रह है, उससे गंगा और सिन्धु दो महा नदियां निकलकर विजयार्द्ध पर्वतको भेदती हुई पूर्व और पश्चिमसे बहती हुई दक्षिण समुद्रमें मिलती हैं । इससे भरतक्षेत्रके छ खण्ड हो जाते हैं, इन छ खण्डोंमेंसे सबसे दक्षिणके बीचवाला खण्ड आर्य खण्ड कहाता है और शेष ५ म्लेच्छखण्ड कहाते हैं । इसी आर्य खण्डमें तीर्थंकरादि- महापुरुष उत्पन्न होते हैं । यही आर्यखण्ड कहाता है ।

इसी आर्यखण्डमें मगध नामका एक प्रदेश है, जिसे आजकल बिहारप्रांत कहते हैं ।

इस मगधदेशमें राजगृही नामकी एक बहुत मनोहर नगरी है और इस नगरीके समीप विपुलाचल, उदयाचल आदि पंच पहाड़ियां हैं तथा पहाड़ियोंके नीचे कितनेक उष्ण जलके कुण्ड बने हैं । इन पहाड़ियों व झरनोंके कारण नगरकी शोभा विशेष बढ़ गई है । यद्यपि कालदोषसे अब यह नगर उजाड़ हो रहा है परन्तु उसके आसपासके चिह्न देखनेसे प्रकट होता है कि किसी समय यह नगर अवश्य ही बहुत उन्नत होगा ।

आजसे ढाई हजार वर्ष पहिले अंतिम (चौवीसवें) तीर्थंकर श्री वर्द्धमानस्वामीके समयमें इस नगरमें महामंडलेश्वर महाराजा श्रेणिक राज्य करते थे । वह राजा बड़ा प्रतापी न्यायी और प्रजापालक था । वह अपनी कुमार अवस्थामें पूर्वोपार्जित कर्मके

बचपनसे अपने पिता द्वारा देशसे निकाला गया था और भ्रमण करते हुए एक बौद्ध साधुके उपदेशसे बौद्धमतको स्वीकार कर चुका था। वह बहुत कालतक बौद्धमतावलम्बी रहा।

जब यह श्रेणिककुमार निज बाहु तथा बुद्धिबलसे विदेशोंमें भ्रमण करके बहुत विभूति व ऐश्वर्य सहित स्वदेशको लौटा तो वहांके निवासियोंने इन्हें अपना राजा बनाना स्वीकार किया। इस समय इनके पिता उपश्रेणिक राजाका स्वर्गवास हो चुका था और इनके एक भाई चिलात नामके अपने पिता द्वारा प्रदत्त राज्य करते थे। इनके राज्य-कार्यमें अनभिज्ञ होने तथा प्रजा पर अत्याचार करनेके कारण प्रजा अप्रसन्न हो गई थी इसीसे सब प्रजाने मिलकर राज्यच्युत कर दिया था। ठीक है, राजा प्रजापर अत्याचार नहीं कर सकता। वह एक प्रकारसे प्रजाका रक्षक (नौकर) ही होता है क्योंकि प्रजाके द्वारा द्रव्य मिलता है, अर्थात् उसकी जीविका प्रजाके आश्रित है इसलिये वह प्रजा पर नीतिपूर्वक शासन कर सकता है न कि स्वेच्छाचारी होकर अन्याय कर सकता है।

उसका कर्तव्य है कि वह प्रजाकी भलाईके लिये सतत प्रयत्न करे तथा उसकी यथासाध्य रक्षा व उन्नतिका उपाय करता रहे, तभी वह राजा कहलानेके योग्य हो सकता है और प्रजा भी तभी उसकी आज्ञाकारिणी हो सकती है। राजा और प्रजाका संबंध पिता और पुत्रके समान होता है इसलिये जब जब राजाकी ओरसे अन्याय व अत्याचार बढ़ जाते हैं तब तब प्रजा अपना नया राजा चुन लिया करती है, और उस अत्याचारी अन्यायी राजाको राज्यच्युत करके निकाल देती है। इसी नियमानुसार राजगृहीकी प्रजाने अन्यायी चिलात नामक राजाको निकाल कर महाराज श्रेणिकको अपना राजा बनाया और इस प्रकार श्रेणिक महाराज नीतिपूर्वक पुत्रवत् प्रजाका पालन करने लगे।

पश्चात् इनका एक और ब्याह राजा चेटककी कन्या चेलना कुमारीसे हुआ। चेलना रानी जैनधर्मानुयायी थी और राजा श्रेणिक बौद्धमतानुयायी थे। इसप्रकार यह बेजोड़ (जैनी और बौद्धी) का साथ बन गया था, इसलिये इनमें निरन्तर धार्मिक वादविवाद हुआ करता था। दोनों पक्षवाले अपने अपने पक्षके मण्डन तथा परपक्षके खण्डनार्थ प्रबल प्रबल युक्तियां दिया करते थे। परन्तु "सत्यमेव जयते सर्वदा"की उक्तिके अनुसार अन्तमें रानी चेलना ही की विजय हुई। अर्थात् राजा श्रेणिकने हार मानकर जैनधर्म स्वीकार कर लिया और उसकी श्रद्धा जैनधर्ममें अत्यन्त दृढ़ हो गई। इतना ही नहीं किन्तु वह जैनधर्म, देव या गुरुओंका परम भक्त बन गया और निरन्तर जैन धर्मकी उन्नतिमें सतत प्रयत्न करने लगा।

एक दिन इसी राजगृही नगरके समीप उद्यान (वन) में विपुलाचल पर्वत पर श्रीमद्देवाधिदेव परम भट्टारक श्री १००८ वर्द्धमानस्वामीका समवशरण आया, जिसके अतिशयसे वहांके वन उपवनोंमें छहों ऋतुओंके फूल फल एक ही साथ फूल गये तथा नदी सरोवर आदि जलाशय जलपूर्ण हो गये। वनचर, नभचर व जलचर आदि जीव सानन्द अपने अपने स्थानोंमें स्वतंत्र निर्भय होकर विचरने और क्रीड़ा करने लगे, दूर दूर तक रोग मरी व अकाल आदिका नाम भी न रहा, इत्यादि अनेकों अतिशय होने लगे। तब वनमाली उन फूल और फलोंकी डाली लेकर यह आनन्ददायक समाचार राजाके पास सुनानेके लिये गया और विनययुक्त भेट करके सब समाचार कह सुनाये।

राजा श्रेणिक यह सुनकर बहुत ही प्रसन्न हुआ और अपने सिंहासनसे तुरंत ही उतर कर विपुलाचलकी ओर मुँह करके परोक्ष नमस्कार किया। पश्चात् वनपालको यथेष्ट पारितोषिक

दिया और यह शुभ समाचार सब नगरमें फैला दिया। अर्थात् यह घोषणा कराई कि–महावीर भगवानका समवसरण विपुलाचल पर्वतपर आया है इसलिये सब नरनारी वन्दनाके लिये चले और राजा स्वयं भी अपनी विभूति सहित हर्षित मन होकर वन्दनाके लिये गया। जाते २ मानस्तम्भ पर दृष्टि पड़ते ही राजा हाथीसे उतर कर पांव प्यादे चल समवसरणमें रानी आदि स्वजन पुरजनों सहित पहुंचा और सब ठौर यथायोग्य वन्दना स्तुति करता हुआ, गन्धकुटीके निकट उपस्थित हुआ और भक्तिसे भक्तिभूत स्तुति करके मनुष्योंकी सभामें आकर बैठ गया। और सब लोग भी यथायोग्य स्थानोंमें बैठ गये।

तब मुमुक्षु (मोक्षाभिलाषी) जीवोंके भाग्यवश श्री जिनेन्द्र देवके द्वारा मेघोंकी गर्जनाके समान ॐकाररूप अनक्षरी वाणी (दिव्यध्वनि) हुई। यद्यपि इस वाणीको सब उपस्थित समाज अपनीर भाषामें यथासम्भव निज ज्ञानावरणकर्मके क्षयोपशमके अनुसार समझ लेते हैं तथापि गणधर (गणधर जो कि मुनियोंकी सभामें श्रेष्ठ चार ज्ञानके धारी होते हैं) उक्त वाणीका द्वादशांग-रूप कथनकर भव्य जीवोंका भ्रमभाव रहित समझाते हैं सो उस समय श्री महावीरस्वामीके समवसरणमें उपस्थित गणनायक श्री गौतमस्वामीने प्रभुकी वाणीको सुनकर उपासकोंको सात तत्व नव पदार्थ पंचास्तिकाय इत्यादिका स्वरूप समझाकर रत्नत्रय (सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्र रूप मोक्षमार्ग) का कथन किया और सागार (गृहस्थ) तथा अनगार (साधु) धर्मका उपदेश दिया जिसे सुनकर निकट भव्य (जिनकी संसार-स्थिति थोड़ी रह गई है अर्थात् मोक्ष होना निकट रह गया है जीवोंने यथाशक्ति मुनि अथवा श्रावकके व्रत धारण किये। तथा जो शक्तिहीन जीव थे और जिनके दर्शनमोहका उपशम व क्षय हुआ था सो उन्होंने सम्यक्त्व ही ग्रहण किया। इस प्रकार जब

वे भगवान धर्मका स्वरूप कथन कर चुके, तब उस सभामें उपस्थित परम श्रद्धालु भक्त राजा श्रेणिकने विनययुक्त नम्रीभूत हो श्री गौतमस्वामी (गणधर) से प्रश्न किया कि "हे प्रभु* . व्रतकी विधि किस प्रकार है और इस व्रतको किसने पालन किया तथा क्या फल पाया? सो कृपाकर कहो ताकि हीन शक्तिधारी जीव भी यथाशक्ति अपना कल्याण कर सके और जिनधर्मकी प्रभावना होवे।

यह सुनकर श्री गौतमस्वामी बोले—राजा! तुम्हारा यह प्रश्न समयोचित और उत्तम है इसलिये ध्यान लगाकर सुनो। इस व्रतकी कथा व विधि इस प्रकार है— (इति पीठिका।)

* यहां शून्य स्थानोंमें जो कथा वाचना होवे उसीका नाम उच्चारण करना चाहिये।

१—श्री रत्नत्रय व्रत कथा

दाता सम्यक् रत्नत्रय शुभ शास्त्र जिनराय।
कर प्रणाम वरणूं कथा रत्नत्रय सुखदाय ॥ १ ॥
सम्यग्ज्ञान बिना व्रत तप इम बिन ध्यान न होय।
ताते प्रथम हि रत्नत्रय कथा सुनो भविलोय ॥ २ ॥

जम्बूद्वीपके विदेह क्षेत्रमें एक कच्छ नामका एक देश और वीतशोकपुर नामका एक नगर है। वहाँ एक अत्यन्त पुण्यवान वैश्रवण नामका राजा रहता था, जो कि पुत्रवत् अपनी प्रजाका पालन करता था।

एक दिन वह (वैश्रवण) राजा वसन्त ऋतुमें क्रीड़ाके निमित्त उद्यानमें यत्र तत्र सानन्द विचर रहा था कि इतने हीमें उसकी दृष्टि एक शिलापर विराजमान ध्यानस्थ श्री मुनिराजपर पड़ी। सो तुरन्त ही हर्षित होकर वह राजा श्री मुनिराजके समीप आया और विनयपूर्वक नमस्कार करके बैठ गया। श्री मुनिराज जब ध्यान कर चुके तो उन्होंने धर्मवृद्धि कहकर आशीर्वाद दिया और इसप्रकार धर्मोपदेश देने लगे—

यह जीव अनादिकालसे मोहकर्मवश मिथ्या श्रद्धान, ज्ञान और आचरण करता हुआ पुनः पुनः कर्मबन्ध करता और संसारमें जन्म मरणादि अनेक प्रकार दुःखोंको भोगता है। इसलिये जबतक इस रत्नत्रय (जो कि आत्माका निज स्वभाव है) की प्राप्ति नहीं हो जाती तबतक यह (जीव) दुःखोंसे छूटकर निराकुलता स्वरूप सच्चे सुख व शांतिको प्राप्त नहीं हो सकता जो कि वास्तवमें इस जीवका हितकारी है। इसीलिये भगवानने "सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः" अर्थात् सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्रको मोक्षमार्ग कहा है और सच्चा

सुख मोक्ष अवस्था हीमें मिलता है, इसलिये मोक्षमार्गमें प्रवृत्ति करना मुमुक्षु जीवोंका परम कर्त्तव्य है ।

(१) पुद्गलादि परद्रव्योंसे भिन्न निज स्वरूपका श्रद्धान (स्वानुभाव) तथा उसके कारणस्वरूप सप्त तत्वों और सत्यार्थ देव गुरु व शास्त्रका श्रद्धान होना सो सम्यग्दर्शन है। यह सम्यग्दर्शन अष्ट अङ्ग सहित और २५ मल दोष रहित धारण करना चाहिये अर्थात् जिन भगवानके कहे हुए वचनोंमें शङ्का नहीं करना, ससारके विषयोंकी अभिलाषा न करना, मुनि आदि साधर्मियोंके मलीन शरीरको देखकर ग्लानि न करना, धर्मगुरुकी सत्यार्थ तत्वोंकी यथार्थ पहिचान करना अर्थात् कुगुरु (रागी द्वेषी भेषी परिग्रही साधु गृहस्थ), कुदेव (रागी द्वेषी भयकर देव), कुधर्म (हिंसापोषक क्रियाओं) की प्रशंसा भी न करना, धर्मपर लगते हुए मिथ्या आक्षेपोंको दूर करना और अपनी बड़ाई व परनिन्दाका त्याग करना, सम्यक् श्रद्धान और चारित्रसे डिगते हुये प्राणियोंको धर्मोपदेश तथा द्रव्यादि देकर किसी प्रकार स्थिर करना, धर्म और धर्मात्माओंमें निष्कपट भावसे प्रेम करना और सर्वोपरि सर्व हितकारी श्री दिगम्बर जैनाचार्यों द्वारा बताये हुये श्री पवित्र जिनधर्मका यथार्थ प्रभाव सर्वोपरि प्रकट कर देना, ये ही अष्ट अग हैं।

इनसे विपरीत शङ्कादि आठ दोष, १-जाति, २-कुल, ३-बल, ४-ऐश्वर्य, ५-धन, ६-रूप, ७-विद्या, और ८-तप इन आठके आश्रित हो गर्व करना सो आठ मद, कुगुरु, कुदेव, कुधर्म और कुगुरु सेवक, कुदेव आधारक तथा कुधर्म धारक, ये छ अनायतन और १-लोकमूढ़ता (लौकिक चमत्कारोंके कारण लोभमें फँसकर रागी द्वेषी देवोंको पूजना) और ३-पाखण्डी मूढ़ता (कुलिंग ठग आडम्बरधारी गुरुओंकी सेवा करना) इस प्रकार,

ये पचीस सम्यक्त्वके दूषण हैं। इनसे सम्यक्त्वका एकदेश घात होता है इसलिये इन्हें त्याग देना चाहिये।

(२) पदार्थोंके यथार्थ स्वरूपको संशय विपर्यय व अनध्यवसाय आदि दोषोंसे रहित जानना सो सम्यग्ज्ञान है।

(३) आत्माको निज परिणति (जो वीतराग रूप है) में ही रमण करना अर्थात् रागद्वेषादि विभाव भावों क्रोधादि कषायोंसे आत्माको अलग करने व बचानेके लिये व्रत संयम, तपादिक करना सो सम्यक्चारित्र है। इस प्रकार इस रत्नत्रयस्वरूप मोक्ष मार्ग। समझकर और उस शास्त्रोक्त अनुसार धारण करके जो कोई भव्यजीव बाह्य तपाचरण धारण करता है वह सभी (मोक्ष) सुखको प्राप्त होता है।

इस प्रकार रत्नत्रयका स्वरूप कहकर अब बाह्य व्रत पालनेकी विधि कहते हैं—

भादों माघ और चैत्र मासके शुक्ल पक्षमें तेरस चौदस और पूनम इस प्रकार तीन दिन यह व्रत किया जाता है और १२ को व्रतकी धारणा तथा प्रतिपदाको पारणा किया जाता है, अर्थात् १२ को श्री जिन भगवानकी पूजनाभिषेक करके एकाशन (एकभुक्त) करे और फिर मध्याह्नकालकी सामायिक करके उसी समयसे चारों प्रकारके (खाद्य स्वाद्य लेह्य और पेय) आहार तथा विकथाओं और सब प्रकारके आरम्भोंका त्याग करे। इस प्रकार तेरस चौदस और पूनम तीन दिन प्रोषध (प्रोषध उपवास) करे और प्रतिपदा (पड़वा) को श्री जिनदेवके अभिषेक पूजनके अनन्तर सामायिक करके तथा किसी अतिथि वा दुःखित भुक्षितको भोजन कराकर भोजन करे, इस दिन भी एकभुक्त ही करना चाहिये।

इन पांचों दिनोंमें समस्त सावद्य (पाप बढ़ानेवाले)

आरम्भ और विशेष परिग्रहका त्याग करके अपना समय सामायिक, पूजा, स्वाध्यायादि धर्मध्यानमें बितावे। इस प्रकार यह व्रत १२ वर्ष तक करके पश्चात उद्यापन करे और यदि उद्यापनकी शक्ति न होवे तो दूना व्रत करे, यह उत्कृष्ट व्रतकी विधि है।

यदि इतनी भी शक्ति न होवे तो वेला करे या कांजी आहार करे तथा आठ वर्ष करके उद्यापन करे, यह मध्यम विधि है। और जो इतनी भी शक्ति न होवे तो एकासना करके करे और तीन ही वर्ष या ५ वर्ष तक करके उद्यापन करे, यह जघन्य विधि है। सो स्वशक्ति अनुसार व्रत धारण कर पालन करे। नित्य प्रतिदिनमें त्रिकाल सामायिक तथा रत्नत्रय पूजन विधान करे और तीनवार इस व्रतका जाप्य जपे अर्थात् "ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन-ज्ञानचारित्रेभ्यो नमः" इस मंत्रको १०८ वार जपे, तब एक जाप्य होती है।

इस प्रकार व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे। अर्थात् श्री जिनमंदिरमें जाकर महोत्सव करे। छत्र, चमर, झारी कलश, दर्पण, पखा, ध्वजा और ठमनी आदि मंगल द्रव्य चढावे, चन्दोवा बंधावे और कमसे कम तीन शास्त्र मंदिरमें पधरावे, प्रतिष्ठा करे, उद्यापनके रूपमें विद्यादान करे, पाठशाला, छात्रावास, अनाथालय, पुस्तकालय आदि संस्थाएं ध्रौव्यरूपसे स्थापित करे और निरन्तर रत्नत्रयकी भावना भाता रहे।

इस प्रकार श्री मुनिराजने राजा वैश्रवणको उपदेश दिया सो राजाने सुनकर श्रद्धापूर्वक इस व्रतको यथाविधि पालन किया और पूर्ण अवधि होनेपर उत्साह सहित उद्यापन किया।

पश्चात् एक दिन यह राजा एक बहुत बड़े वडके वृक्षको जड़से उखड़ा हुआ देखकर वैराग्यको प्राप्त हुआ और दीक्षा लेकर अन्त

समय समाधिमरण कर अपराजित नाम विमानमें अहमिंद्र हुआ और फिर वहांसे चयकर मिथिलापुरीमें महाराजा कुम्भराजके यहां सुप्रभावती रानीके गर्भसे मल्लिनाथ तीर्थंकर हुये सो पंच कल्याणकको प्राप्त होकर अनेक भव्य जीवोंको मोक्षमार्गमें लगाकर आप परम धाम (मोक्ष) को प्राप्त हुये।

इस प्रकार वैश्रवण राजाने व्रत पालनकर स्वर्गके व मनुष्योंके सुखको प्राप्त होकर मोक्षपद प्राप्त किया और सदाके लिये जन्म मरणादि दुःखोंसे छूटकर अविनाशी स्वाधीन सुखोंको प्राप्त हुए। इसलिये जो नर-नारी मन वचन कायसे इस व्रतकी भावना भाते हैं, अर्थात् रत्नत्रयको धारण करते हैं वे भी राजा वैश्रवणके समान स्वर्गादि मोक्षसुखको प्राप्त होते हैं।

महाराज वैश्रवणने रत्नत्रय व्रत पाला।
वही मोक्षलक्ष्मी लिनीं दीप नमैं पैकस ॥

२—श्री दशलक्षण व्रत कथा

उत्तमक्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप जान।
त्याग, आकिंचन, ब्रह्मचर्य, मिल, ये दशलक्षण धर्म बखान॥
ये स्वाभाविक आतमके गुण, जे नर धरें सुधी गुणवान।
तिन पद वन्द्य कथा दशलक्षण, व्रतकी कहूं सुनो मन आन॥१॥

धातकीखण्ड द्वीपके पूर्वविदेह क्षेत्रमें विशाल नामका एक नगर है। वहांका प्रियङ्कर नामका राजा अत्यन्त नीतिनिपुण और प्रजावत्सल था। रानीका नाम प्रियंकरा था और इसके गर्भसे उत्पन्न हुई कन्याका नाम मृगाकलेखा था।

इसी राजाके मन्त्रीका नाम मतिशेखर था। इस मन्त्रीके उसकी शशिप्रभा स्त्रीके गर्भमें कमलसेना नामकी कन्या थी।

इसी नगरके गुणशेखर नामक एक सेठके यहां उसकी शील प्रभा नामकी सेठानीसे एक कन्या मदनवेगा नामकी हुई थी और लक्षभट नामक ब्राह्मणके घर चन्द्रभागा भार्यासे रोहिणी नामकी कन्या हुई थी।

ये चारों (मृगाकलेखा, कमलसेना, मदनवेगा और रोहिणी) कन्याएँ अत्यन्त रूपवान, गुणवान तथा बुद्धिमान थीं। वे सदैव धर्माचरणमें सावधान रहती थीं। एक समय वसन्तऋतुमें ये चारों कन्याएं अपने२ माता पिताकी आज्ञा लेकर वनक्रीड़ाके लिये निकलीं, सो भ्रमण करतीं२ कुछ दूर निकल गयीं। जबकि ये वनकी स्वाभाविक शोभाको देखकर आह्लादित हो रही थीं कि उसी समय उनकी दृष्टि उस वनमें विराजमान श्री महामुनिराज पर पड़ी और वे विनयपूर्वक उनको नमस्कार करके वहां बैठ गईं, और धर्मोपदेश सुनने लगीं। पश्चात् मुनि तथा श्रावकोंका द्विविध

प्रकार उपदेश सुनकर वे चारों कन्यायें हाथ जोड़कर पूछने लगीं—हे नाथ ! यह तो हमने सुना अब दया करके हमको ऐसा मार्ग बताइये कि जिससे इस पराधीन स्त्री पर्याय तथा जन्म मरणादिके दुःखोंसे छुटकारा मिले। तब श्री गुरु बोले— बालिकाओ ! सुनो—

यह जीव अनादिकालसे मोहभावको प्राप्त हुआ विपरीत आचरण करके ज्ञानावरणादि अष्टकर्मोंको बांधता है और फिर पराधीन हुआ संसारमें नाना प्रकारके दुःख भोगता है। सुख पदार्थोंमें कहीं बाहरसे नहीं आता है न कोई भिन्न पदार्थ ही है किन्तु वह (सुख) अपने निकट ही आत्मामें अपने ही आत्माका स्वभाव है सो जब तीव्र उदय होता है तब समय यह जीव अपने उत्तमक्षमादि गुणोंको (जो यथार्थमें सुख शांति स्वरूप ही हैं) भूलकर इनसे विपरीत क्रोधादि भावोंको प्राप्त होता है और इस प्रकार स्वपरकी हिंसा करता है। सो कदाचित यह अपने स्वरूपका विचार करके अपने चित्तको उत्तमक्षमादि गुणोंसे रंजित करे, तो निःसन्देह इस भव और परभवमें सुख भोगकर परमपद (मोक्ष) को प्राप्त कर सकता है। स्त्री पर्यायसे छूटना तो कठिन ही क्या है ? इसलिये पुत्रियों ! तुम मन वचन, कायसे इस उत्तम दशलक्षण रूप धर्मको धारण करके यथाशक्ति व्रत पालो तो निःसन्देह मनवांछित (उत्तम) फल पाओगी।

भगवानने उत्तमक्षमामार्दवार्जवसत्यशौचसंयमतपस्त्यागाकिंचन्य-ब्रह्मचर्याणि धर्मः अर्थात् उत्तम क्षमा उत्तम मार्दव उत्तम आर्जव उत्तम सत्य उत्तम शौच उत्तम संयम, उत्तम तप उत्तम त्याग उत्तम आकिंचन्य और उत्तम ब्रह्मचर्य, इस प्रकार ये धर्मके दश लक्षण बताये हैं। ये वास्तवमें आत्माके ही निजभाव हैं जो क्रोधादि कषायोंसे ढक रहे हैं।

उत्तम क्षमा क्रोधके उपशम क्षयोपशम या क्षय होनेसे प्रगट

होती है। इसी प्रकार उत्तम मार्दव मानके उपशम, क्षयोपशम व क्षयसे होता है। उत्तम आर्जव, मायाके नाश होनेसे होता है। सत्य, मिथ्यात्व (मोह) के नाशसे होता है। शौच, लोभके नाशसे होता है। संयम, विषयानुराग कम वा नाश होनेसे होता है। तप, इच्छाओंको रोकने (मन वश करने) से होता है। त्याग ममत्व (राग) भाव कम वा नाश करनेसे होता है। आकिंचन्य, निस्पृहतासे उत्पन्न होता है और ब्रह्मचर्य काम विकार तथा उनके कारणोंको छोड़नेसे उत्पन्न होता है। इस प्रकार ये दशों धर्म अपने प्रतिघातक दोषोंके क्षय होनेसे प्रगट हो जाते हैं।

(१) क्षमावान् प्राणी कदापि किसी जीवसे वैर विरोध नहीं करता है और न किसीको बुरा भला कहता है। किन्तु दूसरोंके द्वारा अपने ऊपर लगाये हुये दोषोंको सुनकर अथवा आये हुवे उपद्रवोंपर भी विचलित चित्त नहीं होता है, और उन दुःख देनेवाले जीवों पर उल्टा करुणाभाव करके क्षमा देता है, तथा अपने द्वारा किये हुये अपराधोंकी क्षमा मांग लेता है। इस प्रकार यह क्षमावान पुरुष सदा निर्वैर हुआ, अपना जीवन सुख शांतिमय बनाता है।

(२) इसी प्रकार मार्दव धर्मधारी नरके क्षमा तो होती है किन्तु जाति, कुल, ऐश्वर्य, विद्या, तप और रूपादि समस्त प्रकारके मदोंके नाश होनेसे विनयभाव प्रकट होता है, अर्थात् वह प्राणी अपनेसे बड़ोंमें भक्ति व विनयभाव रखता है और छोटेमें करुणा व नम्रता रखता है, सबसे यथायोग्य मिष्टवचन बोलता है और कभी भी किसीसे कठिन शब्दोंका प्रयोग नहीं करता है। इसीसे यह मिष्ट भाषी विनयी पुरुष सर्वप्रिय होता है। और किसीसे द्वेष न होनेसे सानन्द जीवनयात्रा करता है।

(३) आर्जव धर्मधारी पुरुष, क्षमा और मार्दव धर्मपूर्वक ही आर्जवधर्म (सरलता) को धारण करता है। इसके जो कुछ

बात मनमें होती है, सो ही वचनसे कहता और वही बातको पूरी करता है। इस प्रकार यह सरल परिणामी पुरुष निष्कपट होनेके कारण निश्चिंत तथा सुखी होता है।

(४) सत्यवान पुरुष सदैव जो बात जैसी है अथवा वह जैसी उसे जानता समझता है, वैसी ही कहता है अन्यथा नहीं कहता। कहे हुये वचनोंको नहीं बदलता और न कभी किसीको हानि व दुःख पहुंचानेवाले वचन बोलता है वह तो सदैव अपने वचनोंपर दृढ़ रहता है। इसके उत्तम क्षमा मार्दव आर्जव ये तीनों धर्म अवश्य ही होते हैं। यह पुरुष अन्यथा प्रलापी न होनसे विश्वासपात्र होता है और संसारमें सन्मान व सुखको प्राप्त होता है।

(५) शौचवान नर उपर्युक्त चारों धर्मोंको पालता हुआ अपने आत्माको लोभसे बचाता है और जो पदार्थ न्यायपूर्वक उद्योग करनेसे उसके क्षयोपशमके अनुसार उसे प्राप्त होते हैं वह उनमें सन्तोष करता है और कभी स्वप्न में भी परधन हरण करनेके भाव इसके नहीं होते हैं। यदि अशुभकर्मके उदयसे इसे किसी प्रकारकी कमी घाटा होजाय अथवा और किसी प्रकारका द्रव्य चला जाय, तौभी यह दुःखी नहीं होता और अपने कर्मोंका विपाक समझकर धैर्य धारण करता है परन्तु अपने चाहेकी पूर्तिके लिये कभी किसी दूसरेको हानि पहुंचानेकी चेष्टा नहीं करता है। इसको तृष्णा न होनेके कारण सदा आनंदमें रहता है और इसीलिये कभी किसीसे ठगाया भी नहीं जाता है।

(६) संयमी पुरुष भी उक्त पांचों धर्मोंको पालता हुआ अपनी इंद्रियोंको उनके विषयोंसे रोकता है। ऐसी अवस्थामें इसे कोई पदार्थ इष्ट व अनिष्ट प्रतीत नहीं होते हैं क्योंकि विषयानु-रागताके ही कारण अपने मनको योग्य पदार्थ इष्ट और अयोग्य व मनके न [illegible]

कल्पना न रहनेके कारण इनमें हेयोपादेय कल्पना भी नहीं रहती है तब समभाव होता है। इसीसे यह समरसी आनन्दको प्राप्त करता है।

(७) तपस्वी पुरुष इन्द्रियोंको वश करता हुआ भी मनको पूर्ण रीतिसे वश करता है, और उसे यत्र तत्र दौड़नेसे रोकता है। किसी प्रकारकी इच्छा उत्पन्न नहीं होने देता है। जब इच्छा ही नहीं रहती तो आकुलता किस बातकी? यह अपने ऊपर आनेवाले सब प्रकारके उपसर्गोंको धीरतापूर्वक सहन करनेमें उद्यमी व समर्थ होता है। वास्तवमें ऐसा कोई भी सुर नर वा पशु संसारमें नहीं जन्मा है, जो इस परम तपस्वीको उसके ध्यानसे किंचित्मात्र भी डिगा सके। इसलिये ही इस महापुरुषके एकाग्रचिंतानिरोध रूप धर्म व शुक्लध्यान होता है जिससे यह अनादिसे लगे हुये कठिन कर्मोंका अल्प समयमें नाश करके सच्चे सुखोंका अनुभव करता है।

(८) त्यागी पुरुषके उक्त सातों व्रत तो होते ही हैं किंतु उस पुरुषका आत्मा बहुत उदार हो जाता है। यह अपने आत्मासे रागद्वेषादि भावोंको दूर करने तथा स्वपर उपकारके निमित्त आहारादि चारों दान देता है, और दान देकर अपने आपको धन्य व स्वसम्पत्तिको सफल हुई समझता है। यह कदापि स्वप्नमें भी अपनी ख्याति व यश नहीं चाहता और न दान देकर उसे स्मरण रखता अथवा न कभी किसी पर प्रगट ही करता है। वास्तवमें दान देकर भूल जाना ही दानीका स्वभाव होता है। इससे यह पुरुष सदा प्रसन्नचित्त रहता है और मृत्युका समय उपस्थित होनेपर भी निराकुल रहता है। इसका चित्त धनादिमें फसकर आर्त रौद्ररूप कभी नहीं होता और उसका आत्मा सद्गतिको प्राप्त होता है।

(९) आकिंचन्य–बाह्य आभ्यन्तर समस्त प्रकारके परिग्रहोंसे

ममत्व भावोंको छोड़ देनेवाला पुरुष सदैव निर्भय रहता है उसे न कुछ सम्हालना और न रक्षा करना पड़ती है। यहांतक कि वह अपने शरीर तकसे निस्पृह रहता है तब ऐसे महापुरुषको कौन पदार्थ आकुलित कर सकता है क्योंकि वह अपने आत्माके सिवाय समस्त परभावों वा विभावोंको हेय अर्थात् त्याज्य समझता है। इसीसे कुछ भी ममत्व शेष नहीं रह जाता और समय समय असंख्यात व अनन्तगुणी कर्मोंकी निर्जरा होती रहती है, इसीसे यह सुखी रहता है।

(१०) ब्रह्मचर्यधारी महाबलवान योद्धा सदैव उक्त नव अंगोंको धारण करता हुआ निरन्तर अपने आत्मामें ही रमण करता है। वह बाह्य सी आदिसे विरक्त रहता है, उसकी दृष्टिमें सब जीव संसारके समान प्रतीत होते हैं और वो पुरुष व नपुंसकादिका भेद कर्मकी उपाधि मानता है। वह सोचता है कि यह हड़ हाड़ मांस मज्ज, मूत्र रुधिर, पीव आदि राशि जीवोंको सुहावनासा लगता है। यदि यह चामड़ी बाहर हटा दी जाय अथवा वृद्धावस्था आ जाय तो फिर इसकी ओर देखनेको भी जी न चाहे इत्यादि ऐसे घृणित शरीरमें क्रीड़ा करना क्या है? मानों विष्ठा (मल) के कीड़ावत् उसमें अपने आपको फंसाकर चतुर्गतिके दुःखोंमें डालना है। इस प्रकार वह सुभट कामके दुर्जय किलेको तोड़कर अपने अनन्त सुखमई आत्मामें ही विहार करता है। ऐसे महापुरुषका आदर सब जगह होता है और सब कोई भी कार्य संसारमें ऐसा नहीं रह जाता है कि जिसे वह अखंड ब्रह्मचारी न कर सके। तात्पर्य यह सब कुछ करनेको समर्थ होता है।

इस प्रकार इन दश धर्मोंका संक्षिप्त स्वरूप कहा सो तुमको निरन्तर इन धर्मोंको अपनी शक्ति अनुसार धारण करना चाहिये। अब इस दशलक्षण व्रतकी विधि कहते हैं—

भादों, माघ और चैत्र मासके शुक्ल पक्षमें पंचमीसे चतुर्दशी तक १० दिन पर्यन्त यह व्रत किया जाता है। दशों दिन त्रिकाल सामायिक, प्रतिक्रमण, वन्दना, पूजन अभिषेक, स्तवन, स्वाध्याय तथा धर्मचर्चा आदि कर और क्रमसे पंचमीको "ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमक्षमाधर्मांगाय नमः" इस मन्त्रका १०८ वार, एक एक समय, इस प्रकार दिनमें ३२४ वार तीन काल सामायिकके समय जाप्य करे और इस उत्तम क्षमा गुणकी प्राप्तिके लिये भावना भावे तथा उसके स्वरूपका वारवार चिन्तवन करे। इसी प्रकार छठमीको "ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमल समुद्गताय उत्तममार्दवधर्मांगाय नमः" का जाप कर भावना भावे। फिर सप्तमीको "ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तम आर्जवधर्मांगाय नमः", अष्टमीको ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तम सत्यधर्मांगाय नमः, नवमीको ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमल समुद्गताय उत्तम शौचधर्मांगाय नमः दशमीको ॐ ह्रीं अर्हन्मुख कमलसमुद्गताय उत्तम संयमधर्मांगाय नमः, एकादशीको ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तम तपधर्मांगाय नमः, द्वादशीको ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमत्यागधर्मांगाय नमः, त्रयोदशीको ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमआकिंचन्यधर्मांगाय नमः, चतुर्दशीको ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमब्रह्मचर्य धर्मांगाय नमः, इत्यादि मन्त्रोंका जाप करके भावना भावे।

समस्त दिन स्वाध्याय पूजादि धर्मकार्योंमें वितावे, रात्रिको जागरण भजन करे, सब प्रकारके राग द्वेष व क्रोधादि कषाय तथा इन्द्रिय विषयोंको बढ़ानेवाली विकथाओंका तथा व्यापारादि समस्त प्रकारके आरंभोंका सर्वथा त्याग करे।

दशों दिन यथाशक्ति प्रोषध (उपवास), वेला, तेला आदि करे अथवा ऐसी शक्ति न हो तो एकाशना, ऊनोदर तथा रस त्याग करके करे परन्तु कामोत्तेजक, सचिक्कण, मिष्ट, गरिष्ट (भारी)

और स्वादिष्ट भोजनोंका त्याग करे, तथा अपना शरीर स्वच्छ खादीके कपड़ोंसे ही ढके। बढ़िया वस्त्रालंकार न धारण करे और रेशम, ऊन तथा फेन्सी परदेशी व मिलोंके बने वस्त्र तो छूवे भी नहीं, क्योंकि ये अनन्त जीवोंके घातसे बनते हैं और कामादिक विकारोंको बढ़ानेवाले होते हैं।

इस कारण यह व्रत दश वर्ष तक पालन करके पश्चात् उत्साह सहित उद्यापन करे। अर्थात् छत्र चमर आदि मंगल द्रव्य, जपमाला कलश झारी आदि धर्मोपकरण प्रत्येक दश दश भी मन्दिरजीमें पधराना चाहिये तथा पूजा, विधानादि महोत्सव करना चाहिये। दुःखित भुखितोंको भोजनादि दान देना चाहिये।

औषधालय विद्यालय छात्रालय भोजनालय अनाथालय, पुस्तकालय तथा दीन आश्रितरक्षक संस्थायें आदि स्थापित करना चाहिये। इस प्रकार द्रव्य खर्च करनेमें असमर्थ हो तो शक्ति प्रमाण प्रभावनांगको बढ़ानेवाला उत्सव करे अथवा सर्वथा असमर्थ हो तो द्विगुणित वर्ष प्रमाण (२० वर्ष) व्रत करे। इस व्रतका फल स्वर्ग तथा मोक्षकी प्राप्ति होना है।

यह उपदेश व व्रतकी विधि सुन उन चारों कन्याओंने मुनि-राजकी साक्षीपूर्वक इस व्रतको स्वीकार किया और निज घरोंको गईं। पश्चात् दश वर्षतक उन्होंने यथाशक्ति व्रत पालकर उद्यापन किया सो उपशमभावादि धर्मोंका अभ्यास हो जानेसे उन चारों कन्याओंका जीवन सुख और शांतिमय हो गया। वे चारों कन्यायें इस प्रकार सबकी समाजमें मान्य हो गयीं। पश्चात् वे अपनी आयु पूर्ण कर अन्त समय समाधिमरण करके महाशुक्र नामक दशवें स्वर्गमें अमरगिरि अमरचूल देवप्रभु और पद्म-सारथी नामक महर्द्धिक देव हुए।

वहांपर अनेक प्रकारके सुख भोगसे और अकृत्रिम जिन चैत्यालयोंकी भक्ति वन्दना करते हुए अपनी आयु पूर्ण कर वहांसे

चले सो जम्बुद्वीपके भरतक्षेत्रमें मालवा प्रांतके उज्जैन नगरमें मूलभद्र राजाके घर लक्ष्मीमती नामकी रानीके गर्भसे पूर्णकुमार, देवकुमार गुणचन्द्र और पद्मकुमार नामके रूपवान व गुणवान पुत्र हुए और भलेप्रकार बाल्यकाल व्यतीत करके कुमारकालमें सब प्रकारकी विद्याओंमें निपुण हुए । पश्चात् इन चारोंका व्याह नन्दनगरके राजा इण तथा उनकी पत्नी तिलकसुन्दरीके गर्भसे उत्पन्न कलावती, भाग्नी, इन्दुगात्री और पंकू नामकी चार अत्यन्त रूपवान तथा गुणवान कन्याओंके साथ हुआ, और ये दम्पति प्रेमपूर्वक कालक्षेप करने लगे ।

एक दिन राजा मूलभद्रने आकाशमें बादलोंको बिखरे हुए देखकर संसारके विनाशीक स्वरूपका चिंतवन किया और द्वादशानुप्रेक्षा भायीं । पश्चात् ज्येष्ठ पुत्रको राज्यभार सौंपकर आप परम दिगम्बर मुनि हो गये । इन चारों पुत्रोंने यथायोग्य प्रजाका पालन व मनुष्योचित्त भोग भोगकर कोईएक कारण पाकर जिनेश्वरी दीक्षा ली, और महान् तपश्चरण करके केवलज्ञानको प्राप्त हो, अनेक देशोंमें विहार करके धर्मोपदेश दिया । फिर शेष अघातिया कर्मोंको भी नाश कर आयुके अंतमें योग निरोध करके परमपद (मोक्ष) को प्राप्त हो गये ।

इस प्रकार उक्त चारों कन्याओंने विधिपूर्वक इस व्रतको धारण करके स्त्रीलिंग छेदकर स्वर्ग तथा मनुष्य गतिके सुख भोगकर मोक्षपद प्राप्त किया । इसी प्रकार जो और भव्य जीव मन, वचन, कायसे इस व्रतको पालन करेंगे वे भी उत्तमोत्तम सुखोंको प्राप्त होंगे ।

मृगांकलेखादि कन्यायें, दशलक्षण व्रत धार ।
'दीप' लहो निर्वाण पद, वन्दूं बारम्बार ॥ १ ॥

३—श्री षोडशकारण व्रत कथा

षोडशकारण भावना जो भावैं चित धार।
कर तिन पदकी वन्दना कहूं कथा सुखकार॥

जम्बूद्वीप सम्बन्धी भरतक्षेत्रके मगध (बिहार) प्रांतमें राजगृही नगर है। वहांके राजा हेमप्रभु और रानी विजयावती थी। इस राजाके यहां महाशर्मा नामक नौकर था और उसकी स्त्रीका नाम प्रियंवदा था। इस प्रियंवदाके गर्भसे कालभैरवी नामकी एक अत्यन्त कुरूपी कन्या उत्पन्न हुई कि जिसे देखकर मातापितादि सभी स्वजनों तकको घृणा होती थी।

एक दिन मतिसागर नामक चारणमुनि आकाशमार्गसे गमन करते हुए उसी नगरमें आये तो उस महाशर्माने अत्यन्त भक्ति सहित श्री मुनिको पड़गाहकर विधिपूर्वक आहार दिया और उनसे धर्मोपदेश सुना। पश्चात् युगल कर जोड़कर विनययुक्त हो पूछा—हे नाथ! यह मेरी कालभैरवी नामकी कन्या किस पापकर्मके उदयसे ऐसी कुरूपी और कुलक्षणी उत्पन्न हुई है सो कृपाकर कहिये? तब अवधिज्ञानके धारी श्री मुनिराज कहने लगे वत्स! सुनो—

उज्जैन नगरीमें एक महीपाल नामका राजा और उसकी वेगावती नामकी रानी थी। इस रानीसे विशालाक्षी नामकी एक अत्यन्त सुन्दर रूपवान कन्या थी जो कि बहुत रूपवान होनेके कारण बहुत अभिमानिनी थी और इसी रूपके मदमें उसने एक भी सद्गुण न सीखा। सत्य है—अहंकारी (मानी) नरोंको विद्या नहीं आती है।

एक दिन वह कन्या अपनी चित्रसारीमें बैठी हुई दर्पणमें अपना मुख देख रही थी कि, इतनेमें ज्ञानसूर्य नामके महातपस्वी श्री

मुनिराज उसके घरसे आहार लेकर बाहर निकले, सो इस अज्ञान कन्याने रूपके मदसे मुनिको देखकर खिड़कीसे मुनिके ऊपर थूँक दिया और बहुत हर्षित हुई।

परन्तु पृथ्वीके समान क्षमावान श्री मुनिराज तो अपनी नीची दृष्टि किये हुये ही चले गये। यह देखकर राजपुरोहित इस कन्याका उन्मत्तपना देख उस पर बहुत क्रोधित हुआ, और तुरन्त ही प्रासुक जलसे श्री मुनिराजका शरीर प्रक्षालन करके बहुत भक्तिसे वैय्यावृत्य कर स्तुति की। यह देखकर वह कन्या बहुत लज्जित हुई, और अपने किये हुए नीच कृत्य पर पश्चात्ताप करके श्री मुनिके पास गई और नमस्कार करके अपने अपराधकी क्षमा मागी। श्री मुनिराजने उसको धर्मलाभ कहकर उपदेश दिया। पश्चात् वह कन्या वहांसे मरकर तेरे घर यह कालभैरवी नामकी कन्या हुई है। इसने जो पूर्वजन्ममें मुनिकी निन्दा व उपसर्ग करके जो घोर पाप किया है उसीके फलसे यह ऐसी कुरूपा हुई है, क्योंकि पूर्व संचित कर्मोंका फल भोगे विना छुटकारा नहीं होता है। इसलिये अब इसे समभावोंसे भोगना ही कर्तव्य है और आगेको ऐसे कर्म न बन्धे ऐसा समीचीन उपाय करना योग्य है। अब पुन यह महाशर्मा बोला—हे प्रभो ! आप ही कृपाकर कोई ऐसा उपाय बताइये कि जिससे यह कन्या अब इस दुःखसे छूटकर सम्यक् सुखोंको प्राप्त होवे तब श्री मुनिराज बोले—वत्स ! सुनो —

संसारमें मनुष्योंके लिये कोई भी कार्य असाध्य नहीं है सो भला यह कितनासा दुःख है ? जिनधर्मके सेवनसे तो अनादिकालसे लगे हुए जन्म मरणादि दुःख भी छूटकर सच्चे मोक्षसुखकी प्राप्ति होती है, और दुःखोंसे छूटनेकी तो बात ही क्या है ? वे तो सहजहीमें छूट जाते हैं। इसलिये यदि यह कन्या षोडशकारण भावना भावे, और व्रत पाले, तो अल्पकालमें ही स्त्रीलिंग छेदकर

मोक्ष-सुखको पावेगी। तब वह महासती बोली—हे स्वामी! इस व्रतकी कौन कौन भावनायें हैं और विधि क्या है? सो कृपाकर कहिये। तब मुनिराजने इन जिज्ञासुओंको निम्नप्रकार षोडशकारण व्रतका स्वरूप और विधि बताई। वे कहने लगे—

(१) संसारमें जीवका शत्रु मिथ्यात्व और मित्र सम्यक्त्व है। इसलिये मनुष्यका कर्तव्य है कि सबसे प्रथम मिथ्यात्व (अतत्त्व श्रद्धान या विपरीत श्रद्धान) को वमन (त्याग) करके सम्यक्त्वरूपी अमृतका पान करें। सत्यार्थ (जिन) देव सच्चे (निर्ग्रंथ) गुरु और सत्य (जिन भाषित) धर्म पर श्रद्धा (विश्वास) लावें। पश्चात् सप्त तत्वों तथा पुण्य पापका स्वरूप जानकर इनकी श्रद्धा करके अपने आत्माको परपदार्थोंसे भिन्न अनुभव करें और इसके सिवाय अन्य मिथ्या देव गुरु व धर्मको दूर ही से इस प्रकार छोड़ दें जैसे तोता अवसर पाकर पिंजरेसे निकल भागता है। ऐसे सम्यक्त्वी पुरुषोंके प्रशम (मंद कषाय स्वरूप समभाव अर्थात् सुख व दुःखमें समुद्र सरीखा गम्भीर रहना घबराना नहीं), संवेग (धर्मानुराग सांसारिक विषयोंसे विरक्त हो धर्म और धर्मात्माओंमें प्रेम बढ़ाना) अनुकम्पा (करुणा दुःखी जीवोंपर दयाभाव करके उनकी यथाशक्ति सहायता करना) और आस्तिक्य (चाहे–जैसा भी अवसर क्यों न आवे तो भी अपने निर्णय किये हुए सन्मार्गमें दृढ़ रहना) ये चार गुण प्रगट हो जाते हैं। उन्हें किसी प्रकारका भय व चिन्ता व्याकुल नहीं कर सकती है। वे धीरवीर सदा प्रसन्नचित्त ही रहते हैं कभी किसी चीजकी उन्हें चाह इच्छा नहीं होती चाहे वे चारित्रमोह कर्मके उदयसे व्रत न भी ग्रहण कर सकें तो भी व्रत और व्रती संयमी जनोंमें उनकी श्रद्धा भक्ति व सहानुभूति अवश्य रहती है क्योंकि मोक्षमार्गकी प्रथम सोपान (सीढ़ी) है इसलिये इसे ही २५ मल दोषोंसे रहित और अष्ट अंग सहित धारण करो। इसके सिवा

ज्ञान और चारित्र सब निष्फल (मिथ्या) हैं, यही दर्शनविशुद्धि नामकी प्रथम भावना है ।

(२) जीव (मनुष्य) जो ससारमें सबकी दृष्टिसे उतर जाता है, उसका प्रधान कारण केवल अहकार (मान) है । सो कदाचित् वह मानी अपनी समझमें भले ही अपने आपको बड़ा माने परन्तु क्या कौआ मन्दिरके शिखर पर बैठ जानेसे गरुड़ पक्षी हो सकता है ? कभी नहीं । किन्तु सर्व ही प्राणी उनसे घृणा ही करते हैं और कदाचित् उनके पूर्व पुण्योदयसे उसे कोई कुछ न भी कह सके, तौ भी वह किसीके मनको बदल नहीं सकता है ।

सत्य है-जो ऊपरको देखकर चलता है, वह अवश्य ही नीचे गिरता है । ऐसे मानी पुरुषको कभी कोई विद्या सिद्ध नहीं होती है, क्योंकि विद्या विनयसे आती है । मानी पुरुष चित्तमें सदा खेदित रहता है, क्योंकि वह सदा सबसे सम्मान चाहता है, और ऐसा होना असम्भव है, इसलिये निरन्तर सबको अपनेसे बड़ोंमें सदा विनय, समान (बराबरीवाले) पुरुषोंमें प्रेम और छोटोंमें करुणाभावसे प्रवर्तना चाहिये । सदैव अपने दोषोंको स्वीकार करनेके लिये सावधानता पूर्वक तत्पर रहना चाहिये, और दोष बतानेवाले सज्जनका उपकार मानना चाहिये, क्योंकि जो मानी पुरुष अपने दोषोंको स्वीकार नहीं करता, उनके दोष निरन्तर बढ़ते ही जाते हैं और इसीलिये वह कभी उनसे मुक्त नहीं हो सकता ।

इसलिये दर्शन, ज्ञान, चारित्र, तप और उपचार इन पाच प्रकारकी विनयोंका वास्तविक स्वरूप विचार कर विनयपूर्वक प्रवर्तन करना, सो विनय-सम्पन्नता नामकी दूसरी भावना है ।

(३) विना मर्यादा अर्थात् प्रतिज्ञाके मन वश नहीं होता, जैसा कि विना लगाम (बाग रास) के घोड़ा या विना अकुशके हाथी, इसलिये आवश्यक है कि मन व इन्द्रियोंको वश करनेके

लिये कुछ प्रतिज्ञारूपी अंकुश पासमें रखना चाहिये। तथा अहिंसा (किसी भी जीवका अथवा अपने भी द्रव्य तथा भाव प्राणोंका घात न करना अर्थात् उन्हें न सताना) सत्य (यथार्थ वचन बोलना जो किसीको भी पीड़ाजनक न हों) अचौर्य (बिना दिये हुए पर-वस्तुका ग्रहण न करना), ब्रह्मचर्य (स्त्रीमात्रका अथवा स्वदार बिना अन्य स्त्रियोंके साथ विषय-मैथुन सेवनका (त्याग) और स्वपर आत्माओंके विषय कषाय उत्पन्न करनेवाले बाह्य अभ्यन्तर परिग्रहोंका त्याग या प्रमाण (सम्पूर्ण परिग्रहोंका त्याग या अपनी योग्यता या शक्ति अनुसार आवश्यक वस्तुओंका प्रमाण करके अन्य समस्त पदार्थोंसे ममत्वभाव त्याग करना। इसे लोभका रोकना भी कहते हैं) इस प्रकार ये पांच व्रत और इनकी रक्षाके भावनाओं (३ गुप्तियों और समितियों)का पालन करे तथा उक्त शील और व्रतोंके अतीचारों (दोषों)को भी बचावे। इन व्रतोंके निर्दोष पालन करनेसे न तो राजदण्ड कभी होता है और न पंचदण्ड ही होता है और ऐसा व्रती पुरुष अपने सदाचारसे सबका आदर्श बन जाता है। इसके विरुद्ध दुराचारी जनोंको इस भवमें और परभवमें अनेक प्रकार दण्ड व दुःख सहन पड़ते हैं ऐसा विचार करके इन व्रतोंमें निरन्तर दृढ़ होना चाहिये यह शीलव्रतेष्वनतिचार भावना है।

४) मिथ्यात्वके वशसे हिताहितका स्वरूप बिना जाने यह संसारी जीव सदैव अपने लिये सुख प्राप्तिकी इच्छासे विपरीत ही मार्ग ग्रहण कर लेता है जिससे सुख मिलना तो दूर रहा किन्तु उल्टा दुःखका सामना करना पड़ता है। इसलिये निरन्तर ज्ञान सम्पादन करना परमावश्यक है क्योंकि जहां चर्मचक्षु काम नहीं दे सकते हैं वहां ज्ञानचक्षु ही काम देते हैं। ज्ञानी पुरुष नेत्रहीन होनेपर भी अज्ञानी आंखवालेसे अच्छा है। अज्ञानी न तो लौकिक कार्योंहीमें सफल-मनोरथ होते हैं,

और न पारलौकिक ही कुछ साधन कर सकते हैं। वे ठौर ठौर ठगाये जाते हैं, और अपमानित होते हैं, इसलिये ज्ञान उपार्जन करना आवश्यक है, ऐसा विचार करके निरन्तर विद्याभ्यास करना व कराना, सो अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग नामकी भावना है।

(५) इन संसारी जीवोंमेंसे प्रत्येक जीवके विषयानुरागता इतनी बढ़ी हुई है कि कदाचित् इसको तीन लोककी समस्त सम्पत्ति भोगनेको मिल जाये तो भी उसकी इच्छाके असंख्यातवें भागकी पूर्ति न हो, सो जीव संसारमें अनन्तानन्त हैं, और लोकके पदार्थ जितने हैं उतने ही हैं, सो जब सभी जीवोंकी अभिलाषा ऐसी ही बढ़ी हुई है तब यह लोककी सामग्री किस किसको कितने कितने अंशोंमें पूर्ति कर सकती है ? अर्थात् किसीको नहीं। ऐसा विचार कर उत्तम पुरुष अपनी इन्द्रियोंको विषयोंसे रोककर मनको धर्मध्यानमें लगा देते हैं। इसीको संवेग भावना कहते हैं।

(६) जबतक मनुष्य किसी भी पदार्थमें ममत्व, अर्थात् यह वस्तु मेरी है ऐसा भाव रखता है तबतक वह कभी सुखी नहीं हो सकता है क्योंकि पदार्थोंका स्वभाव नाशवान है, जो उत्पन्न हुए सो नियमसे नाश होंगे, और जो मिले हैं सो बिछुड़ेंगे इसलिये जो कोई इन पदार्थोंका (जो इसके पूर्व पुण्योदयसे प्राप्त हुए हैं) अपने आप ही इनको छोड़ जानेसे पहिले ही छोड़ देवे, ताकि वे (पदार्थ) उसे न छोड़ने पावें, तो निस्सन्देह दुःख आनेका अवसर ही न आवेगा ऐसा विचार करके जो आहार, औषध, शास्त्र (विद्या) और अभय इन चार प्रकारके दानोंको मुनि, आर्जिका, श्रावक, श्राविकाओं (चार संघों) में भक्तिसे तथा दीन दुःखी नर, पशुओंको करुणा भावोंसे देता है तथा अन्य यथावश्यक कार्यों (धर्मप्रभावना व परोपकार) में

त्म धर्म करता है उसे ही दान या शक्तितस्त्याग नामकी
भावना कहते हैं।

(७) यह जीव स्वस्वरूप भूला हुआ इस घृणित देहमें ममत्व
करके इसके पोषणार्थ नानाप्रकारके पाप करता है तो भी यह
शरीर स्थिर नहीं रहता दिनोंदिन सेवा और सम्हाल करते
करते क्षीण होता जाता है और एक दिन आयुकी स्थिति पूर्ण
होते ही छोड़ देता है सो ऐसे नाशवन्त और घृणित शरीरमें
ममत्व (राग) न करके वास्तविक सच्चे सुखकी प्राप्तिके अर्थ
इसको लगाना (उत्सर्ग करना) चाहिए ताकि इसका जो जीवके
साथ अनंतानंत बार संयोग तथा वियोग हुआ करता है सो
फिर ऐसा वियोग हो कि फिर कभी भी संयोग न हो सके
अर्थात् मोक्षपदकी प्राप्ति हो जावे। इसमें यही सार है क्योंकि
स्वर्ग नर्क वा पशु पर्यायमें तो सम्यक् और उत्तम तपश्चरण
पूर्ण हो ही नहीं सकता है इसलिये यही मनुष्य जन्ममें श्रेष्ठ
अवसर प्राप्त हुआ है ऐसा समझकर अपनी शक्ति व द्रव्य क्षेत्र
काल भावोंका विचार करके अनशन ऊनोदर व्रतपरिसंख्यान
रसपरित्याग विविक्त शय्यासन और कायक्लेश ये छः बाह्य और
प्रायश्चित विनय वैयावृत्य स्वाध्याय, व्युत्सर्ग और ध्यान ये
छः अभ्यन्तर इस प्रकार बारह तपोंमें प्रवृत्ति करना सो सातवीं
शक्तितस्तप नामकी भावना कहलाती है।

(८) जीव मात्रके कल्याण करनेवाले सम्यक् धर्मकी प्रवृत्ति
धर्मात्माओंसे होती है और धर्मात्माओंसे सर्वोत्तम सम्यक् रत्न-
त्रय धारी परम दिगम्बर साधु हैं इसलिये साधु वर्गोंपर आये
हुए उपसर्गोंको यथासम्भव दूर करना सो साधुसमाधि
नामकी भावना है।

(९) साधुसमूह तथा अन्य साधर्मीजनोंके शरीरमें किसी
प्रकारकी रोगादिक व्याधि आ जानेसे-उससे परिणामोंमें शिथिलता

व प्रमाद आ जाना सम्भव है इसलिये साधर्मी (साधु व गृहस्थ) जनोंकी भक्तिभावसे उनको दर्शन तथा चारित्रमें स्थिर रखते तथा दीन दुखी जीवोंको धर्म-मार्गमें लगाकर उनके दुःख दूर करनेके लिये उनकी सेवा, तथा उपचार करनेको वैयावृत्यकरण भावना कहते हैं।

(१०) अर्हन्त भगवानके द्वारा ही मोक्षमार्गका उपदेश मिलता है, क्योंकि वे प्रभु केवल कहते ही नहीं हैं किन्तु स्वयं मोक्षके सन्निकट पहुंच गये हैं, इसलिये उनके गुणोंमें अनुराग करना उनकी भक्तिपूर्वक पूजन, स्तवन तथा ध्यान करना, सो अर्हद्भक्ति भावना है।

(११) विना गुरुके सच्चे ज्ञानकी प्राप्ति नहीं होती, इसलिये सच्चे निरपेक्ष और हितैषी उपदेशक समस्त संघके नायक दीक्षा-शिक्षादि देकर निर्दोष धर्ममार्ग पर चलानेवाले आचार्य महाराजके गुणोंकी सराहना करना व उनमें अनुराग करना सो आचार्यभक्ति नाम भावना है।

(१२) अल्पश्रुत अर्थात् अपूर्ण आगमके जाननेवाले पुरुषोंके द्वारा सच्चे उपदेशकी प्राप्ति होना दुर्लभ क्या? असम्भव ही है। इसलिये समस्त द्वादशांगके पारगामी श्री उपाध्याय महाराजकी भक्ति, तथा उनके गुणोंमें अनुराग करना सो बहुश्रुतभक्ति नाम भावना है।

(१३) सदा अर्हन्त भगवानके मुखकमलसे प्रगटित मिथ्यात्वका नाश करने, तथा सब जीवोंको हितकारी, वस्तु स्वरूपको बतानेवाला श्री जैन शास्त्रोंका पठनपाठनादि अभ्यास करना, सो प्रवचनभक्ति नाम भावना है।

(१४) मन वचन कायकी शुभाशुभ क्रियाओंको योग कहते हैं। इन ही योगोंके द्वारा शुभाशुभ कर्मोंका आस्रव होता है। इसलिये यदि ये आस्रवके द्वार (योग) रोक दिये जाय, तो संवर

कर्मोंका बन्ध हो सकता है और संवर करनेका उत्तमोत्तम उपाय सामायिक प्रतिक्रमण आदि षडावश्यक हैं ।

इसलिये इन्हें नित्य प्रतिपालन करना चाहिये । पद्मासन या अर्द्धासनसे बैठकर या सीधे गोडेको हाथ छोड़कर खड़े होकर मन वचन कायसे समस्त व्यापारोंको रोककर चित्तको एकाग्र करके एक ज्ञेय (आत्मा) में स्थिर करना या समभाव रूप १-सामायिक है । अपने किये हुए दोषोंको स्मरण करके उन पर पश्चात्ताप करना और उनको मिथ्या करनेके लिये प्रयत्न करना सो २-प्रतिक्रमण है । आगेके लिये दोष न होने देनेके लिये यथाशक्ति नियम करना (दोषोंका त्याग करना) सो ३-प्रत्याख्यान है । तीर्थंकरादि अर्हंत आदि पंच परमेष्ठियों तथा चौबीस तीर्थंकरोंके गुण कीर्तन करना सो ४-स्तवन है । मन वचन काय शुद्ध करके चारों दिशाओंमें चार शिरोनति और प्रत्येक दिशामें तीन आवर्त ऐसे बारह आवर्त करके पूर्व या उत्तर दिशामें अष्टांग नमस्कार करना तथा एक तीर्थंकरकी स्तुति करना सो ५-वन्दना है और किसी समय विशेषका प्रमाण करके उतने समय तक एकासनसे स्थिर रहना तथा उतने समयके भीतर शरीरसे मोह छोड़ देना उसपर आए हुए समस्त उपसर्गों व परीषहोंको समभावोंसे सहन करना सो ६-कायोत्सर्ग है । इस प्रकार विचार कर इन छहों आवश्यकोंमें जो सावधान होकर प्रवर्तन करता है सो परम संवरका कारण आवश्यक परिहाणि नामकी भावना है ।

(१५) काल-दोषके अथवा उपदेशके अभावसे संसारी जीवोंके द्वारा सत्य धर्मपर अनेकों आक्षेप होनेके कारण उसका लोप सा हो जाता है । धर्मके लोप होनेसे जीव भी धर्म रहित होकर संसारमें नाना प्रकारके दुःखोंके पात्र होते हैं । इसलिये ऐसे ऐसे समयोंमें येन केन प्रकारेण समस्त जीवोंपर सत्य (जिन) धर्मका

प्रभाव प्रगट कर देना, सो मार्ग प्रभावना है। और यह प्रभावना जिन धर्मके उपदेशोंके प्रचार करने, शास्त्रोंके प्रकाशन व प्रसारणसे, शास्त्रोंके अध्ययन वा अध्यापन करने करानेसे, विद्वानोंकी सभायें कराने, अपने आप सदाचरण पालने, लोकोपकारी कार्य कराने, दान देने सघ निकालने व विद्यामन्दिरोंकी स्थापना व प्रतिष्टादि करने, सत्य व्यवहार करने, सयम व तपादिक करनेसे होती है, ऐसा समझकर यथाशक्ति प्रभावनोत्पादक कार्योंमें प्रवर्तना सो मार्गप्रभावना नामकी भावना है।

(१६) ससारमें रहते हुए जीवोंकी परस्पर सहायता व उपकारकी आवश्यकता रहती है, ऐसी अवस्थामें यदि निष्कपट भावसे अथवा प्रेमपूर्वक सहायता न की जाय, तो परस्पर यथार्थ लाभ पहुचना दुर्लभ ही है। इतना हो नहीं किन्तु परस्परके विरोधसे अनेकानेक हानिया व दु:ख होना सम्भव है, जैसे हो भी रहे हैं। इसलिये यह परमावश्यक कर्त्तव्य है कि प्राणी परस्पर (गायका अपने बछडे पर जैसा कि निष्कपट और प्रगाढ प्रेम होता है वैसा ही) निष्कपट प्रेम करें। विशेषकर साधर्मियोंके सग तो कृत्रिम प्रेम कभी न करे, ऐसा विचार कर जो साधर्मियों तथा प्राणी मात्रसे अपना निष्कपट व्यवहार रखते हैं उसे प्रवचन-वात्सल्य नामकी भावना कहते हैं।

इन १६ भावनाओंको यदि केवली श्रुतकेवलीके पादमूलके निकट अन्त करणसे चिन्तवन की जायें तथा तदनुसार प्रवर्तन किया जाय तो इनका फल तीर्थंकर नामकर्मके आश्रवका कारण है। आचार्य महाराज इस प्रकार सोलह भावनाओंका स्वरूप कहकर आगे व्रतकी विधि कहते हैं—

भादों, माघ और चैत्र (गुजराती श्रावण, पौष और फाल्गुन वदी १ से कुंवार, फाल्गुन और वैशाख वदी १ (गुजराती भादों

—माघ चैत्र वदी १) तक (एक वर्षमें तीन बार) पूरे एक एक मास तक यह व्रत करना चाहिये।

इन दिनों तेला बेला आदि उपवास करे अथवा नीरस वा एक आदि दो तीन रस त्यागकर ऊनोदर पूर्वक अतिथि वा दीन दुःखी नर वा पशुओंको भोजनादि दान देकर एक-भुक्त करे, स्नान, मंजन वस्त्रालंकार विशेष धारण न करे, शीलव्रत (ब्रह्मचर्य) रक्खे, नित्य षोडशकारण भावना भावे और यन्त्र बनाकर पूजा अभिषेक करे त्रिकाल सामायिक करे और (ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धि, विनयसम्पन्नता शीलव्रतेष्वनतिचार अभीक्ष्णज्ञानोपयोग संवेग शक्तितस्त्याग, शक्तितस्तप साधुसमाधि वैयावृत्यकरण, अर्हद्भक्ति आचार्यभक्ति उपाध्यायभक्ति प्रवचनभक्ति आवश्यकापरिहाणि मार्गप्रभावना प्रवचनवात्सल्यादि षोडशकारणेभ्यो नमः) इस महामंत्रका दिनमें तीनवार १०८ एक सो आठ वार जाप करे। इस प्रकार इस व्रतको उत्कृष्ट सोलह वर्ष मध्यम ५ अथवा दो वर्ष और जघन्य १ वर्ष करके यथाशक्ति उद्यापन करे। अर्थात् सोलह उपकरण श्री मंदिरजीमें भेट दे और शास्त्र व विद्यादान करे, शास्त्र-भण्डार खोले सरस्वती मन्दिर बनावे पवित्र जिनधर्मका उपदेश करे और करावे इत्यादि। यदि द्रव्य खर्च करनेकी शक्ति न हो तो व्रत द्विगुणित करे।

इस प्रकार ऋषिराजके मुखसे व्रतकी विधि सुनकर कालभैरवी नामकी उस ब्राह्मण कन्याने षोडशकारण व्रत स्वीकार करके उत्तम रीतिसे पालन किया भावना भायी और विधिपूर्वक उद्यापन किया। पीछे वह आयुके अन्तमें समाधिमरण द्वारा स्त्रीलिंग छेदकर सोलहवें (अच्युत) स्वर्गमें देव हुई। वहांसे बाईस सागर आयु पूर्ण कर वह देव जम्बूद्वीपके विदेहक्षेत्र सम्बन्धी अमरावती देशके गन्धर्व नगरमें राजा श्रीमंदिरकी रानी

महादेवीके सीमन्धर नामका तीर्थङ्कर पुत्र हुआ सो योग्य अवस्थाको प्राप्त होकर राज्योचित सुख भोग जिनेश्वरी दीक्षा ली और घोर तपश्चरण कर केवलज्ञान प्राप्त करके बहुत जीवोंको धर्मोपदेश दिया, तथा आयुके अन्तमें समस्त अघाति कर्मोंका भी नाश कर निर्वाणपद प्राप्त किया।

इस प्रकार इस व्रतको धारण करनेसे कालभैरवी नाम ब्राह्मण कन्याने सुर-नरभवोंके सुखोंको भोगकर अक्षय अविनाशी स्वाधीन मोक्षसुखको प्राप्त कर लिया, तो जो अन्य भव्यजीव इस व्रतको पालन करेंगे उनको भी अवश्य ही उत्तम फलकी प्राप्ति होवेगी।

षोडशकारण व्रत धरो, कालभैरवी सार।
सुरनरके सुख "दीप" लह, लहो मोक्ष अधिकार ॥ १

४—श्री श्रुतस्कन्ध व्रत कथा

श्रुतस्कंध वंदूं सदा, मन वच शीश नवाय।
जा प्रसाद विद्या लहूं, कहूं कथा सुखदाय ॥ १ ॥

जम्बूद्वीपके भरतक्षेत्रमें एक अंग नामका देश है उसके पाटलीपुत्र (पटना) नगरमें राजा चन्द्ररुचिकी पटरानी चन्द्रप्रभाके गुणसुन्दरी नामकी एक अत्यन्त रूपवान कन्या थी सो राजाने इस कन्याको जिनमति नामकी आर्या (गुरानी) के पास पढ़ानेको बैठाई जिससे वह थोड़े ही दिनोंमें विद्यामें निपुण हो गई। एक दिन इस कन्याने अपनी ही बुद्धिसे चौकीपर श्रुतस्कन्ध मण्डल बनाया। इसे देखकर गुरानीको आश्चर्य हुआ और कन्याकी बहुत प्रशंसा की तथा समझा कि अब यह विद्यामें निपुण हो चुकी है, इसलिये उसे महलमें राजाके पास घर जानेकी आज्ञा दी। राजा कन्याको विदुषी देखकर बहुत हर्षित हुआ और गुरानीकी भूरि भूरि स्तुति की तथा उचित पुरस्कार (भेंट) भी दिया।

एक दिन इसी नगरके उद्यानमें श्री १०८ वर्द्धमान मुनि आये। यह समाचार सुनकर राजा अपने परिवार तथा पुरजनों सहित उत्साहसे वन्दनाको गये। और भक्तिपूर्वक वन्दना करके मुनि चरणोंके निकट बैठा। मुनिराजने धर्मवृद्धि कहकर धर्मका स्वरूप समझाया जिसे सुनकर लोगोंने यथाशक्ति व्रतादिक लिये। पश्चात् राजाने कन्याकी ओर देखकर पूछा—हे मुनिराज! यह कन्या किस पुण्यसे ऐसी रूपवान और विदुषी हुई है? तब मुनिश्री बोले—

इसी जम्बूद्वीपके पूर्व विदेह संबंधी पुष्कलावती देशमें पुण्डरीकनी नगरी है। वहांका राजा गुणभद्र और रानी गुणवती थी।

सो एक समय यह राजा रानी सपरिवार श्री सीमन्धरस्वामीकी वन्दनाको गये और यथायोग्य भक्ति वंदना करके नर कोठेमें बैठे। पश्चात् सप्त तत्व और पुण्य पापका स्वरूप सुनकर श्री गुरुसे पूछा—हे प्रभु! कृपाकर श्रुतस्कन्ध व्रतका क्या स्वरूप है, सो समझाइये। तब गणधर महाराजने कहा—श्री जिनेन्द्र भगवानकी दिव्यध्वनि सातिशय निरक्षरी (वाणी) मेघकी गर्जनाके समान ॐकाररूप भव्यजीवोंके हितार्थ उनके पुण्यके अतिशयके कारण और भगवानकी वचनवर्गणाके उदयसे खिरती है। इसे सर्व सभाजन अपनी२ भाषाओंमें समझ लेते हैं। इस वाणीको चार ज्ञानधारी गणनायक मुनि अल्पज्ञानी जीवोंके सम्बोधनार्थ (आचाराङ्ग, सूत्रकृताङ्ग, समवायाङ्ग, व्याख्याप्रज्ञप्ति, ज्ञातृकथाङ्ग, उपासकाध्ययनाङ्ग, अन्तकृद्दशाङ्ग, अनुत्तरोपपादकदशाङ्ग, प्रश्नव्याकरणाङ्ग, सूत्रविपाकाङ्ग, और दृष्टिप्रवादाङ्ग) इस प्रकार द्वादशाङ्ग रूपसे कथन की। फिर इन्हींके आधारसे और मुनियोंने भी भेदाभेद पूर्वक देशभाषाओंमें कथन की है। यह जिनेन्द्रवाणी समस्त लोकालोकके स्वरूप और त्रिकालवर्ती पदार्थोंको प्रदर्शित करनेवाली समस्त प्राणियोंके हितरूप मिथ्या मतोंकी उत्थापक, पूर्वापरके विरोधोंसे रहित अनुपमेय है, सो जो भव्यजीव इस वाणीको सुनकर हृदयरूप करता अथवा उसकी भावना भाकर व्रत संयम धारण करता है, वह भी अनेक शास्त्रोंका पारगामी हो जाता है। इस व्रतकी विधि इस प्रकार है कि भादो मासमें नित्य श्री जिन चैत्यालयमें श्रुतस्कन्ध मण्डल माडकर श्रुतस्कन्ध पूजन विधान करे और एक मासमें उत्कृष्ट १६, मध्यम १० और जघन्य आठ उपवास करे। पारणाके दिन यथाशक्ति नीरस व एक दो आदि रस छोड़कर एकभुक्त करे। इस प्रकार यह व्रत बारह वर्ष तक अथवा पांच वर्ष तक करे पीछे उद्यापन करे। बारह बारह उपकरण घण्टा, झालर, पूजाके बर्तन, छत्र,

चमर चन्दोवा, चौकी वेष्टनादि मन्दिरमें भेट करे, शास्त्र लिखाकर जिनालयमें पधरावे तथा श्रावकोंको भेट देवे और शास्त्र भण्डारोंकी सम्हाल करे, नवीन सरस्वती भवन बनावे, सर्वसाधारणजनोंको भी जिनवाणीका उपदेश करे और करावे। इस प्रकार यह व्रत धारण करनेसे अनुक्रमसे केवलज्ञानकी प्राप्ति होकर सिद्धपद प्राप्त होता है।

व्रतमें नित्य दिनमें तीन बार जपे—“ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूतस्याद्वादनयगर्भितद्वादशांगश्रुतज्ञानेभ्यो नमः” और भावना भावे। इस प्रकार राजा गुणभद्र और गुणवती रानीने व्रतकी विधि सुनकर भावसहित धारण किया और भावना भाई। सो अंतसमय समाधिमरणकर अच्युतस्वर्गमें इन्द्र इन्द्राणी हुए। वहांसे यह रानीका जीव (इन्द्राणी) चयकर यह तेरे श्रुतशालिनी नामकी कन्या हुई।

इस प्रकार गुरुमुखसे भवांतर सुनकर उस कन्याने पुनः श्रुतस्कन्ध व्रत धारण किया और चारित्रके प्रभावसे विषय-कषायोंको अतिशय मंद किया पश्चात् अंत समयमें समाधिसे मरण कर स्त्रीलिंगको छेदकर इन्द्रपद प्राप्त किया और वहांके अनुपम सुख भोगकर अपरविदेह कुमुदवती देशके अशोकपुरमें पद्मनाभ राजाकी पट्टरानी जितपद्माके गर्भसे मकरध्वज नाम तीर्थंकर हुआ। साथ ही चक्रवर्ती और कामदेवपदको भी सुशोभित किया। बहुत समय तक नीतिपूर्वक प्रजाका पालन किया। पश्चात् एक दिन इन्द्रधनुषको आकाशमें विलीन होते देख वैराग्य उत्पन्न हुआ। सो अनित्य अशरण संसार एकत्व अन्यत्व अशुचित्व आस्रव संवर निर्जरा लोक बोधिदुर्लभ और धर्म वैराग्यको दृढ करनेवाली इन बारह भावनाओंका चिंतवनकर दीक्षा ग्रहण की और जिनभेष धारणकर उग्र संयम पालकर शुक्लध्यानके योगसे केवलज्ञान प्राप्त किया, तब देवोंने समवसरणकी

रचना की। इस प्रकार अनेक देशोंमें विहार करके भव्य जीवोंको वस्तुस्वरूपका उपदेश दिया और आयुके अंत समयमें अघाति कर्मोंको नाश करके अविनाशी सिद्धपद प्राप्त किया। इस प्रकार और भी जो नरनारी भाव सहित इस व्रतको पालन करेंगे तो अवश्य ही उत्तम पदको प्राप्त होवेंगे।

श्रुतशालिनी कन्या कियो, श्रुतस्कन्ध व्रत सार।
"दीप" कर्म सब नाश कर, लहो मोक्ष सुखकार॥

५—श्री त्रिलोक तीज व्रत कथा

वन्दों श्री जिनदेव पद वन्दूं गुरु चरणार।
वन्दूं माता सरस्वती कथा कहूँ हितकार॥

जम्बूद्वीपके भरतक्षेत्र सम्बन्धी कुरुजांगल देशमें हस्तनागपुर नामक एक अति रमणीक नगर है। वहांका राजा कामकुंभ और रानी कमललोचना थी और उनके विक्रमदत्त नामका पुत्र था। उस राजाके वरदत्त नामका एक मंत्री था जिसकी विजयमती पत्नीसे विजयसुन्दरी नामक एक कन्या बहुत सुन्दर थी जिसका पाणिग्रहण राजपुत्र विक्रमदत्तने किया था। कितनेक दिन बाद राजा कामकुंभकी मृत्यु होनेपर युवराज विक्रमदत्त राजा हुआ।

एक दिन राजा अपने पिताके वियोगसे व्याकुल हुआ उदास बैठा था कि उसी समय उस ओर विहार करते हुए श्री ज्ञानसागर नामके मुनिवर पधारे। राजाने उनको भक्तिपूर्वक नमस्कार करके उच्चासन दिया, तब मुनिराजने धर्मवृद्धि रूप आशीष दी और इस प्रकार संबोधन करने लगे—

राजा! सुनो यह काल (मृत्यु) सुर (देव) नर पशु आदि किसीको भी नहीं छोड़ता है। संसारमें जो उत्पन्न होता है सो नियमसे नाश होता है। ऐसी विनाशीक वस्तुके संयोग वियोगमें हर्ष विषाद ही क्या? यह तो पक्षियोंके समान रैन (रात्रि) बसेरा है। जहांपर देश देशांतरके अनेक लोग आ मिलते हैं परंतु अवधि पूरी होने पर सब अपनेर देशको चले जाते हैं।

इसी प्रकार ये जीव एक कुल (वंश-परिवार)में अनेक गतियोंसे आ आकर एकत्रित होते हैं और अपनी२ आयु पूर्ण कर संचित कर्मानुसार यथायोग्य गतियोंमें चले जाते हैं। किसीकी यह सामर्थ्य नहीं कि एक क्षणमात्र भी आयुको बढ़ा सके। यदि

ऐसा होता तो बड़े बड़े तीर्थङ्कर, चक्रवर्ती आदि पुरुषोंको क्यों कोई मरने देता ? मृत्युसे यद्यपि वियोगजनित दुःख अवश्य ही मोहके वश मालूम होता है, तथापि उपकार भी बहुत होता है। यदि मृत्यु नहीं होती तो रोगी रोगसे मुक्त न होता, संसारी कभी सिद्ध न हो सकता, जो जिस दशामे होता उसीमें रह जाता, इसलिये यह मृत्यु उपकारी भी है, ऐसा समझकर शोक तजो। इस शोकसे (आर्तध्यानसे) अशुभ कर्मोंका बंध होता है जिससे अनेकों जन्मांतरों तक रोना पड़ता है। रोना बहुत दुःखदाई है।

मुनिके उपदेशसे राजाको कुछ धैर्य बन्धा। वे शोक तजकर प्रजापालनमें तत्पर हुए, और मुनिराज भी विहार कर गये।

एक दिन रानीने संयमभूषण आर्जिकाके दर्शन करके पूछा—माताजी ! मेरे योग्य कोई व्रत बताइये जिससे मेरी चिंता दूर होवे और जन्म सुधरे, तब आर्यिकाजीने कहा—तुम त्रैलोक्य तीज व्रत करो। भादों सुदी ३ को उपवास करके चौबीस तीर्थङ्करोंके ७२ कोठेका मंडल माडकर तीन चौबीसी पूजा विधान करो और तीनों काल १०८ जाप (ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत् कालसम्बन्धिचतुर्विंशतीर्थङ्करेभ्यो नमः) जपे, रात्रिको जागरण करके भजन व धर्मध्यानमें काल बितावे। इसप्रकार तीन वर्ष तक यह व्रत कर पीछे उद्यापन करे, अथवा व्रत द्विगुणित करे। इसे दूसरे लोग रोटतीज भी कहते हैं।

उद्यापन करनेके समय तीन चौबीसीका मण्डल माडकर बड़ा विधान पूजन करे और प्रत्येक प्रकारके उपकरण तीन२ श्री मंदिरजीमें भेट करे। चतुर्संघको चार प्रकारका दान देवे। शास्त्र लिखाकर बांटे। इसप्रकार रानीने व्रतकी विधि सुनकर विधिपूर्वक इसे धारण किया। पश्चात् आयुके अन्तमें समाधिमरण

करके सोलहवें स्वर्गमें स्त्रीलिंग छेदकर देव हुई वहां नाना प्रकारके देवोचित सुख भोगे, तथा अकृत्रिम जिन चैत्यालयोंकी वन्दना आदि करते हुये यथासाध्य धर्मध्यानमें समय बिताया।

पश्चात् वहांसे चयकर मगधदेशके कनकपुर नगरमें राजा पिंगल और रानी कमललोचनाके सुमंगल नामका अति रूपवान तथा गुणवान पुत्र हुआ। सो वह राजपुत्र एक दिन अपने मित्रों-सहित वनक्रीड़ाको गया था कि वहांपर परम दिगम्बर मुनिको देखकर इसे मोह उत्पन्न होगया सो मुनिकी वंदना करके पास निकट बैठा और पूछने लगा—हे प्रभो! आपको देखकर मुझे मोह क्यों उत्पन्न हुआ?

तब श्रीगुरु कहने लगे—वत्स! तुम यह जीव अनादिकालसे मोहादि कर्मोंसे लिप्त होरहा है और क्या जाने इसके किस समय किस समयके बांधे हुए कौन कौन कर्म उदयमें आते हैं जिनके कारण यह प्राणी कभी हर्ष व कभी विषादको प्राप्त होता है।

इस समय जो तुझे मोह हुआ है इसका कारण यह है कि इससे तीसरे भवमें तू हस्तनापुरके राजा विशालदत्तकी भार्या विजयसुन्दरी नामकी रानी थी सो तुझे संयमभूषण आर्यिकाने सम्बोधन करके त्रैलोक्य तीजका व्रत दिया था जिसके प्रभावसे तू स्त्रीलिंग छेदकर स्वर्गमें देव हुआ—और वहांसे चयकर यहां राजा पिंगलके सुमंगल नामका पुत्र हुआ है और वह संयमभूषण आर्यिकाका जीव वहांसे समाधिमरण करके स्वर्गमें देव हुआ।

वहांसे चयकर यहां मैं मनुष्य हुआ हूं, सो कोई कारण पाकर दीक्षा लेकर विहार करता हुआ यहां आया हूं। इसलिये तुझे पूर्व स्नेहके कारण यह मोह हुआ है।

हे वत्स! यह मोह महादुःखका देनेवाला त्यागने योग्य है।

ऐसा होता तो बड़े बड़े तीर्थङ्कर, चक्रवर्ती आदि पुरुषोंको क्यों कोई मरने देता ? मृत्युसे यद्यपि वियोगजनित दुःख अवश्य ही मोहके वश मालूम होता है, तथापि उपकार भी बहुत होता है। यदि मृत्यु नहीं होती तो रोगी रोगसे मुक्त न होता, समाधि कभी सिद्ध न हो सकता, जो जिस दशामें होता उसीमें रह जाता, इसलिये यह मृत्यु उपकारी भी है, ऐसा समझकर शोक तजो। इस शोकसे (आर्तध्यानसे) अशुभ कर्मोंका बंध होता है जिससे अनेकों जन्मांतरों तक रोना पड़ता है। रोना बहुत दुःखदाई है।

मुनिके उपदेशसे राजाको कुछ धैर्य बन्धा। वे शोक तजकर प्रजापालनमें तत्पर हुए, और मुनिराज भी विहार कर गये।

एक दिन रानीने संयमभूषण आर्जिकाके दर्शन करके पूछा—माताजी ! मेरे योग्य कोई व्रत बताइये जिससे मेरी चिंता दूर होवे और जन्म सुधरे, तब आर्यिकाजीने कहा—तुम त्रैलोक्य तीज व्रत करो। भादों सुदी ३ को उपवास करके चौबीस तीर्थङ्करोंके ७२ कोठेका मंडल माडकर तीन चौबीसी पूजा विधान करो और तीनों काल १०८ जाप (ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत् कालसम्बन्धिचतुर्विंशतीर्थङ्करेभ्यो नमः) जपे, रात्रिको जागरण करके भजन व धर्मध्यानमें काल बितावे। इसप्रकार तीन वर्ष तक यह व्रत कर पीछे उद्यापन करे, अथवा व्रत द्विगुणित करे। इसे दूसरे लोग रोटतीज भी कहते हैं।

उद्यापन करनेके समय तीन चौबीसीका मण्डल माडकर बड़ा विधान पूजन करे और प्रत्येक प्रकारके उपकरण तीन२ श्री मंदिरजीमें भेट करे। चतुर्संघको चार प्रकारका दान देवे। शास्त्र लिखाकर बांटे। इसप्रकार रानीने व्रतकी विधि सुनकर विधिपूर्वक इसे धारण किया। पश्चात् आयुके अन्तमें समाधिमरण

करके सोलहवें स्वर्गमें स्त्रीलिंग छेदकर देव हुई वहां नाना प्रकारके देवोचित सुख भोगे तथा अकृत्रिम जिन चैत्यालयोंकी वन्दना आदि करते हुये यथासाध्य धर्मध्यानमें समय बिताया।

पश्चात् वहांसे चयकर मगधदेशके कंचनपुर नगरमें राजा पिंगल और रानी कमलशोभनाके सुमंगल नामका अति रूपवान तथा गुणवान पुत्र हुआ। सो वह राजपुत्र एक दिन अपने मित्रों-सहित वनक्रीडाको गया था कि वहांपर परम दिगम्बर मुनिको देखकर इसे मोह उत्पन्न होगया सो मुनिकी वंदना करके पास निकट बैठा और पूछने लगा—हे प्रभो! आपको देखकर मुझे मोह क्यों उत्पन्न हुआ?

तब श्रीगुरु कहने लगा—वत्स! सुन यह जीव अनादिकालसे मोहादि कर्मोंसे लिप्त होरहा है और क्या जाने इसके किस समय किस समयके बांधे हुए कौन कौन कर्म उदयमें आते हैं जिनके कारण यह प्राणी कभी हर्ष व कभी विषादको प्राप्त होता है।

इस समय जो तुझे मोह हुआ है इसका कारण यह है कि इससे तीसरे भवमें तू हस्तनापुरके राजा विजयदत्तकी भार्या विजयसुन्दरी नामकी रानी थी सो तुझे संयमभूषण आर्यिकाने सम्बोधन करके त्रैलोक्य तीजका व्रत दिया था जिसके प्रभावसे तू स्त्रीलिंग छेदकर स्वर्गमें देव हुआ, और वहांसे चयकर यहां राजा पिंगलके सुमंगल नामका पुत्र हुआ है और वह संयमभूषण आर्यिकाका जीव वहांसे समाधिमरण करके स्वर्गमें देव हुआ।

वहांसे चयकर यहां मैं मनुष्य हुआ हूं, सो कोई कारण पाकर दीक्षा लेकर विहार करता हुआ यहां आया हूं। इसलिये तुझे पूर्व स्नेहके कारण यह मोह हुआ है।

हे वत्स! यह मोह महादुःखका देनेवाला त्यागने योग्य है।

अनेक संस्थाएँ जैन संघ की देखरेख में अच्छे ढंग से चल रही है। लोगों में श्रद्धा भक्ति भी बहुत है।

त्यागराय नगर के जैन बोर्डिङ्ग में राजाजी राजगोपालाचारी की अध्यक्षता में "जैनधर्म की अहिंसा" के संबंध में एक सभा हुई। इसमें मैंने बताया कि "जिस युग में चारों ओर हिंसा, बलिप्रथा और वैर भाव का वातावरण छाया हुआ था, उस युग में भगवान महावीर का जन्म हुआ और उन्होंने दुनिया को अहिंसा के मार्ग पर चलने का आवाहन दिया। यदि उस समय भगवान महावीर न आये होते तो न जाने इस देश की क्या दशा होती। भगवान ने कहा है कि हे जीव, तुम जिसे मारना चाहते हो, वह तुम्हीं हो। दूसरे को मारने वाला अपनी ही हिंसा करता है। अपने ही आत्म गुणों का विघातक बनता है। इस दुनिया मे कोई भी प्राणी मरना नहीं चाहता है, किसी को मारने का, किसी को कष्ट देने का, संताप या परिताप देने का तुम्हें क्या अधिकार है? यह भगवान महावीर का उपदेश था। इस उपदेश ने जनता पर जादू का असर किया और वातावरण में चामत्कारिक परिवर्तन आया।"

राजाजी ने इस अवसर पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि "अहिंसा, अंधकार को दूर करने के लिए एक दीपक के सदृश है। अहिंसा विश्व शांति का मूल मंत्र है। भारतीय दर्शनों में जैन दर्शन की महत्ता अहिंसा के कारण ही है। अहिंसा मनुष्य की निर्बलता की द्योतक नहीं बल्कि वह तो मानवीयता की प्रतीक है। जैन धर्म ने न केवल मनुष्यों तक बल्कि पशुओं और अविकसित प्राणियों तक अहिंसा का विस्तार किया है। दक्षिण में पशुबलि के बंद कराने का श्रेय जैन धर्म की इसी उत्कृष्ट और प्राचीन अहिंसा परम्परा को ही है।"

आवश्यकता है। बिना अहिंसा के आज दुनिया की समस्याएं और किसी मार्ग से हल नहीं हो सकती। मुख्य मंत्री ने जैन-साधुओं के कठिन आचार प्रश्नों की भूरि भूरि प्रशंसा की।

पैरम्बूर में उपाश्रय का काम बहुत दिन से अर्थाभाव के कारण अधूरा पड़ा था। हमारे उपदेश से प्रभावित होकर संघ ने उसे शीघ्र पूर्ण करने का निश्चय किया और व्याख्यान के अवसर पर ही ४५) रुपये का चन्दा हो गया। ६ भाइयों ने यह प्रतिज्ञा की कि १५०००) रुपये एकत्रित न होने तक वे पैरों में जूते नहीं पहनेंगे। अब इससे भी अधिक रुपये लगाकर वहां उपाश्रय का निर्माण करा दिया गया है।

पुग्गली कुलम् से ही पूरे मद्रास शहर को जल वितरित किया जाता है यहां पर पानी का बहुत सुन्दर तालाब है। यहां पर भी उपाश्रय के निर्माण के लिए तैयारी की गई।

तामरम् में नये उपाश्रय का निर्माण हुआ था उसका उद्घाटन संपन्न हुआ। सेठ मोहनलालजी चौरड़िया की अध्यक्षता में सेठ भोगीचन्दजी भंडारी ने उद्घाटन-विधि सम्पन्न की। उपाश्रय में हॉल के निर्माण का भी निश्चय किया गया। नगर पालिका की तरफ से अनेक तिथियों के दिन कत्ल खाना बंद रखने का निश्चय किया।

महाबली पुरम् में समुद्र के किनारे पर बना हुआ अति सुन्दर कलात्मक मंदिर है पत्थर में भी कलाकार किस तरह प्राण भर सकता है इसका नमूना यह मंदिर है। भारत में दक्षिणी प्रान्त शिल्प और स्थापत्य कला की दृष्टि से विशेष महत्व रखते हैं।

मधुरान्तकम् की संस्कृत पाठशाला का स्मरण अभी तक विद्यमान है। यहां पर संस्कृत का अध्ययन करने वाले ब्राह्मण

१०.

मद्रास से बैंगलोर

卐

मद्रास में सन् १९६० का चातुर्मास सानन्द सपन्न किया। अनेक प्रकार की त्याग तपस्या की प्रवृत्तिया हुई। अनेक विशिष्ट विचारों, समाज सेवकों और लोक नेताओं से सपर्क हुआ तथा उन्हें जैन धर्म का परिचय दिया।

बंगाल के प्रसिद्ध समाजसेवी एव स्वायत्त शासन मत्री श्री ईश्वरदास जालान से बातचीत के दौरान मे आध्यात्मिक विकास के बारे में चर्चा हुई। उन्होंने भी यह महसूस किया कि जबतक मानव-जीवन में अध्यात्मवाद की प्रतिष्ठा नहीं होगी, तब तक किसी भी प्रकार से सामाजिक उन्नति भी सभव नहीं। अध्यात्मवाद की बुनियाद पर सामाजिक जीवन का महल मजबूती से खड़ा रह सकता है।

इसी प्रकार मद्रास राज्य के सरल चेता और तात्विक वृत्ति के मुख्य मत्री श्री कामराज नाडार से भी गंभीर चर्चाएं हुई। उन्होंने इस बात को स्वीकार किया कि आज हिंसा और द्वेष से संत्रस्त मानव जगत को भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित अहिंसा की नितान्त

विशाल पंडाल में सम्पन्न हुआ। श्रावक समाज में त्याग तपस्या दयाव्रत आदि के अनेक अनुष्ठान हुए।

तिरुक्कोविलूर में जाहिर प्रवचन किया। महावीर जयन्ती का भव्य आयोजन हुआ। भगवान महावीर की उग्र जीवन-साधना पर प्रकाश डाला गया। जैन धर्म क्या है, जैन साधुओं के व्रत क्या हैं, इन सब प्रासंगिक विषयों की जानकारी भी दी गई। आम जनता बहुत हर्षित हुई।

तिरुवण्णामलै में सर्व धर्म सम्मेलन का आयोजन किया गया। सभी धर्मों ने बुनियादी रूप से इसी बात पर जोर दिया है कि मानव को सत् कर्त्तव्यों पर चलना चाहिए। अहिंसा सत्य प्रेम करुणा आदि को सभी धर्मों ने एक स्वर से स्वीकार किया है। फिर आपस में धर्म के नाम पर किस बात का झगड़ा?

इस सर्व धर्म सम्मेलन में स्थानीय जनता ने बहुत बड़ी संख्या में भाग लिया। अनेक वकीलों शिक्षकों डाक्टरों सरकारी अधिकारियों आदि ने भी भाग लिया। अनेक स्थानीय विद्वानों के तमिल में भाषण भी हुए।

इसी तरह का सर्व धर्म सम्मेलन वेलूर में भी हुआ। वेलूर में अक्षय तृतीया का समारोह बहुत शानदार ढंग से मनाया गया। जुलूस भी अपने ढंग का दर्शनीय था। यहां बाहर के करीब १२ स्थानों के व्यक्ति एकत्रित हुए जिनकी तादाद हजार बारह सौ तक पहुँच गई। अनेक लोगों ने त्याग-तपस्या व ब्रह्मचर्य व्रत को स्वीकार किया।

विद्यार्थियों के लिये सब प्रबंध निःशुल्क किया गया है। यहा जैनों के १२ घर हैं पर इनमें एकता का सर्वथा अभाव था। तीन दलों में सब लोग बटे हुए थे। इसलिए सबको उपदेश देकर समझाया गया और एकता स्थापित की गई। १० हजार रुपये का चन्दा उपाश्रय के निर्माण के लिए हुआ। यह निश्चय किया गया कि एक साल के अन्दर उपाश्रय का मकान हो जाना चाहिए। तिन्डीवनम् में जैन स्थानक के लिये बारह हजार का चन्दा हुआ और उपाश्रय के लिये मकान ले लिया गया। पुस्तकालय यहा अच्छे ढग से है।

पाण्डिचेरी हिन्दुस्तान का एक प्रसिद्ध स्थान है। यहा की प्रसिद्धि के २ कारण हैं—एक तो, श्री अरविन्द का साधना स्थल, अरविन्द आश्रम और दूसरे में पाण्डिचेरी पहले फ्रांसिसी उपनिवेश था और वह शांतिपूर्वक वापस स्वतन्त्र किया गया। श्री अरविन्द आश्रम भारत का एक आदर्श आश्रम है। यहा की व्यवस्था बहुत उत्कृष्ट है और साधकों का जीवन भी अपने ढंग से बहुत साधनामय है। पाण्डिचेरी में भक्ति भावना खूब हुई। लोगों ने व्याख्यान श्रवण तथा धर्म चर्चा का खूब लाभ लिया। अहिंसा और जैन धर्म के संबंध में गवर्नमेन्ट हाई स्कूल में सार्वजनिक प्रवचन हुए। लोगों ने मुक्त हस्त से प्रभावना भी बाटी। रमेश भाई ने स्व० पिता के कहे अनुसार अपनी दुकान पर प्रवचन करवाया। अतिथी सत्कार भी किया। ५ अट्ठाईया हुई।

विल्लीपुरम् तो ब्रह्मचर्य पुरम् बन गया। यहा पर ५ महानुभावों ने दंपति सहित ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार किया। उनके साहस और व्रत-भावना की सबने भूरि-भूरि प्रशसा की। ब्रह्मचर्य सब से बड़ी तपस्या है और जीवन-शोधन का अमोघ उपाय है। विल्लीपुरम् में अनेक गावों के भाई-बहिन दर्शनार्थ आये। यहाँ पर केश कुलन्चनम् का कार्यक्रम नथमलजी दुगड़ के यहा

जयन्ती के दिन निम्न श्रद्धांजलि सुनाई गई —

हीरक मुनि के श्री चरणों में श्रद्धांजली

धरती हंसती है अम्बर भी अभिनव गीत सुनाता है।
हीरक मुनि के श्री चरणों में कवि शुभ अर्घ चढ़ाता है॥
धर्म शान्ति का प्रेम दया विश्वास मनुजता मङ्गल का।
सत्य अहिंसा आत्म धर्म का सर्वोदय, तप निष्ठा का॥
चरण चरण हो रहे जगत को मुनि श्री पथ बतलाते हैं।
इसीलिये तो त्रिविध सूत्रता, दिग्पति शंख बजाते हैं॥
अटल अहिंसा के व्रतधारी करुणा धाम तप-पूरित हैं।
कविता नहीं हृदय की अंजली सादर आज समर्पित है॥ १॥

एक सुई की नोक बराबर भूमि बन्धु को दे न सके।
वे कौरव थे इतिहासों में नाम स्वर्ण का कर न सके॥
युद्धों से ही सभी समस्या हल होती थी द्वापर में।
जब कि स्वयं भगवान कृष्ण का अनुशासन था घर घर में॥
किन्तु आज श्री हीरक मुनिजी शान्ति मार्ग बतलाते हैं।
दया-धर्म और सत्य अहिंसा का सन्देश सुनाते हैं।
जनता का निर्माल्य अपरिमित जनगण मन का अर्पित है।
कविता नहीं हृदय की अंजली मुनि चरणों में वंदित है॥ २॥

शस्य श्यामला भारतमाता भूल गई अपने दुखड़े।
हिंसक भूल गये हिंसा को, जीव दया के रस बड़े॥
उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम गगनधरा पाताल सभी।
हीरक मुनि के वचनामृत से धन्य धन्य रहता सुखर अभी॥
सन्त-शिरोमणि शान्ति-मूर्ति मुनि हीरालाल कहाते हैं।
हीरक-प्रवचन की रस-निधि का मंगल कोष लुटाते हैं॥
सत्य अहिंसा शान्ति दया ही महा-सन्त का अमृत है।
कविता नहीं हृदय की अंजली सन्त-चरणों में अर्पित है॥ ३॥

कोलार, वह स्थान है, जहा जमीन से सोना निकलता है। ये सोने की खाने बहुत प्रसिद्ध हैं। यहा पर जैनों के ६ घर हैं। हमने ३ व्याख्यान यहा पर दिये।

सिंगल पालिया मे सेठ मिश्रीलालजी कातरेला के प्रेम बाग में ठहरे। कातरेलाजी की ओर से सबको प्रीति भोज दिया गया। बैंगलोर से सैंकडों की तादाद में स्त्री-पुरुष दर्शनार्थ आये। यहा से १॥ मील दूर एक बहुत बडी सुन्दर गोशाला है। इसमें १५० एकड़ जमीन और ११२ पशु हैं।

बैंगलोर का ही एक प्रमुख उपनगर अलसूर है। सेठ जवरी लालजी मूथा के बनाये हुए उपाश्रय का उद्घाटन हुआ। इसी उपाश्रय में हम ठहरे। शूले मे भी उपाश्रय में ठहरे और सेठ छगन मलजी मूथा के बगीचे में ४ व्याख्यान दिये। इसी बगीचे में सुमति छात्रालय भी है।

काली तुर्क, ब्लाक पल्ली, सिपिंग्स रोड, तथा गाधी नगर होते हुए चिकपेठ आये। चातुर्मास का काल चिकपेठ के इसी उपाश्रय मे व्यतीत करना है। चारों ओर स्वागत एवं हर्षोल्लास का वातावरण छागया।

श्री जशराजजी गोलेछा की धर्म पत्नी श्रीमती धापूबाई ने ५१ दिन की तपस्या का पवित्र अनुष्ठान किया। सारे सघ ने उनको इस तप के लिए अभिनन्दन पत्र व दुशाला, मेयर श्री निजलिंगप्पा के हाथों से भेंट किया एव भव्य जुलूस निकाल कर उनको बधाइया दीं। और भी तपस्याएँ, सामायिक पोषध, उपवास हजारों की तादाद में शाति पूर्वक समाप्त हुए। हजारों गरीबों को भोजन दिया गया। स्व जैन दिवाकर श्री चौथमलजी म० की ८४ वीं जन्म जयति कार्तिक शुक्ला १३ को मनाई गई। कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा को

वीर लोंकाशाह जयंती का आयोजन भी सदा स्मरणीय रहेगा। पूरे समाज ने कारोबार, धंधा, उद्योग बंद रखकर प्रात. स्मरणीय वीर लोंकाशाह को श्रद्धांजलि सिनेमा हॉल में अर्पित की। ५०० स्त्री पुरुषों ने मुनिश्री लाभचन्द्जी म० से बारह व्रत स्वीकार किये।

इस प्रकार अनेक उत्सवों, आध्यात्मिक समारोहों और नित्य प्रवचनों के साथ बैंगलोर का चातुर्मास संपन्न हुआ। बंबई (फोर्ट) वर्धमान श्रावक संघ के अनेक गण्यमान्य सज्जन बंबई की विनति लेकर आये, उसे स्वीकार करके अब बैंगलोर के उपनगरों में होते हुए बंबई के लिए प्रस्थान किया।

• • •

झरिया से २११ मील बनारस

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
४	करकेन्द	नवीन माई	१
६	कतरास	नया उपाश्रय	३
८	चिरई	स्कूल	४
२	तोप चांची	स्कूल	
८॥	निमियाघाट	सेठ की कोठी	१
३	ईसरी	रवे धर्मशाला	१५
११	डुमरा	स्कूल के सामने वट वृक्ष	४
३	बगोदर	ठाकुर बाड़ी	
१॥	गोरहर	मोहम्मद अली खान का मकान	
५	बरकट्ठा	नगेन्द्रनाथसिंह सर्किल इन्सपेक्टर	
६	सबरेब	गुमास्ता बाबू मोहनजी	
१	बरही	डाक बंगला	
४	सिगराबा	सरावगी सेठ सुन्दरलालजी धर्मशाला	१
७	चौपारन	जैन धर्मशाला	१०
६	मधुआ	डाक घर	४
६।	धराघाटी	स्कूल	
७	डोभी	महन्त त्रिभुवनदासजी का आश्रम	
७	शेरघाटी	थाना	
५	बरकी ग्राम दुर्गे स्कूल		
७।	रामपुर	बद्रीदास साह	१
४॥	चलिमा मधुपुर	शिवप्रसाद दुबिया	४
१६	औरंगाबाद	धर्मशाला	
७	भीखमपुर	बनवारीसिंह बनारसीसिंह की दुकान	

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
३	सिमला ग्राम	स्कूल व अस्पताल	×
१०	मेमारि	सेठ प्रह्लादराय चौधरी का जालानी राईस मील	अग्रवाल
१	शक्तिगढ़	राईसमील	"
८	वर्द्धमान	दलपत भाई का मकान	३

वर्द्धमान से १०६ मील झरिया

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
१	बड़ा बाजार	मारवाड़ी धर्मशाला	७
३॥	फगुपुर	स्कूल	×
६	गलसी	स्कूल	
१३॥	पानागढ़	मिल्ट्री केन्टिन, नानकचन्द अग्रवाल की कोठी,	अग्रवाल
७	दीन दुःखी बाबा की झोंपड़ी	गौशाला व शिक्षा मन्दिर	
६	खरासोल	जगल विभाग का बंगला	
४	फरीदपुर थाना	थाना का बरामदा	
६	अन्डाल मोड़	देवीसिंह पजाबी	
६	रानीगज	अग्रवाल धर्मशाला	१०
१२	आसन सील	गुजराती स्कूल	१०
७	न्यामतपुर	शान्ति भाइ के मकान पर	५
४	बराकर	अमृतलाल के मकान पर	५
७	प्योर श्यामल कोलियारी	रेल्वे क्रोशिंग के पास	१
५	बरवा	डाक बंगला	×
८	गोविन्दपुर	सेठ बनारसीदास अग्रवाल	अग्रवाल
७	धनबाद	मेहता हाउस	१०
४	झरिया	नया उपाश्रय	१००

इलाहाबाद से १२३ मील कानपुर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
४	सवाय सराय	महारानी के मकान	१
७	पूरा मुफ्ती	कोठी डेरा बरामदा	
१०	मुरतगंज	धर्मशाला	
१०	चमाती	बाबूलाल दुकानदार के यहाँ	
११	अझुआ	स्कूल	
६	कटोसन पड़ाव	आटे की चक्की	
५	खागा	सेठ रामदासजी का आईल मील	
८	थरियाव नाला	कांजीहौस के पास कमरे में	
८	बिलन्दा	धर्मशाला	
५	फतहपुर	लाला लक्ष्मी प्रसाद का सिनेमा में	
१०	मलवाँ	सुमिफर स्कूल के बरामदे में	
५॥	गोपालगंज	स्कूल	
३॥	गेवरीकी औंग	स्कूल	
९।	तिवारीपुर	स्कूल	
१२॥	चकेरी पेरो ग्राम	लाला दुर्गादास के मकान पर	४
५	कानपुर	श्री श्वेताम्बरी भवन उपाश्रय कप्पर मुहाल	१

कानपुर से १८४ मील आगरा

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
३॥	गाँधीनगर	लाला जुगसेन के मकान पर	१५
५	कल्याणपुर	लाला सुन्दरलालजी मिश्रा की बगीची	
५	मन्धना	धर्मशाला	
५	चौबेपुर		
६	शिवराजपुर	ग्राम के मध्य चौराहे पर	
५	पूरा	प्राथमिक पाठशाला	
७॥	बिल्होर	हाई स्कूल में मास्टर का निवास	

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
७	धारून	स्कूल	×
४	डालमियानगर	जैन मन्दिर	८
११॥	सासाराम	धर्मशाला	
७	शिवसागर	मन्दिर के सामने	
८	सकरी	भगवानदास शा की धर्मशाला	
११	मुठानी	पुरी बाबा के यहा	
४	मोहनिया	स्कूल	
१०	घनेच्छा	चन्द्र कुण्डा धर्मशाला	
७॥	सैयद राजा	स्कूल	
५॥	चन्दोली	धर्मशाला	
७।	मुगल सराय	मनजी कच्छी का परमार भवन	१
१०	बनारस	अंग्रेजी कोठी या नया उपाश्रय	३५

बनारस से ७८ मील इलाहाबाद

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
१॥	कमच्छा	मोहनलाल शाह का मकान	
७	मोहन सराय	एक भाई का बरामदा	
६	मिर्जामुराद	सन्तमत सनातन कुटीर	
८॥	बाबुसराय	सेठ श्रीरामजी के मकान पर	
६	ओराई	एक झाड़ के नीचे	
६	गोपीगंज	सेठ जगजीवन एम पटेल की दुकान	१
११	बरौत	फलाहारी बाबा के यहा	
१०	सैदाबाद	हनुमानजी का मन्दिर	
२	हरिपुर	ठाकुर नरसिंह राम बहादुर के मकान पर	
४	हनुमानगंज	धर्मशाला	
७	झूसी	धर्मशाला	
६	इलाहाबाद	दिगम्बर जैन धर्मशाला	२०

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
९	घटसना चौकी	स्कूल	×
१०	भरतपुर	जैन स्थानक	३०

भरतपुर से ११०॥। मील जयपुर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
६	कुम्हेर	जैन पारसलालजी पल्लीवाल के मकान पर	५
९	बहरा चौकी	कस्तूरचन्द मोदी पर धर्मशाला	×
९॥	नदबाई	वैष्णव मन्दिर	
६	खानोली	स्कूल	
१०॥	महुवा	जैन धर्मशाला	११
९	पीपल खेड़ा	स्कूल	
११	मानपुरा	धर्मशाला	
९॥	सिकन्दरा	तिवारा गांवीहाई से भाई सड़क यहां भी बनी है।	
१६	दौसा	सेठ मोहनलालजी के नोहरे पर ठहरे	३
९	भीरोदा	शिवजी मन्दिर	
१२।	मोहनपुरा	डाक बंगला	
८	कानोता	धर्मशाला	
८	जयपुर	लाल भवन चौड़ा रास्ता	५००

जयपुर से रेल्वे रास्ते १५६॥ मील नागोर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
३	जयपुर स्टेशन	५ मन्दिरों की जैन धर्मशाला	२
९	धानक्यपुरा	तिवारा	१
९	कनकिया	चबूतर	
१२	भासखपुर बीकानेर स्टेशन	धर्मशाला	
६	हरिनोदा	धर्मशाला	

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
६॥	श्ररौल	प्राथमिक स्कूल	×
६॥	सराय मीरा कन्नोज स्टेशन,	स्कूल का बरामदा	
४॥	जलालपुर पढवारा	मनिलाल ब्राह्मण का बगीचा	
६॥	गुरसहाय गंज	रामचन्द्रजी का मन्दिर	
४॥	सराय प्रयाग	माध्यमिक विद्यालय	दि० १
१०	छिपरामऊ	धर्मशाला	
५	प्रेमपुर	स्कूल	
८	बेवर	धर्मशाला	
६	परतापुर	स्कूल	
६॥	ललुपुरा	चक्कीवालों के बरामदे में	
५॥	मैनपुरी	दयालबाग	दि० १००
८॥	बेथराई	भूपसिंह ठाकुर के मकान पर	×
६॥	घिरोर	जैन दिगम्बर मन्दिर	दि० १२
६	आजमाबाद	जैन दिगम्बर मन्दिर	दि० १०
८	शिकोवाबाद	सोनी की धर्मशाला	दि० ५०
७	मक्खनपुर	ग्राम पचायत का मकान	×
६	फिरोजाबाद	धर्मशाला	दि० १००
१२	एक ग्राम	धर्मशाला	×
६	गोबर चौकी	धर्मशाला	
११	आगरा	मानपाड़ा स्थानक	३५
१॥	लोहा मण्डी	जैन स्थानक	५०

आगरा से ३२ मील भरतपुर

८	अगुठी	नेमचन्दजी के मकान पर	२
८	अछनेरा	बम्बई वालों की धर्मशाला	२

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
४	रामीसर	एक भाई के मकान पर	७
५	देशनोक	जैन उपाश्रय	११५
१	प्याऊ	प्याऊ	
६	उदेरामसर	स्कूल	५०
७	बीकानेर	सेठिया का मकान	३०

बीकानेर से १७१ मील जोधपुर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
३	भिनासर	सेठ भूरचन्दजी हीरालालजी दढ़िया के उपाश्रय में	१०
२	उदेरामसर	एक भाई के मकान पर	५०
६	मुआसर	प्याऊ	
३	प्याऊ	प्याऊ	
१	देशनोक	जवाहिर मण्डल	१२५
४	रासीसर	केसरीमलजी चौरड़िया के मकान पर	७
५	माभसर	प्याऊ	
७	नोखा	सरकारी कोठरा	२०
३	नोखा मण्डी	उपाश्रय	४०
४	ग्वाद	ग्वाडर	
६	भवलोदा	चम्पालालजी बोठिया के मकान पर	४
६	खावी	पेड़ के नीचे	×
६	गोगेलाव	जैन उपाश्रय	५०
६	नागोर	कोठारी का उपाश्रय	१५
४	खाटेश्वर	मन्दिर	
९	मुंडेरा	महेश्वरी के मकान पर	

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
६	फुलेरा जँक्शन	धर्मशाला	+
५	साभर	श्वे० जैन मन्दिर	१०
५	गुढा	धर्मशाला	
१०	कुचामण स्टेशन	धर्मशाला	दि० १४
५	मीठडी	नोहरे मे ठहरे	
४	नारायणपुरा स्टेशन	धर्मशाला	१
७	कुचामण सिटी	रिया वाले सेठ तेजराजजी मुणोत का मकान	श्वे० ७ दि० अनेक
११	रमीदपुरा	धर्मशाला	+
१४	छिडमाना	मेसरी भवन	३० मा० १०० तं
७	कोलिया	प्याऊ	२ ते
७	केराव	ठाकुर मन्दिर	
७	कटोती	रामदेवजी का मन्दिर	
६	जायल	मेसरियों की बगीची	श्वे ३०० मेसरी
१०॥	फरडोद	जैन स्थानक	११
१०	रोल	प्याऊ	
१२	नागोर	उपाश्रय	३५०

नागोर से ७३ मील बीकानेर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
६	गोगोलाव	जैन उपाश्रय	५०
७।।	अलाय	पचायती नोहरा	४०
८॥	चीलो	स्टेशन पर क्वाटर	
८	नोखामण्डी	जैन उपाश्रय	४०
४	नोखा	पचायती नोहरा	२०
६	पारवो	धर्मशाला	

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
४	सवदान्ता	माहेश्वरी के मकान पर	८ माहेश्वरी
७	मानुम्बा	उपाश्रय	५
५	दुगाडा	पचाकी नोहरा	१५
८	मवीन्ध	हिमराज हंसाजी की धर्मशाला	४
२	मकरो का वाडो	एक भाई के मकान पर	१५
१	कोटडी	जैन स्थानक	१५
६	सेवाडी	सेठ रतनलालजी चुन्नीलालजी के मकान पर	१
५	सांचप	जैन स्थानक	१
५	रामी	सेठ भाईदासजी दूगड के मकान पर	१०
६	करमावास	जैन उपाश्रय	८
३	समदडी	जैन उपाश्रय	१६०
६	मेडुम्बरी	एक भाई के मकान पर	८
३	पारलु	बाबूरमलजी के मकान पर	२
५॥	आंतिया	सामन्तसिंहजी ठाकुर के मकान पर	
६॥	बालोतरा	मन्दिर का उपाश्रय २०११ चौमासा	५

बालोतरा से १२२ मील पाटोदी सादडी

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
६	मेवानगर नाकोड़ा	जैन धर्मशाला	
४	असोल	तपागच्छ का उपाश्रय ते १	१ स्था.
६	बालोतरा	दुलीचन्दजी के मकान पर	१५
६	कुसीप	एक भाई के मकान पर	५
४	गढसिवाना	ढुंढिया का उपाश्रय	१५
८	मोकलसर	उपाश्रय	५०
६	भलावाड़ा	जैन धर्मशाला	५

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
४	प्याऊ	प्याऊ	
६	कुचेरा	उपाश्रय	१००
४	प्याऊ	प्याऊ	
५	खजवाना	उपाश्रय	१५
६	रूण	भेरूजी के स्थान पर	२०
६	नोखा	उपाश्रय	४०
६	हर सोलाव	उपाश्रय	४५
६	रजलाणी	उपाश्रय	२५
४	नारसर	मदिर पर ठहरे	३
४	भोपालगढ	श्री जैन रत्न विद्यालय	४०
६	हीरा देसर	मदिर पर ठहरे	४
५	खिराणी	मंदिर पर ठहरे	२
६	सेवकी	मदिर पर ठहरे	३
६	वईकडो	चपालालजी टाटिया के मकान पर	६
६	जाजिया	मदिर पर ठहरे	२
३	बनाडा	स्टेशन	
६	जोधपुर	सिंहपोल	११००

जोधपुर से ६८ मील बालोतरा

३	महामदिर	जैन उपाश्रय	४०
३	सरदारपुरा	फाकरिया बिल्डिंग	५०
४	बासनी स्टेशन	नीम के पेड़ के नीचे	
६	सालावास	नोहरे में ठहरे	४०
८	लूणी	जैन धर्मशाला	१२

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
४	किसनगढ	जैन धर्मशाला	१००
८	जालोरगढ	उपाश्रय	२०० श्वे.
८	गोदन	एक भाई के मकान पर	२५ श्वे
५	आहोर	जैन धर्मशाला	२५० श्वे
१०	उमेदपुरा	जैन धर्मशाला	१०० श्वे
६	तखतगढ	जैन धर्मशाला	२०० श्वे
३	घलाणा	जैन धर्मशाला	४० श्वे
८	साडेराव	जैन धर्मशाला	५०
७	फालना	श्वे जैन धर्मशाला	२ स्था
१०	मु डारा	उपाश्रय	२००
५	सादड़ी	लोंकाशाह गुरुकुल	३००

सादड़ी से ६५ मील उदयपुर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
७	राणकपुर	जैन धर्मशाला
८	मघा	जैन धर्मशाला
६	सायरा	उपाश्रय में ठहरे
६	कम्बोल	जैन मदिर
१	पदराड़ा	नाथुलालजी के मकान पर
७	त्रिपाल	एक भाई की दुकान पर
३	जशवतगढ़	एक भाई के मकान पर
६	गोगुन्दा	श्वे जैन धर्मशाला
६	भादवीगुडा	इच्छादेवी का मदिर
८	थूर	रतनलालजी कोठारी
५	विद्याभवन	विद्याभवन
२	उदयपुर	पौषधशाला

रतलाम से १२ मील उज्जैन देवास से इन्दौर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
१	स्टेशन	बांसवाड़ा वालों का मकान
६	बांगरोद	अस्पताल
५	रूपखेड़ा	एक भाई का बरामदा
७	बड़ोदा	मन्दिर पर
४	खाचरोद	उपाश्रय
४	चुड़ावन	मन्दिर पर
६	नागदा	धर्मशाला उपाश्रय
४	रुपेटा	जैन मन्दिर
४	बोर खेड़ा	एक भाई के मकान पर
३	मुंडला	एक भाई के मकान पर
५	महिदपुर	उपाश्रय
४॥	मधु	एक के मकान पर
७	कालुहेड़ा	एक भाई के मकान पर
४	पान बिहार	सरकारी कैम्प
८	भैरूगढ़	जैन मन्दिर
२	नयापुरा उज्जैन	उपाश्रय
१॥	नमक मंडी	उपाश्रय
२	मीगांव	सेठ पांचुलालजी का बंगला
४॥	धर्मेसरा	एक भाई के मकान पर
३॥	नरवर	मन्दिर पर
३	पान बन्या	स्कूल
९	देवास	उपाश्रय
७	शिप्रा	अहिल्या सराय

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
४	डुगला	पचायती नोहरा	
६	कानोड	पंचायती नोहरा	
६	बोयड़ा	उपाश्रय की दुकान	
६	बड़ीसादड़ी	पचायती नोहरा	
७	मानपुरा	एक भाई के बरामदे में	
७	छोटीसादड़ी	पंचायती नोहरा	
८	केसुन्दा	ग्राम पचायती तहसील	
५	नीमच छावनी	उपाश्रय	
१॥	नीमच सिटी	उपाश्रय	
४	जमूनियाकला	जैन मदिर	
११	मल्हारगढ	सेठ छगनलालजी दुगड़ के मकान पर	
६	पीपल्या	उपाश्रय	
४	बोतलगज	उपाश्रय	
७	मन्दसोर	ननकूपुरा	
॥	शहर	महावीर भवन	
६	दलौदा स्टेशन	धर्मशाला	
८	कचनारा	उपाश्रय	
५	ढोढर	उपाश्रय	
७	अरणीया	नगले के बरामदे में	
३	जावरा	उपाश्रय	
८	हसनपाल्या	जैनमन्दिर	
५	नामली	उपाश्रय	
६	सेजावता	एक का बरामदा	
४	रतलाम	नीम चौक उपाश्रय	

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
७	मागल्या	त्रिलोकचन्दजी की दुकान पर
३॥	बगला	सुरेन्द्रसिंह का पेड़ के नीचे
३॥	पलासिया	जौहरी सूरजमलजी का बगला
२	इन्दौर	महावीर भवन

इन्दौर से ७८ मील खाचरोद

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
१	राजमोहल्ला	धर्मदास मित्र मण्डल
४	गाधी नगर	नये मकान पर
५॥	हातोद	उपाश्रय पर
६	बीजो	मन्दिर
२।	आमरा	मन्दिर पर
७	देपालपुर	उपाश्रय
४	बगीची	बाबा राघवदासजी
६	गौतमपुरा	उपाश्रय
५	परिजलार	चौतरे पर
७	बडनगर	उपाश्रय
१	स्टेशन	मूलचन्दजी के मकान पर
११	रुनिजा	उपाश्रय
७	पचलाणा	उपाश्रय
२	कमेण	मन्दिर पर
५	मडावदो	उपाश्रय
२॥	दफड़ावदो	मन्दिर पर
२	खाचरोद	उपाश्रय २०१४ चौमासा

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
६	मागदा	उपाश्रय
८॥	मनावर	राम मन्दिर
६॥	बार	नसिया वाली का उपाश्रय
५	पिपल वडा	आनन्द धर्मशाला
६	गुनावद	राम मन्दिर
७	पाडा बिल्लोद	एक ब्राह्मण के घर
६॥	बेटमा	सेठ लक्ष्मीचन्दजी के मकान पर
८	कलारिया	उपाश्रय
६	राव मोहड़ा	धर्मदास मित्र मण्डल
९	इन्दौर	महावीर भवन

इन्दौर से १८४ मील जलगांव

५	कस्तूरबा ग्राम	स्कूल
८	सिमरोल	धर्मशाला
६	बाई	जमना बाई का मकान
८	बलवाड़ा	धर्मशाला
५	धमरिया चौकी	गुजराती ब्राह्मण का मकान
५	बड़वाह	जैन धर्मशाला उपाश्रय
६	मोरटक्का	दिगम्बर जैन धर्मशाला
४	सनावद	गोपी कृष्ण बाहुली धर्मशाला
७	धनगाँव	लक्ष्मीनारायण का मंदिर
५	टोकिया	एक भाई के मकान पर
७	मोखलगांव	मंदिर पर ठहरे
६	देशगांव-मकान	सेठ बलुराम के मकान पर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
३	आकोदड़ा	स्कूल
४	निम्बोद	उपाश्रय
५	पिंगरारो	चुन्नीलालजी का मकान
५	कालु खेडा	उपाश्रय
७	सुखेड़ा	उपाश्रय
५	पिपलोदा	उपाश्रय
५	शेरपुर	मन्दिर के पास उपाश्रय
६	सैलाना	उपाश्रय
४	धामणोद	उपाश्रय
४	पलसोडा	एक भाई की दुकान
६	रतलाम	नीमचौक उपाश्रय

रतलाम से १०६॥ मील धार इन्दौर

७	धराड़	उपाश्रय
४	भारी बड़ावदा	रगलालजी का मकान
४	पिपल खूटा	रुपचन्दजी का मकान
४	वरमावर	उपाश्रय
३	तलगारा	वृद्धिचन्दजी का मकान
४	मुलथान	सेठ हीरालालजी के मकान पर
४	बदनावर	उपाश्रय
४	बखतगढ़	उपाश्रय
५	कोद	उपाश्रय
२	विडवाल	उपाश्रय
५	कानवन	उपाश्रय

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
६	मगरदा	उपाश्रय
८॥	अमझेरा	राम मन्दिर
९॥	धार	बनिया वाडी का उपाश्रय
५	पिपल्या खेड़ा	आनन्द भवनालय
३	गुणावद	राम मन्दिर
७	घाटा बिल्लोद	एक ब्राह्मण के घर
३॥	बेटमा	सेठ बसन्तीलालजी के मकान पर
८	कमारिया	उपाश्रय
५	राज मोहल्ला	धर्मदास मित्र मण्डल
२	इन्दौर	महावीर भवन

इन्दौर से १८४ मील महगांव

५	कस्तूरबा ग्राम	स्कूल
८	सिमरोल	धर्मशाला
६	बाई	जमना बाई का मकान
८	चलवाड़ा	धर्मशाला
५	धमरिया चौकी	पुजारी ब्राह्मण का मकान
५	बड़वाह	जैन धर्मशाला उपाश्रय
३	मोरटक्का	दिगम्बर जैन धर्मशाला
४	सनावद	गोपी कृष्ण शास्त्री धर्मशाला
७	बलगाँव	लक्ष्मीनारायण का मंदिर
५	टोकिया	एक भाई के मकान पर
७	मोजाखेड़ी	मंदिर पर ठहरे
३	खेगाव-मकान	सेठ बाबूराम के मकान पर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
६	खण्डवा	श्वे० जैन मंदिर
६	दूलहार	स्कूल का वरामदा
३	मधाना	स्कूल
६	वोरगाव	सेठ मोतीलालजी मागीलालजी के मकान पर
६॥	देनाला	जैन धर्मशाला
५॥	आशीरगढ	जैन धर्मशाला
७॥	निम्बोला	धर्मशाला
४॥	बुरहानपुर	सागर मन्शन में स्टेशन के निकट
३	बुरहानपुर शहर	एक भाई के घर
७	साहापुर	स्कूल
७	इच्छापुर	हनुमानजी का मंदिर
११	रावलाबाद	जैन उपाश्रय
४	हरताला	उपाश्रय
७	घरणगाव	देवकी भवन
६	मुसावल	सेठ स्वरूपचन्दजी बंब के मकान पर ठहरे
३	साकेगाव	ग्राम पचायत का मकान
७	नसिराबाद	पचायती नोहरा
६	जलगाव	सागर भवन

जलगाव से १०१ मील जालना

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
५	कसुंबे	स्कूल
६	नीरी	राम मदिर
१०	पहूर	धन्नोबाई के मकान पर
६	वाकोद	स्कूल
३॥	फर्दापुर	मील में ठहरे

मील	नाम	ठहरने की जगह
३॥	सेवली मचन्या	मकीन रूम
७	मर्वठ	राम मन्दिर
७॥	गोलेगांव	बीस मेस में ठहरे
११॥	सिल्लोड	स्कूल के बरामदे में

यहां से औरंगाबाद का रास्ता जाता है

मील	नाम	ठहरने की जगह
८	मोफरखन	बालाजी का मंदिर
८॥	केदार खेड़ा	हनुमानजी का मंदिर
३॥	चांपाई पठाण	झाड़ के नीचे
८	पागरी	मंदिर पर ठहरे
४	पिपलगांव	मल्हाररावजी की वाडी
६	जालना	उपाश्रय

जालना से रेल्वे रास्ता ३०६ मील हैदराबाद

मील	नाम	ठहरने की जगह
५	सारवाडी	हनुमान मंदिर
७	वडी	हनुमान मंदिर
८	रामणी	बालाजी का मंदिर
१॥	चोकी	झाड़ के नीचे
७	परतुर	कचेरी के बीच में
१	रायपुर	हनुमान मंदिर
६	सातोना	समाधि स्थल
६	सेलु	रामवाड़ा
६	पिपलगांव की चोकी	झाड़ के नीचे
४	कोसा	हनुमान मंदिर
६	पेडगांव स्टेशन	नीम के झाड़ के नीचे

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
८	परभणी	उपाश्रम आईल मील
७	पींगली	केसरीमलजी रतनलालजी सोनी के मकान
४	मिरखेल	स्टेशन का वरामदा
८	पूरण	उपाश्रय गुजराती का मकान
६	चुटावा	स्टेशन की बरामदा
१३	नादेड़	उपाश्रय
२	चोकी	चौकी पर
७	मुकट	हनुमान मदिर
६	सुदखेड़	स्टेशन पर
१०	गोरठ	साईनाथ का मदिर
२	उमरी	विनोदीराम बालचन्द के कॉटन मील पर
१०	करखेली	स्टेशन पर
८	धर्माबाद	हनुमान मंदिर
६	बासर	स्टेशन पर
६	नवीपेठ	राम मन्दिर
६	निजामाबाद	गोपालदासजी का दाल का कारखाना पर
८	डिचपल्ली	लकड़ी का कारखाना पर
७	गन्नाराम	वकटराव के मकान पर
४	सिरनापल्ली	स्टेशव
६	उपलवाई	स्टेशन
७	कामारेडी	जैन स्कूल
७	जगमपल्ली	कुमटी के घर पर
४	बीकपुर	स्कूल
६	रामायमपेठ	गरणी में ठहरे
६	नारसींगी	धर्मशाला आम के पेड़ के नीचे

मील	गाम	ठहरने की जगह
११	मासाई पेठ	हनुमान मंदिर
४	तुपराम	गरणी के बरामदे में
५	मनोहराबाद	एक भाई के यहाँ
४	कालकिल	हनुमान मंदिर
६	मेरचल	जगन में
८	बोलारम्	उपाश्रय
३	तिरमलगिरी	सरकारी पोलीस बंगला
४	सिकन्दराबाद	उपाश्रय
४	कमिपुरा	गांधी पूनमचन्दजी की जैन धर्मशाला
२	हैदराबाद	कमिरपुरा उपाश्रय
३	समशेरगंज	राजस्थानी पुस्तकालय
२	चारकमान	पुनमचन्दजी गांधी के मकान पर
७	बेगमपेठ	पुनमचन्दजी की कोठी
३	करखाना	मोतीलालजी कोठारी का मकान पर
४	पिकेट	हनुमान मंदिर
३	सिकन्दराबाद	उपाश्रय में चातुर्मास किया १०१२ का

सिकन्दराबाद से १२५ मील रामपुर

५॥	बेगमपेठ	सेठ पुनमचन्दजी गांधी की कोठी
६॥	बेगम बाजार	रामद्वारा
३	गुजराती बाजार	गुजराती स्कूल
३	चार कमान	बड़ै बाजार, ममताज भवन
१	कमीपुर	उपाश्रय
२	समशेरगंज	राजस्थानी पुस्तकालय

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
६	शमशाबाद	कृष्ण मंदिर
८	पालयाकुलि	एक दुकान पर
३	कुतुर	स्कूल
८	सनतनगर	मारुती मंदिर
८	बालानगर	गुडपल्लि श्रीराम के मकान पर
६	राजापुरा	रेड्डिचन्द्र के मकान पर
६	जडतल्ला	रमणलाल छोटेलाल कच्छी की दुकान
१०	महबुब नगर	शिवमंदिर हिन्दी प्रचार सभा
१०	कोहटा कदरा	मंदिर पर
४	देव कदरा	समाधि पर
८	मरकल	शिव मंदिर
६	जक्लेर	स्कूल का बरामदा
८	मकतल	खीमजी नेणजी कच्छी की गरणी
७	मागनूर	स्कूल पर
४	गुमडे वेतुर	मंदिर पर
६	चीकसूगुर	मंदिर पर
७	रायचूर	उपाश्रय
१	राजेन्द्रगंज	एक भाई के मकान पर
१	रायचूर	उपाश्रय
१	रायचूर स्टेशन	डाह्या भाई के मकान पर

रायचूर से २६६ मील बेंगलोर

७	उडगल खानापुर	मंदिर
५	कुड्दति पल्लि	स्कूल
७	तुंगभद्रा	धर्मशाला

मील	नाम	ठहरने की जगह
८	कोमगी	धर्मशाला मील
६	पेरुगुवड	मंदिर
५	हनुमान मंदिर	मंदिर दर्शनीय स्थान
७	मारोनी	गौ धर्मशाला
९	मानापुर	मंदिर
११	मांसुर	हिन्दी प्रेमी एग्युस स्कूल
६	मामपल्ल	मंदिर
३॥	सीपगिरी	मंदिर
६॥	गु तकल	रणछोड वासे के मकान पर
४	कोमकोमला	शिव मंदिर
६	कमापुर	हाई स्कूल
४	रागलपाडु	समाधि पर
८	दरका कोन्दा	डीव मेस पर
२	मुरडुर	स्कूल
६	अन्नापल्लि	धर्मशाला
४	मुरमापुर	नीम के पहाड़ के नीचे
९	गुडल	स्कूल
६	रासमपल्लि	मंदिर स्टेशन पर नीम के नीचे
४	मनतपुर	एक भाई के मकान पर
५॥	रामाप	पचायती बोर्ड का आफिस
६॥	मद्दूर	डाक बंगला
९	मानिकोपल्लि	सरकारी मकान
६॥	हनमन्तिपल्लि	स्कूल
५॥	मर्रेपल्लि	स्टेशन पर
६	गुडुर	महादेव का मंदिर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
४।	हनुमान मन्दिर	मंदिर
४	पेनकुन्डा	पहाडी रास्ता पर
६	सोमदे पल्लि	मंदिर
६॥	तालाब की पाल	झाड़ के नीचे
६॥	हिन्दुपुर	डाक बंगले पर
४।	बसवपल्लि	मंदिर
१२	गोरी बिदनूर	डाक बंगला
८	होडेंभावि	डाक बंगला
५	एकगाम	नीम पिपल के झाड़ के नीचे
११	दोंड बालापुर	एक भाई के नये मकान पर
५॥	मारसदरा	ज्ञानाचार्यजी के वहां
६	यलहंका	धर्मशाला
४	हब्बाल	खेती वाड़ी वाला स्कूल
४	मलेश्वर	सेठ गुलाबचन्दजी के मकान पर
४	चिकपेठ	उपाश्रय

बैंगलोर के बाजारों मे ४४ मील का विहार

३	शूला बाजार	उपाश्रय
२	अलसुर	उपाश्रय
३॥	विमानपुर	जैन मन्दिर
६	काली तुरक	उपाश्रय
॥	मोरथरी	उपाश्रय
२	गन्तरूप	स्कूल
[illegible]	[illegible]	उपाश्रय

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
१॥	प्रोपेट पाखिया फरजन टाउन	स्कूल उपाश्रय
४	मलेश्वर	सेठ गुलाबचन्दजी का मकान
१	श्रीरामपुर	स्कूल
१	मागडीरोड	स्कूल
१	पेलेस गुट हल्लि	स्कूल
५॥	मुदरेडी पालियम्	स्कूल
४	गांधीनगर	गुजराती स्कूल
१	टाउन हॉल	हॉल में
१॥	बसंत पुरी	मकान में
२	मामूल पेठ	स्कूल
॥	बलापेठ रोड	गुजराती स्कूल
२	चामराज पेठ	राम मंदिर

बेंगलोर से भवक पेस गोसा होकर १६१ मील मैसूर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
०	केंगेरी	कमरम् में
४	डाक बंगला	बंगला में
०	बिडदी	स्कूल
२	मलयाबाढी	स्कूल
२	रामनगर	मंदिर के पीछे
०	चिन्नपटना	एक मार्ग के मकान पर
४	सठेडी	मंदिर स्कूल
१	मद्दूर	मंदिर
४	गजलगेरे	स्कूल
८	मंडिया	राम मंदिर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
५	कालेल हल्लि	स्कूल
१०॥	पाण्डुपुरा	राम मंदिर
७॥	चिरकुरली	स्कूल
१२	कृष्णराजपेठ	छत्रम्
८	ककेरी	मंदिर
९	श्रमण वेलगोला	धर्मशाला
६	ककेरी	स्कूल
६	कृष्ण राजपेठ	नदी मंदिर
४	तुर्कहल्लि	स्कूल
८	चिरकुरली	डाक बंगला
८	पाण्डुपुरा स्टेशन	टी बी बंगला
४	श्रीरंगपट्टनम्	टी बी बंगला
७	क्रिश्चियन कालेज	कालेज
२	मैसूर	उपाश्रय जैन धर्मशाला

मैसूर से कन्नवाडी कट्टा होकर ९६ मील बेंगलोर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
१२	वृंदावन	जी टी बंगला
११	पाण्डुपुरा	मंदिर
५॥	वेबरहल्लि	मंदिर
५॥	हनकेरे	कारखाना के बरामदे में
५	मद्दूर	मंदिर
४॥	निरगुट्टा	स्कूल
८॥	चिन्पटनं	मंदिर
७	रामनगर	छत्रम्

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
७॥	मुकवाल	मंदिर
३	तावरीकेरा	स्कूल
५॥	नरसीपुरा	बगला
२॥	कनहट्टी	स्कूल
७	कोलार	छत्रम्
११	बगार पेठ	छत्रम्
८	राबर्टशन पेठ	उपाश्रय
१॥	अन्डरशन पेठ	उपाश्रय
१॥	राबर्टशन पेठ	उपाश्रय
५	वेत मगलम्	डाक बगला
५	सुन्दर पालयम्	पुलिस चौकी
६	वीकोटा	डाक बगला
६	नायकनेर	डाक बगला
६	पेरना पेठ	मोहनलालजी के मकान पर
६	मोरासाहल्ली	स्कूल
५	गुडियातम	स्कूल
६	पसीकुडा	एक भाई के मकान पर
६	विरिंचीपुरार	छत्रम्
८	वेल्लुर	उपाश्रय
८	पुटुवाक	स्कूल
७	अरकाट	गाधी आश्रम
२	रानी पेठ	लेबर युनियन
४	आमूर	स्कूल
५॥	पेरटापुरम	सरकारी मकान पर
५॥	शोलिंगर	छत्रम्
[illegible]	[illegible]	पचायती बोर्ड

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
२	पटालय शूलै	नेमीचन्दजी सेठिया का मकान
२॥	पेरम्बूर	उदयराजजी कोठारी उपाश्रय
२	पटालय शूलै	नेमीचन्दजी सेठिया का मकान
२	साहूकार पेठ	उपाश्रय
२	चिंतोधरी पेठ	प्रार्थना जैन भवन
॥	पोदु पेठ	चपालालजी के नये मकान पर
२	नकशा बाजार	उपाश्रय
४	सैदा पेठ	ताराचन्दजी गेलडा का मकान
२	परम कुडा	विजयराजजी मूथा का मकान
१॥	पलमनतगल	स्कूल
॥	मीनापाकम्	अगरचन्द मानमल जैन कालेज
२।	पल्लावरम्	घीसूलालजी मरलेचा के मकान पर
४	ताम्बरम्	देवीचन्दजी के मकान पर
३	कुर्मपेठ	स्कूल
१॥	पल्लावरम्	घीसूलालजी का मकान
४	परमकुडा	विजयराजजी मूथा का मकान
४	महामलम्	श्वे० स्था० जैन बोर्डिङ्ग
३।	राम पेठ	डाक्टरनो के मकान पर
२	मेलापुर	उपाश्रय
५	ढेडी बाजार (नेहरूबाजार)	उपाश्रय
१॥	रायपुरम्	वृद्धिचन्दजी लालचन्दजी मरलेचा का मकान
१॥	तज्जार पेठ	मोतीलालजी का मकान
१॥	वोशी पेठ	ग्रामीणी के मकान पर
२	साहूकार पेठ	उपाश्रय २०१७ का चौमासा किया।

मद्रास से १७६ मील पांडीचेरी विहार

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
५	मेलापुर	उपाश्रय
६	सकरापु बाजार	उपाश्रय
७	महा बल्लम्	श्वे० स्था० जैन बोर्डिंग
८	परम्बूर	उपाश्रय
८	गु गवालम्म्	बागजी का मकान
७	केसर वाड़ी	उपाश्रय
९	मधनावरम्	एक भाई का मकान
६	महाब्बलम्	श्वे स्था० जैन बोर्डिंग
२	सेवापेठ	उपाश्रय
४	भालम्बूर	किशनराजजी मूथा का मकान
५॥	पल्लावरम्	श्रीमुकनजी का मकान
५॥	ताम्बरम्	नया उपाश्रय
०	गुडवांचेरी	नया मकान
०	सिंग पेरूमाल कोइल	कुलम्
६	चगलपेठ	कुन्दनमलजी का मकान
४	तिमेली	स्कूल
५	तिरुकलीकुण्म	कुलम्
२	महावली पुरम्	"
१	तिरुकली कुलम्	"
०	मधोवरम्	स्कूल
०	करुणगुडी	मन्दिर
२	मधुरान्तकम्	श्री अहोबिल मठ धर्मशाला
१	सात पाक्कम्	स्कूल
६	भचरापाक्कम्	एक भाई की दुकान

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
६	ओगुरु	स्कूल
६	सारम	स्कूल
५	तिंटीवनम्	जैन धर्मशाला
६	ओमेदूर	मन्दिर
६	काटरो मफाकम्	के आर युथ रगम रेड्डिमार का मकान
५	स्कूल	स्कूल
७	पाण्डीचेरी	शातिभाई का मकान

पांडीचेरी से ३१३ मील बेंगलोर सिटी

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
६	विल्लीनूर	मन्दिर
४॥	शूगर मिल्स	मिल का मकान
७॥	वेल वानू	सरकारी गोदाम
६	विल्लुपुरम्	सुभद्रा प्रार्थना भवन
१	पाण्डी बाजार	नथमलजी दुगड़ का मकान
५॥	पट्टागम	एक भाई के मकान पर
८॥	तिरुवेन्तनलूर	मन्दिर
८	सित्तलिंगम	मन्दिर
५॥	तिरुक्कोलूर	भवरलालजी के मकान पर
७॥	तपोवनम्	स्वामी के मकान पर
६	वीरीयनूर	स्कूल
११	तिरुवणमलै	छत्रम्
७	मालावड़ी	एक भाई के मकान पर
८	पिलूर	एक दिगम्बर भाई के मकान पर
८	पोलूर	नई बड़ी बिल्डिङ्ग

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
८।	कसव मवाड़ी	स्कूल
८	मारनी	एक भाई के मकान पर
८।	मोसूर	स्कूल
६।।	मारमठ	गांधी आश्रम
७	पुरत्लाक	स्कूल
८	पेरूर	उपाश्रय
६	वीरपोपुरम्	छत्रम्
६	पश्चिकुप्पा	एक भाई के मकान पर
६।।	गुम्बिनाम	स्कूल
१ ।।	पेरनापेठ	सोहनलालजी के मकान पर
५।।	कोतूर	स्कूल
६।।	मासूर	नये छत्रम् में
११।।	पेरनापेठ	सोहनलालजी कांकरिया
६	नायक मेर	डाक बंगला
९।।	वीकोटा	डाक बंगला
६	मुम्बरपालम्	स्कूल
५	वेद मंगलम्	डाक बंगला
५	रावर्टसन पेठ	उपाश्रय
२	एन्डरसन पेठ	स्कूल
२	रावर्टसन पेठ	उपाश्रय
८	बंगार पेठ	छत्रम्
११	कोलार	छत्रम्
६	नरसापुर	रेस्ट हौस
६	मुग बाल	मन्दिर स्कूल
७।	हौस कोटा	साई मन्दिर

मील	ग्राम	घर
४	पाढपपुर	ब्राह्मण
६	चीनकुली	"
५	दण्ड खेरे	"
७	सीतगट्टा	"
६	श्रवण वेल गोला	दिगम्बर
६	जिन तार	ब्राह्मण
७	चन्दराय पटनम्	"
८॥	कस केरे	"
५	नुग लेही	"
८	लारे हल्ली	"
८	रनमन्दा हल्ली	लिंगायत
४	तीपटुर	१३ जैन घर
८	काने हल्ली	×
८	अलसी केरे	अनेक जैन घर
६	वरुड केरे	×
३	बानावारा	६ घर जैन
८	मढीकट्टा	×
८	कदूर	६ गुजराती
४	बीरूर	६ ओसवाल
७॥	चटन हल्ली	लिंगायत
६॥	तरीकेरे	७ घर ओसवाल
६	कारे हल्ली	×
५	भद्रावती	२० घर जैन
८	कुण्डली केरे	लिंगायत
७	जोलताल	ब्राह्मण

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
७	बेन्ड फील्ड	पुखराजजी के बगले पर
५	सिगल पालिया	प्रेम बाग
४	बगीचा	मोहनलालजी बोहरा का
१	अलसूर	नया उपाश्रय
१	शूला	उपाश्रय
१॥	काली तूर्क	उपाश्रय
१	शिवाजी नगर	उपाश्रय
१	सर्पिंगसरोड़	उपाश्रय
३	गाधी नगर	एक भाई के नये मकान पर
१	चीक पेठ (बैंगलोर सीटी) उपाश्रय २०१८ का चौमासा किया	

बैंगलोर के बाजारों के नाम ३१॥ मील

२	शीवाजी नगर	उपाश्रय
२	प्रापट पालिया	कोरपरेशन का नया मकान
१	सिर्पिंग्स रोड	उपाश्रय
३	गाँधी नगर	एक भाई के नये मकान पर
२	मलेश्वर	गुलाबचन्दजी के मकान पर
४	शूले	उपाश्रय
२	कुन्दन बगला	कुन्दनमलजी पुखराजजी लूंकड का
४	अलसूर	जबरीलालजी मूथा का उपाश्रय
१	शूले	उपाश्रय
३	चीक पेठ	उपाश्रय
२॥	मावड़ी रोड़	बापूजी विद्यार्थी तिलय
५	यशवन्तपुर	एक भाई के मकान पर

मील	ग्राम	घर
५	पाडयपुर	ब्राह्मण
६	चीनकुली	”
५	दण्ड खेरे	”
७	सीतगट्टा	”
६	श्रवण बेल गोला	दिगम्बर
६	जिन तार	ब्राह्मण
७	चन्दराय पटनम्	”
८॥	कस केरे	”
५	नुग लेहि	”
८	लारे हल्ली	”
८	रनमन्दा हल्ली	लिंगायत
४	तीपटुर	१३ जैन घर
८	काने हल्ली	×
८	अलसी केरे	अनेक जैन घर
६	घण्ड केरे	×
३	बानाश्वारा	१ घर जैन
८	मडीकट्टा	×
८	कदूर	६ गुजराती
४	बीरूर	६ ओसवाल
७॥	चटन हल्ली	लिंगायत
६॥	तरीकेरे	७ घर ओसवाल
६	कारे हल्ली	×
५	भद्रावती	३० घर जैन
८	कुण्डली केर	लिंगायत
७	जोलताल	ब्राह्मण

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
६	वेलूर	मठ
६	कित्तूर	लिगायत
६॥	बस स्टेन्ड	बस स्टेन्ड
१०॥	एम० के० हुबली	डाक बगला
५	बागेवाडी	स्कूल
३	कोलीकोप	बगला
३	हलगा	दिगम्बर भाई का स्थान
४॥	बेलगाव	हरिलाल केशवजी का स्थान
७	होनगा	मन्दिर
६।	सुतपट्टी	डाक बगला
७	खानापुर	एक भाई के यहा
७	शखेश्वर	बस स्टेन्ड के पास
६	कणगल	एक भाई के यहा
८	निपाणी	दीपचन्द भाई के यहा
५॥	सोडलगा	स्कूल
७॥	कागल	लीला बहन के यहा
६	गोकुल शेरगाव	स्कूल
६	कोल्हापुर	उपाश्रय

कोल्हापुर से २१० मील पुना

मील	गाव	ठहरने का स्थान	जैन घर
६॥	हातोंडी	स्कूल	सारा गाव दिगम्बर है
३	चौकाग	दि० मन्दिर	दिगम्बर है
१०	इचलकरजी	शातिलालजी मुथा नेहरू रोड	१४ घर स्था० है

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
५॥	मलपे	स्कूल	०
६॥	लोणद	उपाश्रय	७ स्था० १२ दे० है
५	निरा	युगल स्टोर्स	४ जैन के है
७	वाल्हे	नाथ मन्दिर	३ जैन के है
७	जेजोरी	चावड़ी	०
५	शीवरी	मेमाई मन्दिर	१ जैन है
५	सासवड	माली समाज गृह	७ स्था०
८	वडकी	स्कूल	१ गु० का है
६	हडपसर	विट्ठल मन्दिर	४ जैन है
५	पुना	नाना पेठ उपाश्रय	अनेक घर

पूना से ७३॥ मील पनवेल

५	खिडकी	जैन धर्मशाला'	६स्था ४ते. ४० दे है
८	चिंचवड	नये उपाश्रय में	३५ स्था.
६	देहुरोड	मन्दिर	६ स्था २ ते २ दे है
७	वडगाव	उपाश्रय	१५ स्था
६	कामशेट	उपाश्रय	१३ स्था
५॥	कार्ले	उपाश्रय	५ जैन
५	लोणावला	उपाश्रय	३० स्था.
८	खापोली	जैन धर्मशाला	१ स्था ३० दे है
५	खालापुर	जैन धर्मशाला	१ महेश्वरी भक्ति वाला है
६	चौक	जैन मन्दिर	१५दे के है
			०
			२० स्था २० दे के है

पनवेल से ३० मील बम्बई

ग्राम	ठहरने की जगह
शांति सदन	रतनचन्दजी का बंगला
कसुडा	एक भाई का मकान
बंगला	सेठ कस्तुर भाई लालभाई
मुम्ब्रा	मोरारजी का ऊपर का बंगला
थाना	उपाश्रय
मांडुप	उपाश्रय
घाटकोपर	उपाश्रय

बम्बई के बाजारों में ठहरने की जगह

पिंजरापोल	उपाश्रय
कुर्ला	उपाश्रय
माटुंगा	उपाश्रय
शीव	उपाश्रय
दादर	उपाश्रय
चीचपोकली	उपाश्रय
बांद्रावाडी	उपाश्रय
कोट	उपाश्रय
बांद्रावाडी	उपाश्रय
बोरीवली	उपाश्रय
मलाड	उपाश्रय
अंधेरी	उपाश्रय

– पता –

१ ब्रजलालजी शाह एण्ड कपनी मु जय सिंगपुर जिला कोल्हापुर एस रेल्वे

२ सेठ ख्यालीरामजी इन्द्रचन्दजी वरडिया मु जयसिंगपुर जिला कोल्हापुर

३ सेठ नरोत्तमदासजी नेमीचन्द शाह ठी वखार भाग मु सागली

४ रमणीकलालजी हरजीवनदासजी शाह C/o अरुण स्टोर्स डी मेनरोड मु सागली

५ सेठ रतीलालजी विट्ठलदासजी गोसलिया मु माधवनगर जिला कोल्हापुर

६ दुगडुमलजी धनराजजी बोथरा ठी गुरुवार पेठ मु तासगाव जिला-सागली

७ सेठ कालीदासजी भाईचन्दजी पेट्रोल पंप ठी पोईनाका मु सातारा

८ मेसर्स मोखमदासजी हजारीमलजी मुथा बैंकर्समरचेन्ट भवानी पेठ मु सातारा

९ सेठ नेमीचन्दजी नरसिंहदासजी लुणावत ठी भवानी पेठ मु सातारा

१० शाह जेसिंगभाईजी नागरदासजी जैन मु लोणद जिला-सातारा

११ सेठ बालचन्दजी जसराजजी पुनमिया १२३५ रवीवार पेठ मु पूना २

१२ सेठ मिश्रीमलजी सोभागमलजी लोढा मु खिड़की जिला पूना

१३ सेठ झूमरमलजी जुगराजजी लुणावत मु चिंचवड जिला पूना

१४ सेठ मुलतानमलजी बोरीदासजी सचेती मु चिंचवड जिला-पूना

१५ सेठ अमृगाजजी लालचन्दजी बलदोरा देहुरोड जिला- पूना

१६ सेठ माणिकचन्दजी राजमलजी बाफना मु वडगाव जिला पूना

१७ सेठ बादरमलजी माणकचन्दजी मु कामसेट जिला-पूना

१८ सेठ शांतिलालजी हसराजजी लुणावत मु लोणावला जिला पूना

१९ सेठ रतनचन्दजी भीखमदासजी बांठिया मु पनवेल, जिला कुलाबा

• • •

मुनि विहार

तपस्वी मुनि श्री लाभचन्दजी म०

लीलुआ

ता० ३ १२ ५५

आज हम लोग ७ मुनि* चातुर्मास समाप्त करके कलकत्ता से विहार कर रहे हैं। मुनियों को चातुर्मास का समय किसी एक ही शहर में व्यतीत करना पड़ता है। आज जैन मुनि राजस्थान मध्यप्रदेश पंजाब गुजरात सौराष्ट्र आदि ऐसे प्रान्तों में ही विचरण करते हैं, जहां धर्मानुयायियों की संख्या काफी है। इन प्रान्तों को छोड़कर कलकत्ता तथा इसी तरह के अन्य सुदूर प्रान्तों में साधु साध्वियों का आगमन पहले तो करीब करीब नहीं ही था। अब भी बहुत कम है। परन्तु हम ७ मुनियों ने इतना लम्बा रास्ता पार करके यहां आने का साहस किया। यहां सन् १९५५ का चातुर्मास बहुत सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। ऐसा अनुभव होता है कि यदि हम जैन मुनि इस व्यापक दृष्टि से काम करें तो यह बंगाल बिहार, उड़ीसा आदि का क्षेत्र हमारे लिए बहुत सुन्दर कार्य-क्षेत्र सिद्ध होगा।

आज प्रातःकाल कलकत्ता से जब हम रवाना हुए, तो हमें विदा करने के लिए हजारों व्यक्ति एकत्रित हो गये थे। यह स्वाभाविक भी था। कलकत्ता भारत की व्यापारिक राजधानी है। इसलिए भिन्न भिन्न प्रान्तों से हजारों की संख्या में जैन धर्मानुयायी लोग यहां

---

* १ मुनि श्री प्रतापमलजी २ मुनि श्री हीरालालजी ३ मुनि श्री दीपचन्दजी ४ मुनि श्री बसन्तलालजी ५ मुनि श्री राजेन्द्र मुनिजी ६ रमेशमुनिजी ७. स्वयं लेखक।

व्यापार के निमित्त आये हुए हैं। खास तौर से गुजरात तथा राजस्थान के जैन-भाई बहुत बड़ी सख्या में यहां हैं। सभी ने मुनियों को भरे हुए मन से विदा किया।

कलकत्ता शहर से चलकर हम लोग चार माइल पर स्थित कलकत्ता के ही उपनगर लीलुआ में आकर रामपुरिया गार्डन में रुके हैं। चारों ओर कलकत्ता का श्रावक-समाज घिरा है। सब की आखों में वियोग का यदि कष्ट है तो पुनरागमन की आशा भी है।

बर्दवान

ता० ११-१२-५५ :

हम बगाल की शस्य-श्यामल भूमि को पार करते हुए निरंतर आगे बढ़ रहे हैं। कभी ८ मील कभी १० मील। कभी इससे भी ज्यादा। किसी भी प्रदेश या स्थान का पूरा अध्ययन करना हो तो पाद-विहार से ज्यादा अच्छा और कोई माध्यम नहीं हो सकता। छोटे-छोटे गावों में जाना, नदी, नाले, पर्वत पहाड़, सबको पार करते हुए ग्राम-जीवन का दर्शन करना, पद-यात्रा में ही सभव है। हम देखते हैं कि किस प्रकार किसान सवेरे से शाम तक कड़ी मेहनत करके देश के लिए अन्न पैदा करते हैं, पर वे स्वयं गरीब तथा असहाय के असहाय बने रहते हैं। उनके पास हरे-भरे मन-मोहक खेत हैं, पर उनके बाल-बच्चों का भविष्य तो सूखा का-सूखा है। स्वय उनकी किस्मत भी हरी-भरी नहीं।

खास तौर से यह बंगाल देश तो बहुत ही गरीब है। यहा के किसानों तथा खेतीहर मजदूरों के चहरे पर न तेज है, न उत्साह है और न स्वतत्रता की अनुभूति है। जिस बंगाल में रवीन्द्रनाथ जैसे महान् लेखक हुए, बंकिमचन्द्र तथा शरद्चन्द्र जैसे महान् उपन्यासकार

हुए, जगदीशचन्द्र बसु जैसे महान वैज्ञानिक हुए, सुभाषचन्द्र बोस जैसे महान् देश सेवक हुए, चैतन्य महाप्रभु रामकृष्ण परम हंस और अरविन्द घोष जैसे महान् आध्यात्मिक पुरुष हुए हम बंगाल की आम जनता का जीवन कितना शोषित पीड़ित और बेसहारा है यह पाद विहार करते हुए अच्छी तरह से अनुभव हो जाता है।

कलकत्ता से चलने के बाद श्री रामपुर सेवड़ाफुली चन्द्रनगर मगरा पहुआ मैमारी शक्तिगढ़ आदि गांवों में रुकते हुए बंगाल के सुप्रसिद्ध नगर वर्धमान पहुंचे हैं। पहले बिहार बंगाल उड़ीसा क्षेत्र जैन धर्म के केन्द्र रहे हैं। इस शहर का नाम श्रमण भगवान वर्धमान के नाम से पड़ा है।

हम सातों मुनि यहाँ से तीन मार्गों में बंटकर तीन दिशाओं में रवाना होने वाले हैं। मुनि श्री हीरालालजी म. झरिया की ओर मुनि श्री प्रतापमलजी म. सैंथिया की ओर तथा हमने रानीगंज की ओर विहार किया।

दुर्गापुर

ता० १८ १२ ५५ :

आज हम हिन्दुस्तान के नये तीर्थ दुर्गापुर में हैं। सदियों से गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ भारत अब आजाद है और स्वतन्त्रतापूर्वक अपना नव निर्माण कर रहा है। जगह जगह नये नये उद्योग खड़े हो रहे हैं। नये नये कारखाने खुल रहे हैं। बिजली का उत्पादन हो रहा है। बांध बन रहे हैं। नहरें निकल रही हैं। इस प्रकार देश अपनी तरक्की के लिए संघर्ष कर रहा है। इस

प्रकार के नव-निर्माण के स्थानों को भारत के प्रधान मन्त्री जवाहरलाल नेहरू ने हिन्दुस्तान के 'नये तीर्थ" बताया है। दुर्गापुर भी ऐसा ही एक तीर्थ है। यहा पर एक बहुत बड़ा बाध बनाया गया है। इस बाध के निर्माण पर ७ करोड रुपये खर्च हुए हैं। अपने आप खुलने तथा बन्द होने वाले ३४ द्वार इस बाध की अपनी विशेषता है। अपार जलराशि देखकर शास्त्रों में वर्णित पद्मद्रह का विवरण आखों के सामने आ जाता है। उत्ताल प्रवाह से बहने वाली दो नहरें उत्तर एवं दक्षिण की तरफ जाती हैं। उत्तर की तरफ प्रवहमान नहर भारत की पवित्र सलिला गगा नदी मे जाकर मिल जाती है। इससे इस नहर की उपयोगिता न केवल सिंचाई के लिए है बल्कि जलयान के आवागमन के लिए भी हो जाती है।

दोनों किनारों पर बने हुए भव्य उपवन इस स्थान की शोभा में चार चाद लगा देते हैं। इस तरह के अनेक बाध भारत में बन रहे हैं। आर्थिक तथा भौतिक विकास की ओर तो पूरा ध्यान दिया जा रहा है पर आध्यात्मिक क्षेत्र आजादी के बाद भी उपेक्षित-सा ही पड़ा है। जब तक समाज का आध्यात्मिक स्तर उन्नत नहीं होगा, तब तक ये भौतिक उन्नतिया भी व्यर्थ ही साबित होंगी। वास्तव में स्वतन्त्रता तभी चिरस्थाई होगी जब हमारे समाज में मानवीय सद्गुणों का उत्तरोत्तर विकास हुगा। यह बहुत दर्दनाक बात है कि आजादी के बाद दुर्गापुर जैसे नये तीर्थों के रूप में भौतिक उन्नति ज्यों ज्यों हो रही है त्यों त्यों ही देश में स्वार्थ लिप्सा, भोग लिप्सा, राज्य लिप्सा तथा भ्रष्टाचार बढ़ रहा है।

वर्द्धमान से दुर्गापुर के बीच हमारे पाच पड़ाव हुए। फगुपुरा, गलसी, बुद बुद, पानागढ़ तथा खरासोल। सभी गावों में गरीबी का गहरा साम्राज्य है। फिर भी सभी जगह साधुओं के प्रति असीम आदर दीख पड़ता है। भारत आध्यात्मिक देश है इसलिए हर

परिस्थिति में यहां के लोग आध्यात्मिक मार्ग के प्रति तथा उस मार्ग पर चलने वालों के प्रति पूरी श्रद्धा रखते हैं।

आसन सोल

ता० २६–१२–५५ :

हमारा मुनि–जीवन वास्तव में एक तपो भूमि है और नित नवीन अनुभवों को प्राप्त करने का अद्भुत साधन भी है। कहीं एक जगह नहीं रहना। नित्य चलते जाना। यह कितना सुन्दर है। जैसे नदी का प्रवाह नहीं रुकता उसी तरह मुनियों की यात्रा नहीं रुकती। चरैवेति! चरैवेति!! नित्य नया रास्ता नित्य नया गांव नित्य नया मकान नित्य नये लोग नित्य नया पानी। यह भी कितने आनन्द का विषय है। इन सब परिवर्तनों में भी मुनि को समता–वृत्ति रखनी होती है। कभी अनुकूलता हो तब भी आसक्त न होना और कभी प्रतिकूलता हो तब भी दुखी न होना, यही मुनि जीवन की परमोत्कट साधना है। इस साधना के बल पर ही मुनि अपने जीवन के चरमोत्कर्ष तक पहुँच सकता है।

> लाभा लाभे सुहे दुखे जीविए मरणे तहा ।
> समो निन्दा पसंसासु तहा माणाव माणओ ॥

सूत्र कृ० १६-९१ गाथा

कभी अधिक सम्मान मिलता है कभी अपमान का जहर भी पीना पड़ता है। लेकिन मानापमान की समय परिस्थितियों में समता रखना ही हमारा व्रत है। हम आसन सोल पहुँचे तो हमारा भव्य स्वागत हुआ। कुछ सज्जन कलकत्ता से भी आये। कुछ दूसरे स्थानों के भी आये। स्थानीय लोग भी काफी संख्या में थे।

यहा प्रवचन में मैंने लोगों को जीवन में अध्यात्मवाद को प्रश्रय देने की प्रेरणा देते हुए कहा कि "आज विज्ञान का युग है। विज्ञान ने मनुष्य के लिए अत्यन्त सुख-सुविधा के साधन जुटा दिये है। रेल, मोटर, हवाई जहाज आदि के आविष्कार से यातायात की सुविधाएं खूब बढ गई हैं। रहने के लिए एयर कण्डी सन्ड भवन उपलब्ध हैं। खाने के लिए वैज्ञानिक साधनों से बिना हाथ के स्पर्श के तैयार किया हुआ और रेफ्रीजेटर में सुरक्षित भोजन मिलता है। तार, टेलीफोन और टेलीविजन के माध्यम से सारा संसार बहुत निकट आ गया है। और भी बहुत प्रकार के आविष्कार हुए हैं। परन्तु इन सब आविष्कारों, तथा भौतिक सुख-सुविधाओं की चका-चौंध में आध्यात्मिक जीवन को खोखला नहीं बनने देना है। आज विज्ञान में अध्यात्म की पुट नहीं है इसीलिए अणु-शक्ति के आविष्कार से सारा संसार भयभीत हो उठा है। ऐसे बमों का आविष्कार हो चुका है, जिनके विस्फोट से क्षण भर में यह संसार, उसका इतिहास, साहित्य, संस्कृति और कला का विनाश हो सकता है इसी-लिए मेरी यह निश्चित मान्यता है कि विज्ञान की इस बढ़ती हुई भौतिक प्रवृत्ति पर अध्यात्मवाद का अंकुश होना चाहिए। अन्यथा जैसे बिना अंकुश के मदोन्मत्त हाथी खतरनाक साबित होता है, बिना लगाम के घोड़ा खतरनाक हो जाता है, वैसे ही यह विज्ञान भी समाज के लिए अभिशाप स्वरूप ही सिद्ध होगा।"

फरीदपुर, मोहनपुर, करजोड़ा रानीगंज और सादग्राम इस तरह दुर्गापुर से आसन सोल के बीच में हमारे पांच पड़ाव हुए। हम यहां २४-१२-५५ को ही पहुँच गये थे।

आज यहां पर बंगाल प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन का तीसरा अधिवेशन हो रहा था। सम्मेलन के आयोजकों का आग्रह भरा

निवेदन था कि हम भी इस सम्मेलन में उपस्थित रहें और अपने विचार प्रगट करें। इसलिए मैंने सम्मेलन के मंच से अपने विचार जनता के सामने रखे। मारवाड़ी जाति ने देश की व्यापारिक समृद्धि में अपना उल्लेखनीय योग दान दिया है। परन्तु दुर्भाग्य से आज मारवाड़ी समाज में अनेक सामाजिक रूढ़ियों तथा कुप्रथाओं ने अपना डेरा जमा लिया है। इसलिए अब बदले हुए जमाने की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए इन कुप्रथाओं को समाप्त करके नये ढंग से अपना विकास करने की आवश्यकता है। जब मारवाड़ी समाज युग के साथ कदम से कदम मिलाकर चलेगा तभी वह एक प्रगतिशील समाज बन सकता है। अन्यथा युग आगे बढ़ जायगा और यह जाति पिछड़ी की पिछड़ी रह जायगी।" मेरे कहने का यही सार था क्योंकि गोरक्षा का प्रश्न उस समय विचारार्थ सामने था और गोरक्षा के सम्बन्ध में एक प्रस्ताव भी उपस्थित था इसलिए मैंने कहा कि—

भारत एक कृषि प्रधान देश है और यहाँ की कृषि बैलों पर आधारित है, इसलिए अर्थ-शास्त्र की दृष्टि से भी गोरक्षा का प्रश्न बहुत महत्त्व का है। वैसे गाय भारतीय इतिहास में अपना सांस्कृतिक तथा भावनात्मक वैशिष्ट्य तो रखती ही है। जैन-शास्त्रों में जिन विशिष्ट श्रावकों का वर्णन आता है वे गाय का पालन करते थे यह भी शास्त्रों में अनेक स्थानों पर वर्णित है। इसलिए भारतीय जन-मानस की उपेक्षा नहीं की जा सकती और गो-रक्षा के सवाल को टाला नहीं जा सकता।

न्यामतपुर

ता० १-१-५६ :

आज वर्ष का प्रथम दिन है। १९५५ का साल समाप्त हुआ और नूतन वर्ष हमारा अभिनंदन कर रहा है। यह काल-चक्र निरतर चलता ही रहता है। कभी भी रुकता नहीं। दिन बीतते है, रातें बीतती हैं, सप्ताह पक्ष और मास बीतते हैं उसी तरह वर्ष और युग बीत जाते हैं। जो काल बीत जाता है, वह वापस लौट कर नहीं आता।

जाजा वच्चई रयणी न सा पडि निअत्तई।
अहम्म कुण माणस्स, अफला जति राइओ॥

उ अ १४-गाथा २५

जाजा वच्चई रयणी न सा पडिनिअत्तई।
धम्मच कुण माणस्स सफला जति राइओ॥

उ अ १४-गाथा ˉ५

अर्थात जो रात्रि बीत जाती है, वह पुन लौटकर नहीं आती। इसलिए जिसकी रात्रि अधर्म में गुजरती है उसकी जिन्दगी असफल हो जाती है, और जिसकी रात्रि धर्म की उपासना करते हुए गुजरती है, उसकी रात्रि सफल होती है। किन्तु मानव कभी भी इस बात पर विचार नहीं करता। खेल कूद में वह अपना बचपन व्यतीत कर देता है, भोग-विलास में अपना यौवन समाप्त कर देता है, और बुढ़ापे में उस समय पछताता है, जब इन्द्रिया क्षीण हो जाती हैं। धर्म करने का सामर्थ्य नहीं रहता। इसलिए यह नव-वर्ष का प्रथम दिन हमें इस बात की याद दिलाता है कि समय बीतता जारहा है। उसे हम पकड़ नहीं सकते पर उसका सदुपयोग करना तो मानव के हाथ में है।

आसन सोल से चलने के बाद हम सीरसा रोड में रुके और बर्दमपुर में रुके। बर्दमपुर में भी धर्मजीभाई सुधक साधक हैं जिनकी धार्मिक श्रद्धा से मन पर सात्विक प्रभाव पड़ता है। बर्दमपुर से हम श्यामपुर आ गये। यह एक छोटी जगह है पर मन में वैचा-रिक प्रेरणा उत्पन्न करने वाला स्थान है।

चितरंजन

ता० ३-१-५६

श्यामपुर से १० मील चलकर हम यहाँ आये हैं। यहाँ रेल इंजिन का एक बड़ा कारखाना है।

यातायात के साधन दिन प्रतिदिन विकसित होते जाते हैं। विज्ञान ने तेज रफ्तार वाले अनेक साधनों का आविष्कार करके सारी दुनिया को निकट ला दिया है। खासतौर से यूरप अमेरिका रूस आदि देशों ने इस प्रतियोगिता में विशिष्ट योगदान दिया है। सारी दुनिया को ये देश रेल का मोटर का विमान का साइकिल का तथा अन्य यातायात के साधनों का सामान भेजते हैं। पर अब धीरे धीरे एशिया और अफ्रीका के देश भी आजाद हो रहे हैं और अपने देश में ही इन साधनों का विकास कर रहे हैं। भारत में भी अब रेल्वे के इंजिन तथा डिब्बे बनने लगे हैं। चितरंजन भारतीय रेलों के विकास में अपना महत्त्व का योग दे रहा है। ४० प्रतिशत मशीनें और इंजिन की बोइलर का निर्माण यहाँ होता है। इस प्रकार यह कारखाना देश में अपने ढंग का अकेला है।

पर हम तो पदयात्री ठहरे! सहज स्वभाव ही मन में ऐसा विचार उठने लगे कि इलेक्ट्रोनिक और राकेट के इस युग में प्रवृत्ति

मानव स्पुतनिक में बैठकर चन्द्रमा की यात्रा करने का सपना देख रहा है, ये साधु लोग पैदल क्यों चलते हैं ? इतना समय नष्ट क्यों करते हैं। पर उन्हें इस पाद-विहार का आनंद तथा उपयोगिता का भान नहीं है। पाद-विहार के समय प्रकृति के साथ सीधा सपर्क आता है। खुली हवा, खुला प्रकाश, खुली धूप, और खुली जल-वायु के सान्निध्य में हम ऐसा ही अनुभव करते हैं, मानो हम सृष्टि की गोद में हैं। इसके अलावा कोटि कोटि ग्रामीण जनता से संपर्क करने का भी यह श्रेष्ठतम साधन है। इसलिए इस राकेट युग में जितना महत्व हवाई-यात्रा का है, उससे कहीं अधिक महत्व पद-यात्रा का है। चितरंजन में रेलवे इंजिन का कारखाना देखते समय हमारे साथ करीब ३० व्यक्ति थे। उनके साथ इस प्रकार का विचार-विमर्श चलता रहा।

यहां पर एक और महत्वपूर्ण कारखाना देखा। अंडर ग्राउंड मे बिछाने के लिए टेलीफोन का तार यहां पर तैयार किया जाता है। तार पर इतना मजबूत कपड़ा चढ़ाया जाता है कि वह न तो सड़े न पानी से खराब हो और न जमीन में लंबे समय तक रहने पर भी क्षतिग्रस्त हो। टेलीफोन का आविष्कार सचमुच एक ऐसा आविष्कार है जो मानवीय वैज्ञानिकता का अनोखा परिचय देता है। अब तो टेलिविजन का भी अवतरण हो चुका है। तार के अन्दर मानवीय वाणी और मानव का चित्र समाहित हो जाय और यह जड़ तार दूसरी ओर ठीक तरह प्रतिबिम्बित होता रहे, यह वास्तव में आश्चर्य की बात है। अब तो यह चीज बहुत साधारण हो गई है, पर जब इसका आविष्कार हुआ होगा, तब तो यह चमत्कार ही रहा होगा।

मैथून

ता० ४-१-५६ :

चित्तरंजन से ९ मील पर यह एक और मध्य स्थान है। यहां पर भी १८ करोड़ रुपये लगाकर एक बहुत बड़ा बाँध बना है। इस यात्रा में सबसे पहले तो दुर्गापुर का बाँध आया था और अब दूसरा मैथून-बाँध है। यहां पर भू-गर्भ में एक पावर हाउस संसार में अपने ढंग का अकेला होगा।

झरिया

ता० ६-१-५६ :

मैथून से बराकर, बरवा, गोविन्दपुर तथा धनबाद होते हुए आज हम झरिया पहुँचे। झरिया तथा आसपास का यह सारा क्षेत्र कोयलाखानी-क्षेत्र है। यहाँ से लाखों टन कोयला सारे देश को जाता है। यह अच्छा कोयला यहाँ भी जलता है, पीछे सोने को पसीज कर जाता है। आज औद्योगिक-युग में कोयले का कितना महत्व बढ़ गया है। गाँवों का यह देश अब शहरों की ओर प्रस्थान कर रहा है और इस केन्द्रीकरण का यह परिणाम है कि शहरों के लोग कमी से मोहताज नहीं रह सकते। इस तरह कुछ विशिष्ट स्थानों पर, जहाँ कोयला पैदा होता है, सारे देश को निर्भर रहना पड़ता है। औद्योगिक कारखानों के लिए तथा घरेलू उपयोग के लिए जब किसी कारणवश देश के एक कोने से दूसरे कोने तक कोयला नहीं पहुँच पाता तब सब जगह कोयला महँगा हो जाता है और हाहाकार होने लगता है। पुराने छोटे छोटे घरेलू उद्योग-धंधे विकेन्द्रित ढंग से चलते थे इसलिए उन उद्योगों पर कोई संकट नहीं आता था।

इसी प्रकार जगल की सर्व-सुलभ लकडी से भोजन पकता था, इसलिए उसकी भी कोई समस्या नहीं थी।

खैर यह झरिया धनबाद-कतरास-क्षेत्र, कोयले का खजाना है और व्यापार के निमित्त राजस्थान तथा विशेष रूप से गुजरात के व्यापारी यहा पर बसे हुए हैं। इनमे जैन-श्रावक भी काफी सख्या मे हैं।

झरिया मे पूज्य मुनिश्री प्रतापमलजी म० और राजेन्द्र मुनि जी महाराज से भेंट हुई। झरिया हमारे लिए दिशा-निर्णय का स्थान है। आगे किस ओर प्रस्थान किया जाय ? इसका निर्णय यहा पर करना है। काफी विचार-विमर्श हुआ। श्री संघ तो स्वाभाविक रूप से यह चाहता ही था कि हम एक वर्ष इसी क्षेत्र में विचरण करे, साथ ही मुनिश्री प्रतापमलजी म० ने भी यह परामर्श दिया कि हम सातों मुनि यकायक यह पूर्व-भारत का क्षेत्र छोडकर चले जाय, यह ठीक नहीं होगा, इसलिए इस वर्ष इधर ही रहना श्रेयस्कर है। साथ ही हमारे साथी मुनि श्री बसतीलालजी म० का स्वास्थ्य भी बहुत लंबे प्रवास के लिए अनुकूल नहीं था। इसलिए सर्व-सम्मति से इसी निर्णय पर पहुँचे कि इस वर्ष इसी क्षेत्र में विहरण करना है।

अब हम लबा प्रवास चालू न करके यहीं आस पास के गांवों में घूमने के लिए प्रयाण करेंगे। इस ओर जो जैन-समुदाय है, उसे साधुओं का सपर्क क्वचित् ही उपलब्ध होता है, इसलिए यहा घूमना आवश्यक भी हो गया है।

कतरास गढ

ता १-२-५९ :

हम इस बीच मागा बलिहारी कोलियरी करकेन्द बरारी कोलियरी आदि स्थानों में भ्रमण करते रहे। इन क्षेत्रों में कलकत्ता अहमदाबाद राजस्थान आदि से भी दर्शनार्थी बराबर आते रहे। जगह जगह हमें नित नया आनन्द और उल्लास का वातावरण मिलता था। प्रायः सर्वत्र रात्रि-प्रवचन सत्संग विचार-विमर्श और छोटी-बड़ी सभाओं का आयोजन होता था। कुसंस्कारवश गरीबों ग्रामीणों और छोटी जाति के लोगों में भी बहुत से दुर्गुण घर कर गए हैं। जैसे कि शराब तो प्राय हर गांव में अपना अड्डा जमाये हुए है। हालांकि हम मुनि अपनी आत्म साधना के पथ पर ही अग्रसर होते हैं फिर भी जिस समाज में हम रहते हैं उस समाज की क्या दशा है इसका विचार करना भी हमारा कर्त्तव्य है। शराब एक नशीली उत्तेजक और मादक चीज है। यह ध्यान देहात को जाग जनता तक पहुँचाना हमारे पाद-विहार का खास मिशन है। हम जहां भी जाते हैं, वहां लोगों को यह समझाते हैं कि शराब से समाज में सात्विकता का विनाश होता है। और तामसिक वृत्तियां बढ़ती हैं। फलस्वरूप मुनियों के उपदेश से लोग प्रभावित होते हैं और शराब का परित्याग करते हैं। इसी प्रकार दूसरे दुर्गुणों तथा कुसंस्कारों के लिए हम लोगों को समझाते हैं। सामाजिक जीवन की सात्विक प्रतिष्ठा के लिए यह आवश्यक है कि समाज में अधिक से अधिक सद्गुणों का विकास हो और दुर्गुणों का निरसन हो।

हम अपने पाद-विहार के दौरान में ता० १८-९-५९ को भी यहां पहुँचे थे और तब १९-११ दिन यहां रहकर गये थे। अभी फिर

२ दिन के लिए यहां आये हैं। यह एक छोटा ही, पर सुन्दर नगर है। श्रावक-समुदाय मे भी बहुत उत्साह है एक जैन शाला चलती है जिसमे काफी विद्यार्थी ज्ञानार्जन करते हैं। पिछली बार जब हम आये थे, तब यहा के छात्रों के सामने २, ३ बार व्याख्यान दिया। आज छात्र जीवन उच्छृंखलता की ओर बढ़ा जा रहा है। यह सपूर्ण देश के लिए बहुत दुर्भाग्य की बात है। आज के विद्यार्थी ही कलके राष्ट्र-नायक बनने वाले हैं। कल का व्यापार, शासन, व्यवस्था इत्यादि सब सभालने के लिए हमें अपने विद्यार्थियों का समुचित पोषण तथा विकास करना होगा। विद्यार्थियों की जो हीन अवस्था है, उसके लिए ज्यादा तो आज की शिक्षा-पद्धति जिम्मेदार है। आजादी प्राप्त कर लेने के बाद भी शिक्षा पद्धति गुलाम भारत की ही चल रही है, तब भला विद्यार्थियों में स्वातत्र्य शक्ति का तथा चेतना का उदय कहा से हो? यदि विद्यार्थियों के भविष्य को सुरक्षित करना है तो तुरंत शिक्षा पद्धति में सुधार करना चाहिए और आध्यात्मिक स्तर को बुनियाद में रखकर शिक्षा पद्धति का निर्माण करना चाहिए।

लाल बाजार

ता० १६–३–५६ :

इस क्षेत्र में एक जाति है—'सराक'। यह शब्द 'श्रावक' से बना है। इस जाति के रीति रिवाज देखने से यह स्पष्ट प्रमाणित होता है कि किसी युग में ये लोग जैन श्रावक थे। पर साधु-संपर्क के अभाव में धीरे धीरे इनके सस्कार बदल गये और आज इन्हें इस बात का भान भी नहीं है कि ये जैन धर्म को मानने वाले 'श्रावक' हैं। इस जाति में काम करने की जरूरत है। भूले भटके पथिकों को सन्मार्ग पर लाना कितना बड़ा काम है, इसका अनुमान सहज

ही लगाया जा सकता है। गाँव गाँव में घूमना किस गाँव में कितने 'सराक' हैं, इसका पता लगाना और फिर उनका ठीक तरह से संगठन करके उनमें जैनत्व का संस्कार भरना बहुत आवश्यक है। यदि ऐसा करने में कुछ साधुओं को अपना अच्छी समय लगाना पड़े तो भी लगाना चाहिए। यदि इस जाति का ठीक प्रकार से संगठन हो जाय और इनमें भली-भाँति काम किया जा सके तो निश्चय ही हमें हजारों घर मिलेंगे। इन हजारों घरों के जैन बन जाने से जिस बिहार में आज जैन धर्म को मानने वाले मूल निवासी नगण्य संख्या में ही हैं उस बिहार में तथा बंगाल में भी हजारों जैन धर्मावलम्बी हो जायेंगे। इस प्रकार इस क्षेत्र में फिर से धर्मोदय हो सकेगा।

करकेन मनपाल गोविन्दपुर, बड़ा स्यामा धोबिरपुरी वगैरह आदि गांवों में हम इन दिनों में घूमे। आज लक्ष्य बाजार में हैं। यहाँ सराक' जाति के १५ घर हैं। कई अच्छे कार्यकर्ता भी हैं। यहाँ से हम कुछ प्रचार-कार्य आरंभ करने जा रहे हैं। 'सराक' जाति में विशेष रूप से कुछ काम हो सके यह उद्देश्य है। कुछ विशिष्ट प्रकार की पुस्तकें भी तैयार की गई हैं। अच्छा परिणाम आयेगा ऐसी उम्मीद है।

जे के नगर

ता० २१-२-५६ :

यह औद्योगिक क्रांति का युग है। सारा संसार औद्योगिक विकास की ओर भागा जा रहा है। जो देश औद्योगिक क्षेत्र में आगे बढ़ जाता है वह सारे संसार में अपना वर्चस्व जमा लेता है। आज योरोप तथा अमेरिका जैसे पश्चिमी देश इसीलिए इतने प्रगति

शील माने जाते हैं, क्योंकि वहां औद्योगिक क्रांति चरितार्थ हो चुकी है। एशिया और अफ्रीका के देश अभी तक इसीलिए पिछड़े हुए माने जाते हैं, क्योंकि यहां पर विकसित और बड़े उद्योगों का अभाव है। ये पिछड़े देश पश्चिम की राह पर आगे बढ़ने के लिए उतावले हैं और हर प्रकार से उनकी नकल करते हैं। खान पान वेष भूषा रहन-सहन सब में आज पश्चिम की नकल की जारही है। सच पूछा जाय तो एशिया और अफ्रीका के लोगों के लिए पश्चिम के लोग देवता बन गये हैं। इसीलिए आज भारत भी पश्चिम की नकल करने में ही अपने को धन्य भाग्य समझ रहा है। जहां भी देखिए वह अपनी प्राचीन भारतीय संस्कृति की परम्पराओं को तोड़-मरोड़ कर नई भौतिक सभ्यता को प्रश्रय दे रहा है। नई दिल्ली जैसे शहरों में तो ऐसा लगता ही नहीं कि हम भारत में हैं। यहां की फैशन और औद्योगिक क्रांति के परिणाम स्वरूप आई हुई सभ्यता को देखकर ऐसा ही लगता है कि यह कोई पश्चिमी देश का बड़ा शहर है।

पर आज वे देश, जहां औद्योगिक-क्रांति हो चुकी है और जहां फैशनावतार हो चुका है, बहुत चिन्तित हैं। क्योंकि विज्ञान के सहारे पर उन्होंने बड़े बड़े कारखाने तो खड़े कर लिये, सामान का उत्पादन भी खूब करते हैं, पर उस सामान को खपाने के लिए बाजार नहीं मिल रहा है। जिन दिनों में चंद देशों के पास ही बड़े बड़े कारखाने थे, उन दिनों में वे देश बाहर के देशों से कच्चा माल मगाते थे, और पक्का माल खूब ऊंचे दामों पर दूसरे देशों को बेच देते थे। इस तरह छोटे और अविकसित देश इन बड़े देशों का माल खपाने के लिए अपनी मंडिया और अपना बाजार उपलब्ध करते थे। पर आज इन छोटे देशों में भी कारखाने खुलने लगे हैं। ये छोटे देश अब स्वयं अपने यहां माल बनाकर बाहर भेजना चाहते हैं। विदेशी मुद्रा की आवश्यकता आज प्रत्येक देश

चले हैं। इसलिए कच्चा माल बाहर न भेजकर बड़े कारखानों में उसे पक्का बनाना तथा अन्य देशों को वह माल भेजकर विदेशी मुद्रा कमाना आज सभी देशों का लक्ष्य है। यह विषम स्थिति बड़े उद्योगों के कारण आई है। साथ ही इन बड़े उद्योगों ने बेकारी को भी प्रश्रय दिया है। जो काम १ आदमी मिलकर करेंगे वह काम मिल में १० आदमी कर सकते हैं। इस तरह उत्पादन बढ़ेगा, उत्पादन की आमदनी एक आदमी के पास जाएगी और अधिक लोग बेकार होंगे। एक ही साथ अनेक दोष हैं। पर कहने का अर्थ यह नहीं है कि बड़े उद्योग हों ही नहीं। केवल उनपर नियंत्रण रखने की आवश्यकता है। कुछ बड़े उद्योगों के अभाव में तो देश की अर्थ व्यवस्था में और संसार की अर्थ व्यवस्था में संतुलन ही नहीं रह जाएगा।

बे के नगर एक औद्योगिक-नगर है। एल्युमिनियम का कारखाना है। बहुत अच्छी जगह है। आबोहवा भी स्वास्थ्यप्रद है।

कतरास

ता २१-४-६१।

पिछले महीने हम कतरास आये थे। एक माह १८ दिन में हमने जो प्रवास किया वह मुख्य रूप से 'सराक' जाति में काम करने की दृष्टि से ही था। गाँव गाँव में हमें खूब उत्साह मिला। सर्वत्र अत्यंत स्वागत हुआ। वहाँ सातत्य योग से काम करने की आवश्यकता महसूस हुई। क्योंकि एक बार जब मुनियों से संपर्क आता है तब तो लोगों को प्रेरणा मिलती है और जब वह संपर्क पुराना पड़ जाता है, तब फिर से संस्कार मिटने लगते हैं। इसलिए इस जाति में सतत काम चलता रहे इसकी योजना बननी चाहिए

और काम को एक मिशन का रूप देकर उसे व्यवस्थित बनाना चाहिए।

कतरास में मुनि श्री जगजीवनजी म० तथा मुनि श्री जयती लालजी म० का समागम हुआ। ये दोनों मुनि सांसारिक पक्ष में पिता-पुत्र हैं और बड़े अध्यवसाय के साथ पूर्व भारत में विचरण कर रहे हैं। जयती मुनि के व्याख्यान बड़े हृदय स्पर्शी और बड़े सरल सुबोध होते हैं। उनके व्याख्यान तथा उपदेश सुनकर आम जनता न केवल प्रसन्न और सतुष्ट ही होती है, बल्कि प्रभावित होकर सत्याचरण की प्रेरणा भी ग्रहण करती है।

कतरास मे जैन उपाश्रय का अभाव था। पर यहा के लोगों के उत्साह ने और विशेष रूप से देवचन्द भाई जैसे प्राणवान लोगों के प्रयत्न ने उस अभाव को पूरा कर दिया है। एक भव्य-भवन का निर्माण हो चुका है।

ता० २२-४-६१ :

जैन उपाश्रय का उद्घाटन-समारोह टाटा के सुप्रसिद्ध समाज सेवी श्री नरभेराम भाई के हाथों से सपन्न हुआ। आस पास के लोग काफी सख्या में उपस्थित थे।

ता० २३-४-६१ :

महावीर जयंती !

भगवान महावीर इस युग के एक क्रांतिकारी महापुरुष हुए हैं। यदि हम अहिंसा, सत्य, अध्यात्म और आत्मोन्नति का प्रशस्त-पथ दिखाने वालों का स्मरण करेंगे तो उनमें भ० महावीर का नाम

जाज्वल्यमान सूर्य की तरह चमकता हुआ दिखाई देगा। जिस युग में चारों ओर हिंसा साम्प्र-सत्ता और धार्मिक अंध-विश्वासों का अंधेरा व्याप्त हुआ था उस युग में भगवान महावीर ने शांति प्रेम करुणा वैराग्य अपरिग्रह, अहिंसा आदि सिद्धांतों का प्रचार करके कुमार्ग में भटकती हुई जनता को सद्बुद्धि देकर सन्मार्ग दिखाया।

यह महावीर जयंती हर वर्ष आती है। हर वर्ष इस पावन-पुनीत अवसर पर बड़ी बड़ी सभाओं का आयोजन होता है। पर सोचने की मुख्य बात यह है कि क्या हम महावीर के अनुयायी उनके बताये हुए मार्गों पर चलते हैं? यदि महावीर-जयंती मनाने वाले महावीर के आदर्शों पर नहीं चलते तो जयंती मनाने का कोई सार नहीं।

कुछ लोग बाहर से ऐसे दीखते हैं मानो वे सचमुच महावीर के पद चिन्हों पर चलने वाले बारह व्रतधारी श्रावक हैं। शास्त्र की किसी भी उलझी हुई गुत्थी को वे सुलझा सकते हैं। सब जगह उनकी तारीफ भी होती है। वे निरन्तर ज्ञान-ध्यान में व्यस्त दीख पड़ते हैं। उनका घर आगम-ग्रन्थों भाष्यों टीकाओं आदि से भरा रहता है। सर्वत्र उनकी पूछ होती है। महावीर-जयंती जैसे अवसरों पर व्याख्यान देने के लिए उनको आमंत्रित किया जाता है। सर्वत्र स्वागत होता है। मानपत्र पढ़ाई जाती है। उनका व्याख्यान सुनकर श्रोतागण मंत्र मुग्ध हो जाते हैं। तालियों की गड़गड़ाहट होती है।

पर यदि वास्तविक दृष्टि से देखा जाय तो उनके जीवन में सत्याचरण का प्रायः अभाव ही रहता है। सम्यग्ज्ञान सम्यग् दर्शन तथा सम्यग् चारित्र रूपी रत्नत्रय का उनमें कहीं दर्शन नहीं

होता। यह सारा केवल वाक् प्रपंच ही रहता है। देव, गुरु और धर्म की वास्तविक पहचान से रहित उनका यह पाण्डित्य खोखला ही होता है।

इसलिए महावीर जयन्ती आत्म चिन्तन का दिन है। इस दिन यह प्रतिज्ञा लेनी चाहिए कि हम ऊपर के दिखावे में न उलझकर सचमुच महावीर के आदर्शों पर चलेंगे।

यहां पर महावीर-जयन्ती का खूब अच्छा आयोजन हुआ। हमने लोगों को उपरोक्त विचार समझाने का प्रयत्न किया। सायं काल थोड़ी दूर पर स्थित खरखरी कोल्यारी पर महावीर जयन्ती समारोह में भाग लेने के लिए मुनिगण शाम को ही चले गये।

अभी यहां पर जो आस-पास की विभिन्न कोलियारी है उन्हीं में हम विचरण करेंगे। इस क्षेत्र में अपने जैन भाई भी बड़ी सख्या में हैं। सब से सम्पर्क करना भी आवश्यक है।

करकेन्द

१–७–५६ :

समस्त जैन समाज का यह आग्रह है कि हमें इस वर्ष का वर्षावास बिहार में ही करना चाहिए। यह बिहार-प्रान्त एक ऐतिहासिक प्रान्त है। भगवान महावीर और महात्मा बुद्ध की पावन-भूमि यह बिहार है। एक कवि ने बिहार प्रदेश का वर्णन करते हुए लिखा है—

"महावीर ने जहां दया का, दुनिया को सन्देश दिया।
जिस धरती पर बैठ बुद्ध ने, मानव का कल्याण किया॥

जहाँ जन्म लेकर अशोक ने विश्व प्रेम का फैलाया ।
गांधीजी ने सत्याग्रह का मन्त्र यहाँ पर बतलाया ॥
यहाँ विनोबा ने भूखों को पथ प्रेम का दिखलाया ।
लाखों एकड़ भूमि यज्ञ में दान यहीं पर मिल पाया ॥
ओ बिहार तुम पुण्य-भूमि हो गंगा तुम में बहती है ।
गण्डक-कोसी की विभीषिका भी तुम में ही रहती है ॥"

ऐसी ऐतिहासिक भूमि में जहाँ सम्मेद-शिखर, राजगृह पावापुरी वैशाली आदि *स्थान भारत* के अतीत की गौरव गाथा सुना रहे हों रहने का सहज ही मोह होता है । उस पर भी भक्ति भरा आग्रह देख कर तो मन और भी पिघल जाता है ।

झरिया कोलियरी-क्षेत्र का एक प्रमुख केन्द्र है । यहाँ पर लोगों में भक्ति-श्रद्धा भी बहुत है । मुनियों के लिए सभी प्रकार की अनुकूलताएं भी हैं । झरिया के भाइयों का अत्यन्त आग्रह है । इसलिए हमने इस वर्ष का चातुर्मास-काल झरिया में व्यतीत करने का निश्चय किया ।

झरिया

ता० २-७-५६ :

हम चातुर्मास करने के लिए झरिया पहुँच गये हैं । सभी लोगों में एक प्रसन्नता की लहर दौड़ गई है । इधर जैन-मुनियों के चातुर्मास का अवसर ठीक वैसा ही है मानों महीनों से भूखे किसी व्यक्ति को खीर-पूड़ी का भोजन मिल गया हो इसलिए उत्साह स्वाभाविक है ।

प्रथम सन्देश में ही हमने यह सन्देश दिया कि "आज जन-समाज में धर्म के प्रति और साधुओं के प्रति अरुचि उत्पन्न हो रही है। पर इस सम्बन्ध में गहराई से सोचने पर सहज ही यह ज्ञात हो जायगा कि इसका कारण चन्द स्वार्थी लोगों द्वारा धर्म का तथा साधु-वेष का दुरुपयोग करना ही है। अत हम वास्तविक धर्म की जानकारी देकर लोगों की हिली हुई श्रद्धा को दृढ़ बनाना चाहते हैं। इस दिशा में जो भी प्रयत्न हो सकेगा वह हम इस चातुर्मास की अवधि में करेंगे।"

ता० २-८-५६ :

चातुर्मास सानन्द चल रहा है। धर्म प्रभावना अधिकाधिक विकासोन्मुख है। जैन जैनेतर सभी लोगों में वास्तविक धर्म के प्रति आस्था दृढ हो रही है। अन्धकार को मिटाने के लिए अन्धकार का न तो मारने की जरुरत है और न झाड़ु से साफ करने की। हजारों वर्षों से व्याप्त अन्धेरे को मिटाने के लिए बस, एक दीपक जला देना ही पर्याप्त है। उसी प्रकार अज्ञानान्धकार का मिटाने के लिए विवेक का दीपक जलाना ही पर्याप्त है। प्रवचनों में विभिन्न विषयों पर सन्तुलित रूप से विश्लेषण होता है। मेरा मुख्य कथन यही रहता है कि अपने विवेक को जागृत करो। यदि विवेक की आखें खुली हैं तो किसी चीज की चिन्ता नहीं। पाप की जड़ अविवेक ही है।

शिष्य पूछता है :

कहं चरे, कहं चिट्ठे, कहमासे, कहं सए ।
कहं भुंजतो भासतो, पावकम्म न बन्धई ?

द० अ० ४-७ गाथा

स्वामी—कैसे चलना कैसे ठहरना कैसे बैठना कैसे सोना, कैसे खाना कैसे बोलना हे गुरुवर ! इसका मार्ग बताइये। ताकि पाप कर्म का बन्धन न हो।

गुरु उपदेश करते हैं :

> जयं चरे जयं चिट्ठे जयं मासे जयं सए ।
> जयं भुंजंतो भासंतो पावकम्मं न बन्धई ॥
>
> द० अ० ४ ८ गाथा

स्वामी—यतना से अर्थात्—विवेक से चलो विवेक से ठहरो विवेक से बैठो विवेक से सोओ विवेक से खाओ विवेक से बोलो कोई भी काम विवेक और यतना पूर्वक करने से पाप-कर्म का बन्धन नहीं होता।

पर्यूषण पर्व !

ता० १०-६-५६ :

पूरे वर्ष में चातुर्मास एक ऐसा समय है जिसमें साधु-संगति व्याख्यान श्रवण,त्याग-तपस्या आदि का विशेष अवसर मिलता है। चातुर्मास में भी पर्यूषण एक ऐसा समय है जिसमें मनुष्य अपने पापों को धोने एवं आत्मा को विशुद्ध बनाने की ओर सचेष्ट रहता है। पर्यूषण में भी संवत्सरी पर्व एक ऐसा दिन है जिस दिन प्रत्येक धर्म श्रद्धालु अपनी आत्मा को अत्यन्त विनम्र एवं सरल बना-कर सभी वैर-विरोधों को भूल जाता है और भगवत् चिंतन अथवा आत्म-चिन्तन में लीन हो जाता है।

पर्यूषण पर्व के कारण यहां लोगों में कितना उत्साह है। नये उपाश्रय के प्रांगण में भव्य-पण्डाल बनाया गया। देखिये न, लोग

भाग भाग कर पर्यूषण पर्व की आराधना के लिए तैयारी कर रहे हैं। प्रभात फेरी से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। सैंकड़ों व्यक्तियों ने इसमें भाग लिया। दिन भर ज्ञान चर्चा, प्रवचन, स्वाध्याय प्रतिक्रमण आदि का कार्यक्रम रहा। गृहस्थ-जीवन सघर्षों का जीवन है। आदमी घानी के बैल की तरह गृहस्थी के कामों में व्यस्त रहता है। धर्म-ध्यान के लिए उसे समय ही नहीं मिलता। अत पर्यूषण पर्व एक ऐसा समय है, जिस अवसर पर ८ दिन के लिए कोई भी गृहस्थ अपने धधों से मुक्त होकर आत्म-निर्माण का पथ प्रशस्त कर सकता है।

तपस्या का महत्व जैन धर्म में बहुत ही विशिष्ट रूप से बताया गया है। आत्मा पर जो कर्म-बधन दृढता से अपना साम्राज्य जमाये रहते हैं, उन बधनों को जड़मूल से विनष्ट करने का एक मात्र साधन तपस्या ही है। इसलिए ये पर्यूषण के दिन आत्म-साधकों के लिए तपस्या के दिन होते हैं। यहा पर भी तपस्या की अच्छी योजना तीन दिन, चार दिन, पाच दिन, आठ दिन, नौ दिन, इस प्रकार की तपस्याए और उपवास करके लोग पूरी तरह से सासारिक कामों को छोडकर आत्म-चिन्तन में ही लीन हो जाने के लिए प्रयत्न शील रहे।

खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमतु मे।
मित्ति में सव्व भूएसु, वेर मज्झ न केणई ॥

मैं जगत के सभी प्राणियों से क्षमा याचना करता हूँ। साथ ही समस्त प्राणियों को मैं भी क्षमा करता हूँ। इस ससार में सबके साथ मेरा प्रेम है, मेरी मित्रता है, किसी के साथ वैर-विरोध [illegible]

यह शुभ कामना प्रत्येक व्यक्ति संवत्सरी के पावन-पुनीत प्रसंग पर व्यक्त करता है और अपने अंतरतम को विशुद्ध तथा निर्मल बनाता है।

झरिया एक कोलियारी क्षेत्र है। थोड़ी थोड़ी दूर पर अनेक कोलियारीज हैं और उनमें बहुत से जैन-श्रावक कार्य करते हैं। उन सभी ने पर्व पत्र में भाग लिया है। ७ बार स्वामि वात्सल्य का भी आयोजन हुआ। ४ग्राम वात्सल्य समारोह में भी आस-पास के लोगों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

ता १६-११-२६ :

झरिया में चातुर्मास-काल पूरा करके आज यहां से विदा हो रहे हैं। चार महीने में जिनके साथ घनिष्ठ संबंध आता है और जो साधु-संपर्क में विमग्न हो जाते हैं वे इस विदा-काल में वियोगग्रस्त हो जाते हैं। पर साधु निर्लिप्त रहते हैं और अपनी मंजिल की ओर प्रयाण करते हैं।

झरिया का चातुर्मास बहुत ही सफल रहा। एक नया क्षेत्र खुला। काम करने की नई दृष्टि मिली। सराक जाति में काम करने की प्रेरणा को बल मिला। चातुर्मास के दौरान में स्थानकवासी कान्फ्रेंस के प्रमुख श्री बनेचन्द भाई कलकत्ता समाज के प्रमुख कार्यकर्ता श्री खानजी पानाचन्द श्री गिरधर भाई श्री व्यंवक भाई श्री सेठ बच्चनराजजी रामपुरिया आदि सज्जन आए। सभी ने यह महसूस किया कि इस क्षेत्र में जो काम हुआ है वह महत्त्वपूर्ण है और इस काम को आगे बढ़ाना चाहिए। कुल मिलाकर यह चातुर्मास बहुत सफल रहा और हमारे लिए प्रेरणादायक साबित हुआ।

सिंदरी

ता० २६-११-५६ :

झरिया से विदा होकर, भागा डिगवाड़ी, होते हुए हम सिंदरी आये हैं। सिंदरी में बहुत बड़े पैमाने पर खाद का निर्माण होता है। खेती के लिए खाद उतनी ही आज आवश्यक मानी जाती है, जितनी आवश्यक मनुष्य के लिए रोटी है। पौधों को खाद म ही खुराक मिलती है। राष्ट्र के नेताओं की मान्यता है कि हिन्दुस्तान में खाद के उपयोग की बात बहुत कम लोग जानते हैं। इसीलिए यहां की जमीन से पर्याप्त उपज नहीं मिलती। यदि हिन्दुस्तान के लोग एक एकड में १५ मन धान पैदा करते हैं तो जापान जैसे देश के लोग खाद आदि के सहारे से ५० या ६० मन तक साधारणत पैदा कर लेते हैं। वहां थोडी सी भी खाद व्यर्थ नहीं जाने दी जाती पर भारत में तो गोबर जैसे बहुमूल्य खाद को लोग जला डालते हैं।

सिन्दरी में वैज्ञानिक तरीकों से खाद का निर्माण किया जाता है। इस खाद से जमीन की ताकत घटती है, ऐसा कुछ वैज्ञानिकों का मत है और कुछ अर्थशास्त्री ऐसा भी कहते हैं कि यह खाद हिन्दुस्तान के गरीब किसानों के लिए बहुत महंगी पडती है। इसलिए इस खाद की उपयोगिता के बारे में अभी मतभेद है।

सरकार ने बहुत खर्च करके इस कारखाने का निर्माण किया है। यह देखा गया है कि जिन खेतों में यह खाद डाली गई उनमे उत्पादन की मात्रा काफी बढी। हिन्दुस्तान कृषि-प्रधान देश है। इसलिए यहां की पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि के विकास को प्राथमिकता दी गई है। यह ठीक भी है। कृषि के विकास पर ही भारत का विकास निर्भर है। यदि कृषि उन्नत गढ की हो और

भारत के किसानों का जीवन-स्तर उठे तो निश्चय ही देश भी, किसी भी देश का मुकाबला कर सकता है। पंचवर्षीय योजनाएं इस दिशा में प्रयत्नशील हैं। देखें कब मंजिल तक पहुँचते हैं।

महुदा

ता० ३-१२-५६ :

कल हम ताम्र गढ़िया में थे। यहां एक विचित्र ही दृश्य देखा। 'भ्रष्टाचारी राज्य अच्छे कर्मचारियों के अभाव में और ईमानदार महाशयों के अभाव में न केवल 'भ्रष्टाचारी' बन जाता है बल्कि अत्याचारी ही सिद्ध होता है। रेलवे विभाग भ्रष्टाचार के लिए बहुत बदनाम है। उसका एक उदाहरण कल देखा। स्टेशन-मास्टर एवं रेल-गार्ड ने मिलकर जिस तरह से सार्वजनिक संपत्ति का अपहरण किया वह सचमुच इस देश की दयनीय अवस्था का एक नमूना है। जो काम सेवा के लिए और जनता की सुविधा के लिए चलाया जाता है वही काम इस तरह जनता के लिए भार स्वरूप बन जाता है। आजादी के बाद सरकारी कर्मचारियों में व्यापक रूप से भ्रष्टाचार व्याप्त हो रहा है। घूसखोरी तो मानो एक अधिकार ही बन गया है। कहीं भी जाइये बिना घूस के कोई काम नहीं होता। कानून का पालन कराने वाली कचहरी तो घूस खोरी का सबसे बड़ा अड्डा है। यदि इसी प्रकार चलता रहा तो यह देश कहां जाकर गिरेगा कुछ कहा नहीं जा सकता।

ताम्र गढ़िया से ८ मील चलकर आज हम महुदा पहुंचे। प्रातःकाल बड़ा सुहावना था। गुलाबी ठंड पड़ रही थी। सर्दी के दिनों में प्रकृति भी अपने पूरे निखार पर रहती है। वर्षा समाप्त हो जाती है। खेतों में धान पक जाता है। कहीं कटाई चलती है। तो कहीं

खलिहान बिछे रहते हैं। ईख की फसल भी खूब बढ़ी हुई दीख पड़ती है। यह इतना सुहावना और मनोरम मौसम हमारी पदयात्रा के लिए भी बड़ा अनुकूल होता है। गरमियों में थोड़ी धूप तेज होने के बाद चलना कठिन हो जाता है। लेकिन सर्दियों में धूप भी बड़ी अच्छी लगती है।

यहां श्री प्रभाकरविजयजी म० से भेंट हुई। इसी तरह विहार-काल में जगह जगह विभिन्न सम्प्रदायों के मुनियों से मुलाकात होती रहती है। यह बड़े दुःख की बात है कि हमारे साधुओं में दूसरी सम्प्रदाय के साधुओं से सम्पर्क बढ़ाने की वृत्ति बहुत ही कम है। आज जैन समाज अनेक छोटे-बड़े टुकड़ों में विभाजित होगया है। इतना ही नहीं ये विभिन्न सम्प्रदायें एक दूसरे के विरोध में अपनी ताकत खर्च करती हैं। परन्तु हमें सोचना चाहिये कि हम सब एक ही महावीर के अनुयाई हैं। फिर आपस में इतना विरोध क्यों? अलग अलग सम्प्रदायें हैं, तो भले ही रहें। पर आपस में सबको प्रेम रखना चाहिये। जैन धर्म की आधार-शिला प्रेम, अहिंसा और अनेकान्तवाद पर टिकी है। यदि अनेकान्तवाद के प्रतिपादक जैन धर्मावलम्बी खुद आपस में झगड़ते रहेंगे तो कैसे काम चलेगा?

मैं तो बराबर यही सोचता रहता हूँ कि हमें अपने विचारों के भेद को सामने न लाकर तथा विरोध और झगड़े की बातों को प्रोत्साहन न देकर प्रेम का वातावरण बनाना चाहिए। इसी से हमारे समाज का विकास होगा और दुनियां को हम जैनधर्म का रास्ता दिखा सकेंगे। यदि आपस में लड़ने में ही अपनी शक्ति खर्च कर देंगे तो दुनिया को क्या मार्गदर्शन करायेंगे?

बेरमो

ता० ३०-१-५७

आज ३० जनवरी है। वह भी ३० जनवरी की शाम थी। जिस प्रार्थना के लिए जाते हुए इस युग के महान अहिंसावादी महात्मा गांधी के सीने पर एक हिन्दू युवक ने संकुचित हिन्दुत्व की रक्षा के नाम पर गोली मार दी थी। अहिंसा और शांति का सारे संसार को मार्ग दिखाने वाला हिन्दुस्तान कभी कभी कैसे हिंसावृत्ति के मनुष्य पैदा कर देता है। महात्मा गांधी ने देश को अहिंसक रास्ते से आजाद किया। देश की सेवा के लिये अपना सारा जीवन अर्पित कर दिया। उनको गोली से मार देने का दुस्साहस सचमुच कितनी भयंकर घटना थी। उस सारे दृश्य को याद करके हृदय कांप उठता है और रोम रोम प्रकंपित हो जाता है।

रात्रि को महात्मा गांधी की निधन तिथि मनाने के लिये एक सभा हुई मैंने इस प्रसङ्ग पर अपने विचार रखते हुए कहा कि "आज देश का प्रत्येक राजनीतिज्ञ और सामाजिक नेता महात्माजी का नाम लेता है। कांग्रेस सरकार तो कदम कदम पर गांधीजी की दुहाई देती है। दूसरी राजनैतिक पार्टियां भी गांधीजी का नाम रटती हैं। पर उनके सत्य और अहिंसा के आदर्श पर चलने वाले कौन कौन हैं ? यह गम्भीरता से सोचने की बात है।

इस देश के इतिहास को देखने से यह ज्ञात होगा कि यहां व्यक्ति को तो बहुत ऊंचा चढ़ाया गया, उसकी पूजा भी खूब हुई पर उसके आदर्शों का पालन करने में सदा ही उदासी बरती गई। यदि गांधीजी के साथ भी ऐसा ही हुआ तो उनके साथ न्याय नहीं होगा।

वेरमो मे मुनि श्री जयंतीलालजी म० के साथ भेंट हुई। यहां पर एक नवीन जैन स्थानक का भी उद्घाटन हुआ। उद्घाटन समारोह में भाग लेने के लिये आस पास के अनेक गांवों के सज्जन आये। कलकत्ता प्रसिद्ध जैन व्यापारी श्री कानजी पानाचंद ने उद्-घाटन-रस्म अदा की और मणीलाल राघवजी सेठ ने सभा की अध्यक्षता की।

बड़गाँव
ता० ३-२-५७ :

हम अब विहार के हजारी बाग तथा रांची जिले के पहाड़ी क्षेत्रों में से गुजर रहे हैं। पहाडी क्षेत्र और जंगली क्षेत्र प्राकृतिक रमणीयता में अपना सर्वोत्कृष्ट स्थान रखते हैं। जंगली रास्ते भी बड़े डरावने होते हैं। कहीं पगडंडी तो कहीं गाड़ी का रास्ता। चारों ओर सुनसान। हरी भरी उपत्यकाए। ऊंचे ऊंचे पेड़, घनी झाड़ियां कांटे कङ्कर, पत्थर। यह इस रास्ते की सौन्दर्य-सुषमा है।

हमारा देश धर्म-प्रधान देश है। लेकिन दुर्भाग्य वश धर्म, कर्म के साथ कुछ रूढ़िया भी चल पड़ी। बलि प्रथा भी एक ऐसी ही धार्मिक कुरूढ़ि है। लोग भ्रम-वश ऐसा मानते हैं कि देवी देवता को बलिदान की जरूरत है। वे किसी के बलिदान से प्रसन्न होते हैं। भ० महावीर के युग में तो यह बलि प्रथा बहुत ही प्रचलित थी इसीलिये भगवान ने इसका घोर विरोध किया। आज तो यह प्रथा बहुत कम रह गई है। फिर भी अनेक जातियों में इस प्रथा को अभी भी मान्यता दी जाती है। ऐसा ही बड़गाव में भी होता है। मैंने जनता को बलिप्रथा को बन्द करने के लिये समझाते हुए अपने

"सव्वे जीवावि इच्छन्ति जीविउं न मरिज्जिउं ।
तम्हा पाणवहं घोरं निग्गंथा वज्जयंतिणं ॥
द० अ० ६ ११ गाथा

अर्थात्—सब जीव जीना चाहते हैं मरना कोई नहीं चाहता। अतः किसी भी जीव का प्राणापहरण करना पाप है। कोई यदि ऐसा समझते हों कि देवी-देवता किसी जीव के प्राणापहरण से प्रसन्न होते हैं तो वे निरी भ्रमणा में हैं। आप जब किसी को जिला नहीं सकते तब आपको इसका क्या अधिकार है कि किसी को मारें। यदि देवी को भोग ही देना है तो आप अपना भोग क्यों नहीं देते। बेचारे निरीह पशुओं का जो बोल नहीं सकते अपना दुख दर्द प्रगट नहीं कर सकते भोग चढ़ाकर यदि आप पुण्य कमाना चाहते हैं तो यह सर्वथा निन्दनीय एवं अशोभनीय है। इस व्याख्यान को सुनने के बाद अनेक भाइयों ने यह प्रतिज्ञा की कि वे अब किसी भी निमित्त से किसी भी मूक प्राणी की हत्या नहीं करेंगे। यदि देवी देवताओं की पूजा का सवाल आयेगा तो वहाँ भी अहिंसक मार्ग का अनुसरण करेंगे।"

इस प्रकार बड़गांव में यह एक बहुत ही अच्छा काम हो गया।

भरगढ़ा

ता ७-२-५७

रास्ते में विहार करते हुए हमें आज सरकस वालों का एक काफिला मिला। हमने देखा कि मानव अपने तुच्छ मनोरंजन के लिए और निकृष्ट स्वार्थ पूर्ति के लिये किस प्रकार पशुओं का शोषण करता है। बलि प्रथा में तो पशु को मार दिया जाता है पर इस

सरकस में तो जिन्दा पशुओं को मारपीट के सहारे इस तरह से बन्दी बनाया जाता है और इस तरह से उन्हें तग किया जाता है कि स्मरण करते ही हृदय करुणा से भर जाता है। इसी प्रकार अजायबघरों और चिड़ियाघरों मे भी मानव मनोरन्जन के लिए पशुओं को बन्दी बनाया जाता है। खुले विचरण करने वाले पशु सीखचों में बन्द होजाने के बाद ऐसा ही महसूस करते हैं, मानों उन्हें गिरफ्तार करके जेल में रख दिया गया है। ऐसी स्थिति में यह मानने को हम बाध्य हो जाते हैं कि मानव अत्यन्त स्वार्थी है। वह अपने निकृष्ट और नगण्य स्वार्थों की पूति के लिए चाहे जैसा जघन्य कर्म करने को तैयार हो जाता है। कई देशों में बैलों को लड़ाया जाता है। भैंसों का खेल किया जाता है। घोड़ों को मनोरजन के दाव पर लगाया जाता है। गैंडों का और शेरों का शिकार भी बहादुरी के प्रदर्शन का और मनोरजन का एक साधन मान लिया है जब हम यह कहते हैं कि मास खाने की प्रवृति पशु के साथ मानव का घोर अत्याचार है, तब मानव समाज की खाद्य समस्या का तर्क उपस्थित कर दिया जाता है पर मात्र मनोरंजन के लिये पशुओं पर होने वाले अन्याय को देखकर सहज ही यह भेद खुल जाता है कि मनुष्य केवल अपनी जिव्हा के स्वाद के लिये और अपनी इन्द्रिय शक्ति को बढ़ाने के लिये ही मास का सेवन करता है।

कुल मिला कर हमें अब यह तय करना होगा कि इस ससार में पशुओं को जीने का हक है या नहीं और मानव के साथ पशुओं का क्या सम्बन्ध रहे। क्योंकि पशु अपने अधिकारों की माग नहीं कर सकता और वह अपने ऊपर होने वाले अत्याचारों के विरोध में आवाज नहीं उठा सकता इसलिये उस पर मानव अपनी मनमानी करता रहे यह मानवता के भाल पर कलक का टीका है और अहिंसा वादियों के लिये लज्जा की बात है।

इस सम्बन्ध में गहराई से विचार होगा तो मात्र दवाओं के लिये अथवा वैज्ञानिक प्रयोगों के लिये होने वाला बन्दरों का निर्यात और उनका संहार तथा इसी तरह की अन्य प्रवृत्तियाँ स्वतः बंद हो जाएँगी।

रांची

ता० १४-२-५७।

अब हम बिहार के एक सिरे पर पहुँच गए हैं। यह बिहार की ग्रीष्म-कालीन राजधानी है। जब यहाँ का राज्य अंग्रेजों के हाथ में था तब उन्होंने प्रायः हर एक प्रान्त में कुछ ऐसे हिल स्टेशन बनाये और गर्मी के दिनों में सारा काम-काज समतल-भूमि से उठाकर पर्वतीय भूमि में ले जाने का कार्यक्रम बनाया। क्योंकि उन्हें हिन्दुस्तान का धन अपने ऐश-आराम पर खर्च करना था एवं यहाँ की गरीब हालत के लिए वे चिन्तित नहीं थे इसलिए स्वराज्य के पहले यह सब चलता रहा। पर आश्चर्य है कि स्वराज्य के बाद भी जब कि देश के निर्माण के लिए धन की आवश्यकता है, हमारे राज्याधिकारियों एवं शासकों को राजधानी परिवर्तन करने में होने वाला लाखों का खर्च कैसे स्वीकार्य है?

इसके अलावा भी ग्रीष्म-काल में अधिकांश सरकारी सभाएं ऐसे पर्वतीय स्थानों पर होती हैं। सरकारी अफसरों के लिए दोनों ओर चाँदी बनती है। उन्हें हिल स्टेशन पर घूमने का कोई खर्च नहीं करना पड़ता भत्ता भी मिलता है और सरकार का तथा कथित काम भी पूरा हो जाता है। पर मुझे लगता है कि इस देश के लिए इस तरह की फिजूल खर्च और आराम परस्त प्रवृत्ति खतरनाक एवं घातक है।

राची जैसे क्षेत्रों में इसाई मिशनरीज का काम भी खूब चलता है। इसाई मिशनरीज के काम को देखने के दो पहलू है। एक, उनकी सेवा-भावना और दूसरी उनकी धर्म परिवर्तन कराने की भावना। मिशनरीज के लोग आदिवासी गावों में जाकर जिस प्रकार सेवा का काम करते है लोगों की देख भाल, चिकित्सा शिक्षा, सफाई आदि पर ध्यान देते हैं। वह सचमुच उल्लेखनीय ही नहीं बल्कि अनुकरणीय भी है। पर वे इस सेवा के माध्यम से लोगों को इसाई धर्म मे दीक्षित करते है, यह किसी भी प्रकार से उचित नहीं कहा जा सकता।

राची एक बहुत सुन्दर नगर है। स्वास्थ्य के लिए यहा का जलवायु बहुत अनुकूल है। यहाँ पर मस्तिष्क के रोगियों के लिए भी एक बहुत अच्छा चिकित्सालय है। श्वेताम्बर, दिगम्बर मिलाकर जैन श्रावक भी काफी सख्या में हैं। पहाड़ी सौन्दर्य और प्राकृतिक सुषमा वर्णनातीत है। टेढ़ी मेढ़ी बल खाती सड़कें नागिन सी जान पड़ती हैं। पर आस पास के गावों में गरीबी बहुत है। आदिवासी महिलाए पीठ पर बच्चों को बाधे हुए काम करते दीख पड़ती है।

विकास विद्यालय

ता० २६–२–५७ :

राची से हमने राजगृह की ओर प्रयाण करते समय आज यहा पड़ाव डाला। यह विद्यालय राँची की उपत्यकाओं में इतना मनोहारी लगता है कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

आजादी के बाद देश का विकास कार्य करने वाले युवकों की एक बहुत बड़ी सेना चाहिए। इस सेन[illegible] [illegible]िकास कार्य का सिद्धान्त पद्धति और कार्यक्रम [illegible]ाकर दर्च[illegible] आवश्यक है। इस-

लिये देश भर में सरकार ने कुछ चुने हुये प्रमुख स्थानों में इस तरह के विकास विद्यालय स्थापित किये हैं। यहाँ से प्रशिक्षण प्राप्त करके ये विद्यार्थी गाँवों में फैल जायेंगे और जन-सेवा तथा ग्राम विकास का काम करेंगे।

यहाँ प्रशिक्षण भी विविध विषयों का दिया जाता है। खेती के नये तरीके, शिक्षा चिकित्सा आदि का स्वास्थ्य-विकास पशु-पालन ग्रामोद्योग आदि का प्रचार तथा इसी तरह की अन्य सामाजिक प्रवृत्तियाँ गाँव गाँव में सिखाने की शिक्षा ये विद्यार्थी ग्रहण करते हैं।

हजारी बाग

ता० ४-३-५७ :

रांची पहाड़ पर है और हजारी बाग ऊँचाई पर। टेढ़ी मेढ़ी सड़क इस तरह से घूमती हुई जाती है कि देखते ही बनता है। पूरा रास्ता हरा भरा जंगल का है। कहीं कहीं जंगली फूलों की शोभा भी अनिर्वचनीय है। जगह जगह बड़े खेत हैं। झरने बह रहे हैं। तालाब हैं। बीच बीच में छोटे छोटे गाँव हैं। चारों ओर घन घोर जंगल फैला हुआ है। ऐसे बीहड़ रास्तों से चलने में भी विलक्षण आनन्द आता है। सरकार ने ऐसे बीहड़ प्रदेश में भी डाक बंगले काफी संख्या में बना रखे हैं। स्कूल भी बीच बीच में मिलते रहते हैं। इसलिए ठहरने की कोई दिक्कत नहीं आती।

हजारी बाग जिले का शहर है। लेकिन सफाई आदि की दृष्टि से यहाँ की नगर पालिका उदासीन ही है, ऐसा भास हुआ। वैसे हिन्दुस्तान में आम तौर से सफाई की तरफ उपेक्षा ही बरती जाती है। पर यहाँ तो काफी गन्दगी देखने को मिली। धर्मशाला आदि की

व्यवस्था का भी अभाव ही दिखाई दिया। लेकिन दिगम्बर जैन भाइयों के ७० घर हैं। प्राय सभी बहुत अच्छे सज्जन और भावना शील हैं।

बिहार के कई नगरों में अखिल विश्व जैन मिशन का अच्छा काम है। कई कार्यकर्ता बहुत दिलचस्पी के साथ इस काम में लगे हैं। जैन मिशन ने विदेशों में भी जैन धर्म के प्रचार का अच्छा काम किया है। पद्मा गेट में राज्य रानी श्रीमती ललिता राज्य लक्ष्मी ने उपदेश का लाभ लिया और नारी आदर्श ऊपर प्रवचन सुना। महारानी ने निरामिष भोजी रहने का व्रत स्वीकार किया। क्षत्रिय धर्म के सम्बन्ध में भी काफी विचार विमर्श एक घण्टे तक होता रहा।

कोडरमा बांध

ता० ७–३–५७ :

लगभग २६ मील के विस्तार में फैली हुई अपार जल राशि! उठती हुई लहरें! कल कल करता हुआ पानी। तीनों ओर पहाड़ियां। कितना मोहक है। स्वय प्रकृति ही कितनी सुन्दर है, उस पर यदि मानवीय कला का हाथ लग जाय, तो उसकी सुन्दरता में चार चांद लग जाते हैं। जल और बनस्पति ये दोनों चीजें तो प्राकृतिक समृद्धि के सबसे सुन्दर उपहार हैं। नदी, नाले, झरने, बावड़ी कूप, तालाब और समुद्र के रूप में जल का सौन्दर्य तथा जंगल, उपवन, खेत, बाग-बगीचे आदि के रूप में वनस्पति का सौन्दर्य सर्वत्र ससार में फैला हुआ है। जल और वनस्पति न केवल सौन्दर्य के स्रोत हैं बल्कि मानव जीवन के आधार भी हैं। यदि इस प्रकृति का योगदान मानव को न मिले, तो उसका जीवन ही असम्भव हो जाय।

कोडरमा बांध पर आकर हमने देखा कि जल में कितनी शक्ति है। कहीं कहीं तो यह जल संहारक रूप धारण करके मानव-समाज के लिए अभिशाप भी बन जाता है पर यदि मानव इस प्रकृति के साथ अन्याय न करे, उसका केवल सदुपयोग मात्र करे तो यह प्रकृति उसके लिए शक्तिशाली मददगार बन जाती है।

इस विज्ञान युग में प्रकृति पर बहुत अन्याय हो रहा है। बड़े बड़े आणविक शस्त्रास्त्रों के प्रयोग से वायुमंडल दूषित किया जारहा है। इसीलिए वर्षा आदि में अनियमितता आरही है और भूकम्प आदि का प्रकोप बढ़ता जारहा है। मानव को संयम से काम लेने पर ही प्राकृतिक जीवन का आनंद मिल सकेगा।

झूमरी तिलैया

ता० ८–२–५७ :

यह धरती जिस पर मानव बसता है कितनी महान है। कितनी सहनशील है। भगवान महावीर ने कहा है—

"पुढवि समे मुणी हविज्जा"

अर्थात् मुनि को इस पृथ्वी के समान गंभीर, धीर, सहनशील और उदार होना चाहिए। यह भूमि भूमा है। 'भूमा' यानी अल्पत्व। अल्प नहीं। यह सारी सृष्टि को अपने वक्ष स्थल पर धारण किये हुए है। यह सारे संसार के लिए अपना रस देकर अन्न उत्पन्न करती है। पहाड़ों जंगलों, नदियों और समुद्रों को भी इसी ने धारण किया है। इसको खोदने से पीने का मधुर जल प्राप्त होता है। यह धरती ही करोड़ों टन कोयला पैदा करके औद्योगिक समृद्धि को स्थिर रखती है। यह पृथ्वी यदि पैट्रोल पैदा न करे तो संसार

भर का यातायात और संचार क्षण भर मे ठप्प हो जाय। कही इसको खोदने से ताबा, मिलता है, तो कही सोना और हीरे भी मिलते हैं। यह धरती क्या नही देती ?

झूमरी तिलैया को भी इस धरती ने एक विशिष्ट वरदान दिया है। यहा आस-पास के क्षेत्र में 'अभ्रक' नाम का एक मूल्यवान खनिज पदार्थ उपलब्ध होता है। इस खनिज पदार्थ ने लाखों मनुष्यों को आजीविका दी है और साधारण व्यक्ति भी इस 'अभ्रक के व्यापार से करोड़पति बन गये है। ऐसी जगह है झूमरी तिलैया।

यहा एक बहुत सुन्दर दिगंबर जैन मदिर है। दि० जैनो के करीब १०० घर हैं। बहुत अच्छी जगह है।

गुणावा

ता० ११-३-५७ :

कहते हैं कि भगवान महावीर के प्रधान शिष्य और प्रथम गणधर गौतमस्वामी का निर्वाण इसी स्थान पर हुआ था। जहा जैन धर्म के २४ वें तीर्थङ्कर और इस युग के महान अहिंसोपदेष्टा भगवान महावीर का निर्वाण हुआ, वह स्थान, पावापुरी, माना जाता है। लेकिन इतिहास वेताओं की मान्यता है कि पावापुरी (पपापुरी) यह नहीं किंतु गोरखपुर जिले में विद्यमान है। यहा से १२ मील दूर है। गौतम स्वामी को भगवान महावीर ने अंतिम दिन अपने से दूर भेज दिया था। इस दृष्टि से यह एक ऐतिहासिक स्थान है। यहां महावीर प्रभु भी ठहरा करते थे।

पावापुरी

ता० १२-३-५७ :

यहाँ आते ही सारी स्मृतियाँ भगवान महावीर के जीवन पर चली आती हैं। यह वही स्थान है जहाँ कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा के दिन भगवान महावीर निर्वाण पद को प्राप्त हुए थे। जहाँ भगवान निर्वाण प्राप्त हुए थे वहाँ एक जल मन्दिर बना हुआ है। चारों ओर कमल पुष्प तालाब और बीच में स्वच्छ स्फटिक की तरह चमकता हुआ संगमरमर का मन्दिर।

यहाँ श्वेताम्बर और दिगम्बर समाज की ओर से अलग अलग मन्दिर तथा यात्रियों के लिए ठहरने का अलग अलग सुन्दर धर्मशाला का प्रबंध है।

इसके अलावा यहाँ एक नई चीज का निर्माण हुआ है। श्वेताम्बर-मूर्तिपूजक समाज के प्रभाव शाली आचार्य श्री रामचन्द्र सूरि की प्रेरणा से जहाँ भगवान का समवसरण हुआ था वहाँ आरस पत्थर का ९५ फीट ऊंचा एक समवसरण बनाया गया है। अशोक वृक्ष के नीचे भगवान की मूर्ति है और शिखर से भी देखिए ऊपर से मूर्ति दिखाई देती है। यद्यपि हम मूर्तिपूजा को महत्व नहीं देते गुण-पूजा और भाव-पूजा का ही विशिष्ट महत्त्व है पर स्थापत्य-कला की दृष्टि से यह सुन्दर कृति है।

कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा दीपावली के दिन यहाँ पर जैन समाज के हजारों व्यक्ति तीर्थ यात्रा के निमित्त से आते हैं और भगवान महावीर को अपनी श्रद्धांजलियाँ अर्पित करते हैं। यह दृश्य देखने लायक होता है।

जिस युग में चारों ओर हिंसा का कलुषित वातावरण छाया हुआ था, और जब मानव का हृदय दया, प्रेम, करुणा और सत्य से विचलित हो रहा था, तब भगवान महावीर ने राज-पाट, घर-द्वार, सब कुछ छोडकर जन-कल्याण के लिए तथा सत्य और अहिंसा का प्रचार करने के लिए अपना जीवन अर्पित कर दिया था। उसी तरह आज भी सारा ससार हिंसा के दावानल में झुलसता जा रहा है। इसलिए हम सब लोगों का, जो महावीर के अनुयाई हैं, यह परम कर्त्तव्य है कि उनके उपदेशों को जन जन तक पहुँचाने के लिए अपना जीवन लगादें।

राजगृह

ता० १५-३-५७:

जैन-शास्त्रों में स्थान स्थान पर राजगृह का उल्लेख मिलता है। भगवान महावीर के युग मे राजगृह प्रमुख धर्म केन्द्र था और यहा वे बार बार आया करते थे। राजगृह के परित पाच ऊंची ऊची पहाड़िया हैं। इन पहाड़ियों पर जाने के लिए रास्ता भी बना हुआ है। ऊपर श्वेताम्बरों और दिगम्बरों के मन्दिर हैं। इन मन्दिरों की परिक्रमा करना प्रत्येक जैन तीर्थ-यात्री के लिए आवश्यक माना जाता है, इसलिए जो यात्री पैदल ऊपर तक नहीं जा सकते, वे डोली में बैठकर ऊपर जाते हैं। पाचवें व चौथे पहाड़ के नीचे सुवर्ण मन्दिर है। और उसी के आगे एक मणि मन्दिर भी है, जिसे शालिभद्र का कूआ भी कहा जाता है।

राजा बिंबिसार को बदी बनाकर जिस बदीगृह में रखा गया था, वह भी यहा पर ही है। उस युग के अनेक खंडहर अवशेषों के रूप में अब भी इतिहास के स्मृतिचिन्ह बनकर खड़े हैं। जिनको देखने से हमें इस बात का भान होता है कि हमारा अतीत कितना गौरव पूर्ण था।

राजगृह न केवल भगवान महावीर की साधना का मुख्य केन्द्र था बल्कि महात्मा बुद्ध ने भी इसी स्थान को यथावत् अपनी ज्ञान-आराधना का केन्द्र बनाया था। गृद्धकूट आज भी उस युग की कथायें अपने में समेट कर खड़ा है, जहां महात्मा बुद्ध ने आत्म-चिंतन और जीवन-शोधन के क्षण व्यतीत किये थे। इसीलिए यह स्थान अन्तर्राष्ट्रीय तीर्थ बन गया है। जापान बर्मा आदि देशों ने अपने बौद्ध-विहार यहां स्थापित किये हैं। सीलोन थाईलैंड तिब्बत चीन आदि विभिन्न देशों के यात्री बराबर यहां आते रहते हैं। सरकार ने भी इनके ठहरने का अच्छा प्रबंध किया है।

यहां श्वेतांबर एवं दिगम्बर समाज की बड़ी बड़ी धर्मशालायें हैं। यहां प्रतिवर्ष हजारों यात्री आते हैं और इन ऐतिहासिक स्थानों की परिक्रमा करते हैं।

राजगृह न केवल जैनों और बौद्धों का तीर्थस्थान है बल्कि यहां वैष्णव-समाज का और मुस्लिम समाज का भी उतना ही बोल बाला है। इस प्रकार राजगृह एक समन्वय भूमि है। यहां जैन बौद्ध, हिन्दू, मुस्लिम सभी का संगम होता है और सब एक दूसरे के प्रति आदर तथा प्रेम रखते हुए अपने अपने मार्ग पर दृढ़ता पूर्वक चलते हैं।

राजगृह की प्रसिद्धि का एक कारण और भी है। यहां गन्धक-जल के कई प्रपात हैं। गरम और शीतल जल के ये प्रपात स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभप्रद माने जाते हैं, इसलिए प्रतिवर्ष हजारों व्यक्ति यहां आते हैं और इन प्रपातों में अवगाहन करके स्वास्थ्यलाभ करते हैं।

नालंदा

ता २-३-१७ :

राजगृह से ८ मील चलकर हम नालंदा आये। नालंदा प्राचीन बौद्ध युग में एक अनुपम विश्वविद्यालय था। प्रमुख रूप से बौद्ध-भिक्षुओं के विद्याध्ययन का यह केन्द्र था। यह विश्व-विद्यालय

पूर्णत विकसित एक लघु नगर ही था। आज भी उसके अवशेषों को देखने से सहज यह प्रतीत होता है कि उस युग में भी इस देश ने शिक्षा के क्षेत्र में अत्यधिक उन्नति कर ली थी, शिष्यों और गुरुओं के निवास-स्थान भी बहुत अच्छे ढग के बने हुए हैं।

संस्कृति, कला, स्थापत्य, आदि सब क्षेत्रों में भारत बहुत प्राचीन काल से आगे बढ़ा हुआ है। इस बात के प्रमाण स्वरूप नालदा जैसे विश्वविद्यालयों के अवशेष हैं। इसी तरह हडप्पा की खुदाई के बाद भी बहुत से ऐतिहासिक तथ्य सामने आये हैं। अजन्ता, एलिफेंटा, एलोरा आदि गुफाए भी भारतीय कला का सच्चा प्रतिनिधित्व करती हैं।

बिहार सरकार ने 'नव-नालदा-विहार' की यहा पर स्थापना की है। यह एक ऐसा विद्यापीठ है, जहा अतर्राष्ट्रीय स्तर पर बौद्ध-दर्शन के अध्ययन अध्यापन की व्यवस्था है। चीन, जापान बर्मा, सीलोन, श्याम आदि विभिन्न देशों के बौद्ध भिक्षु यहा अध्ययन करते हैं।

हम जिस दिन पहुँचे उस दिन एक प्रतियोगिता का आयोजन था। प्रतियोगिता का विषय था—"बौद्ध धर्म और सस्कृति से आज के युग की समस्याएँ हल हो सकती है।" इस प्रतियोगिता में विभिन्न विश्व विद्यालयों के छात्रों ने भाग लिया। इसमें हम भी शामिल हुए।

दानापुर (पटना)

ता० १-४-५७ :

बिहार शरीफ और बख्तयार पुर होते हुए हम बिहार की राजधानी पटना में २६-३-५७ को पहुँचे तब से बाकीपुर, मीठापुर

आदि मुहल्लों में होते हुए आज दानापुर आये हैं। पटना बिहार की राजधानी है। पाटलिपुत्र के नाम से यह अति प्राचीन काल में विशिष्ट महत्व का नगर था। सम्राट् अशोक ने यहां से ही बौद्ध धर्म के प्रचार का बिगुल बजाया था और करुणा प्रेम एवं भ्रातृभाव का संदेश फैलाया था। जैन कथा-साहित्य में सेठ सुदर्शन की कथा बहुत प्रचलित है। जिन्होंने ब्रह्मचर्य की इतनी उत्कृष्ट साधना की थी कि उसके प्रभाव से शूली की सजा भी फूलों के सिंहासन के रूप में परिवर्तित हो गई। वे सुदर्शन यहीं पर ही हुए। उनका यहाँ एक मन्दिर भी है। और भी कई दृष्टियों से पाटलिपुत्र का ऐतिहासिक महत्व है।

इस युग में भी पटना एक सुन्दर नगर है और आजादी के संग्राम में पटना एक प्रमुख केन्द्र रहा है। डा० राजेन्द्र बाबू जैसे आजादी-संग्राम के सेनानियों का पटना गढ़ था और सदाकत आश्रम जैसे स्थान आजादी के आन्दोलनों का चक्रव्यूह रचने के लिए प्रसिद्ध थे।

पटना में खादी ग्रामोद्योग-भवन भी अपने अप्रतिम आकर्षण से विभूषित है। इसी तरह सर्वोदय आंदोलन का भी पटना प्रमुख केन्द्र है। श्री जयप्रकाशनारायण जैसे सर्वोदयी नेता पटना में ही रहते हैं। शिक्षा साहित्य संस्कृति राजनीति आदि सभी दृष्टियों से पटना का अपना खास महत्व है।

२ आज दानापुर में बिहार प्रांत के वर्तमान राज्यपाल श्री आर० आर० दिवाकर भेंट करने के लिये आए। बातचीत के दौरान में हमने जैन-इतिहास जैनधर्म और जैन संस्कृति के संबंध में विस्तार से चर्चा की। हमने दिवाकरजी से कहा कि 'आज यद्यपि भारत में

जैन अनुयाइयों की सख्या अल्प है, पर भारतीय सस्कृति, कला, और दर्शन के विकास में जैन विद्वानों तथा विचारकों का अभूतपूर्व योगदान रहा है।" ' इस पर राज्यपाल महोदय ने अपनी स्वीकृति तथा सहमति जताते हुए कहा कि "वास्तव में भ० महावीर ने अहिंसा का जो विचार विश्लेषण किया वह अपने आप में अद्वितीय स्थान रखता है। सरकार ने भी इस ओर अब धीरे धीरे ध्यान देना प्रारम्भ किया है। वैशाली का पुनर्विकास एव वहा प्राकृत जैन विद्यापीठ की स्थापना करके सरकार ने इस ओर कदम उठाया है।" राज्यपाल महोदय ने अपनी चर्चा के बीच कहा कि "आप जब पटना तक आगये हैं तो अब आपको वैशाली भी पधारना ही चाहिये। वहा जो काम हो रहा है, उसे आप देखें और आगे उस काम को किस ओर मोड़ना चाहिये यह भी सुझाए।" श्री दिवाकर जी के तथा वैशाली संघ के अत्यन्त आग्रह के कारण हमने पटना से वैशाली की ओर जाने का निर्णय किया।

सोनपुर

ता० ८–४–५७ :

आज हम सोनपुर पहुँचे। सोनपुर गङ्गा के उत्तरीय तट पर है। गङ्गा भारत की प्रसिद्धतम नदियों में से एक है। इस नदी को हिंदू धर्म में बहुत महत्त्व दिया गया है और इस नदी के किनारे बड़े बड़े मुनियों ने तपस्या की है। एक कवि ने लिखा है—

"गङ्गा जिसकी लहरों में, हुँकार जमाना भरता है।
लाखों से मानव खुश जिसके, रौद्र रूप से डरता है॥
गङ्गा जिसने मोह लिया है, भारत का सारा जीवन।
बुला चुकी जो अपने तट पर, अहिन्दी लोगों को अनगिन

जिसके उद्गम से सागर के मिलने तक की सागर में।
परिव्याप्त है सरस कहानी पूरे धरती अम्बर में॥
जिसने छूकर हरिद्वार का फिर यू पी सरसब्ज किया।
और इलाहाबाद पहुँच कर यमुना को निज प्यार दिया॥
आगर कानपुर की प्यासा को गङ्गा ने आधार दिया।
तो काशी में तीर्थ रूप हो पाप कर्मों को त्यार दिया॥
उत्तर औ दक्षिण बिहार को दो भागों में बांट दिया।
पटना से भागलपुर होकर मार्ग स्वयं का छांट लिया॥
गुजरी फिर बंगाल भूमि से खाड़ी का पथ अपनाया।
इतने सफरों से बढ़कर नाम हिन्दमहासागर पाया॥

इस प्रकार की पुण्य-सलिला गंगा के उत्तरीय तट पार करके हम एशिया के प्रसिद्ध सोनपुर नगर में पहुँचे। सोनपुर की प्रसिद्धि का कारण कार्तिक में लगने वाला पशुओं का मेला है इस मेले से प्रभावित होकर ही किसी यात्री कवि ने लिखा होगा—

रेल्वे प्लेटफार्म है जिसका भारत में लम्बा सबसे।
और एशिया भर का गुरुवर लगता है मेला कबसे॥
ऊँट बैल भैंसे भी चाहें, गाय भैंस घोड़े हाथी।
सब कुछ मिलता इस मेले में मिल जाता खोया साथी॥
पूर्व एशिया में न कहीं पर, इतना पशुओं का व्यापार।
मानव लाखों जुटते इसमें होजाती है भीड़ अपार॥

हमें सोनपुर से अब सीधे वैशाली के मार्ग पर ही आगे बढ़ना है। वहां से वैशाली केवल ५२ मील है।

वैशाली

ता० १२-४-५७ :

हम दानापुर से जिस लक्ष्य को लेकर चले थे वह आज पूरा हुआ और हम अपनी मंजिल पर कल पहुँच गए। आज महावीर जयन्ती का आयोजन हुआ। स्वयं राज्यपाल महोदय श्री आर आर दिवाकर भी इस समारोह में उपस्थित हुए एवं हमारा स्वागत किया।

यह जैन मन्दिर है। मन्दिर के पास के तालाब में मछली पकड़ने का सरकार की ओर से ठेका दिया जाता था। हमने इस प्रश्न पर गम्भीरता से विचार करने की बात यहा के जिलाधीश के सामने उठाई कि जिस नगरी से अहिंसा का महान मंत्र निकलना चाहिये, वहा निरीह मछलियों की हिंसा कैसी? सरकार ने इस बात को स्वीकार करके ठेका प्रणाली को बन्द किया।

वैशाली के इतिहास और उसके महत्व पर प्रकाश डालते हुए मैंने एक निबन्ध आज यहां तैयार किया।

रात्रि को करीब दो लाख जनता महावीर के जन्म जयन्ति मनाने इकट्ठी हुई। उनके सम्मुख वैशाली के इतिहास और उसके महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा—

वैशाली और भगवान महावीर

सर्व नगर शिरोमणी वैशाली। जहां से कि अहिंसा परमोधर्म का सूत्र प्राप्त हुआ। इसी पवित्र नगरी ने भगवान महावीर "वर्धमान" की जन्म भूमि होने का विशेष गौरव प्राप्त किया है।

वैशाली के इतिहास में बड़े बड़े परिवर्तन हुए हैं। इस नगरी ने बड़ी राजनीतिक उथल पुथल देखी। यह वही नगरी है जहां वाल्मिकी रामायण में वर्णित है—"जब राम लक्ष्मण और विश्वामित्र ने यहां पदार्पण किया था तब यहां के राजा सुमति ने विशेष स्वागत किया था"। इस नगरी के पश्चिमी तट पर "गण्डक" नामक नदी बहती है। वैशाली को 'राजानगर' कहते थे।

बृहद् विष्णु पुराण में विदेह देश की सीमा बताते हुए लिखा है कि—विदेह के पूर्व में कौशिकी (आधुनिक कोसी) पश्चिम में गण्डकी दक्षिण में गंगा और उत्तर में हिमालय है। पूर्व से पश्चिम की ओर २४ योजन लगभग १८० मील। उत्तर में १६ योजन लगभग १२५ मील है।

भगवान महावीर एवं बुद्ध के समय में विदेह की राजधानी वैशाली ही थी। भगवान महावीर के कुल चातुर्मासों में से १९ चातुर्मास विदेह में हुए थे। वाणिज्य ग्राम और वैशाली में १२, मिथिला में ६ और १ अस्थिगांव में।

पुराणों में वैशाली :

पुराणों में इसके विशाल विशाला तथा वैशाली ये तीन नाम दिये गये हैं। पाटलीपुत्र से भी यह बहुत प्राचीन है। वाल्मिकी रामायण में विशाला के नाम से इसका और इसके संस्थापक तथा उसके वंशजों का वर्णन मिलता है। भगवान रामचन्द्र के समय से लगभग ८१ पीढ़ी पूर्व विशाला नगरी का निर्माण हो चुका था। यह भागवतपुराण एवं वाल्मिकी रामायण से साबित है। पाटलीपुत्र का निर्माण अजात शत्रु के समय में हुआ।

वैशाली की चर्चा बाल्मिकी रामायण आदि काण्ड के ४५ वें ४६ वें तथा ४७ वें सर्गों में की गई है। पैंतालीसवें सर्ग में यह कहा गया है कि इस स्थान पर देवों और दानवों ने समुद्र मन्थन की मन्त्रणा की थी। ४६ वें सर्ग में "रानादिति" की उस तपस्या का वर्णन है जो उसने इन्द्रों को मारने वाले पुत्र की उत्पत्ति के लिये की थी। उसी सर्ग के अन्त में तथा ४७ वें सर्ग के आरम्भ में इन्द्र के प्रयत्न से "राजा दिति" की तपस्या का विफल होना वर्णन है। इसके पश्चात् ४७ वें सर्ग के अन्त में वैशाली नगरी के निर्माण का इतिहास दिया गया है।

इस प्रकार केवल चार पुराणों में वैशाली की चर्चा पाई जाती है। वे ये हैं (१) वाराह पुराण (२) नारदीय पुराण (३) मार्कण्डेय पुराण और (४) श्री मद्भागवत। वाराह पुराण के सातवें अध्याय में विशाल राजा का (द्वारा) गया में पिंडदान करने से उनके पित्तरों की मुक्ति कही गई है। उसी पुराण के ४८ वें अध्याय में भी एक विशाल राजा का उल्लेख है। पर वे काशी नरेश थे वैशाली नरेश नहीं।

नारदीय पुराण के उत्तर काण्ड के ४४ वें अध्याय में भी विशाला नरेश विशाल की चर्चा की गई है और यह कहा गया है कि वे त्रेतायुग में थे। पुत्र हीन होने से पुत्र प्राप्ति के लिए उन्होंने पुरोहितों की राय से गया में पिंडदान किया। और अपने पिता, पितामह तथा प्रपितामह का नरक से उद्धार कराया, किन्तु वहां विशाल के पिता का नाम "सत" बतलाया है। सभव है इसका दूसरा नाम "सित' रहा है।

वैशाली की व्यवस्था प्रणाली :

ब्राह्मण युग में मैथीला और वैशाली दोनों राजतन्त्र थे। लछवी

राज्य में ७७०७ पुरुष थे। वे "राजन्यम्" कहलाते थे। वैशाली गण की स्थापना श्रीमद्भागवत के उल्लेखानुसार 'राम और महाभारत' युद्ध के बीच हुई। वैशाली में बहुत से छोटे बड़े न्यायालय थे। विभिन्न प्रकार के राजपुरुष इनके सभापति होते थे। उस समय के न्याय प्रणाली की विशेषता यह थी कि अभियुक्त (अपराधी) को तभी दंड मिलता था, जब कि वह क्रमशः सात न्यायालयों (सन्निधियों) द्वारा एक स्वर से अपराधी घोषित कर दिया जाता। इनमें से किसी एक के द्वारा वह (अपराधी) मुक्त भी कर दिया जा सकता था। इस प्रकार मानव स्वतन्त्रता की रक्षा की जाती थी। जिसकी उपमा सम्भवतः विश्व के इतिहास में नहीं है।

लिच्छविगण का एक बड़ा वर्ग था। वज्जि संघ के अन्य सदस्यों से संयुक्त रहना। जैसा कि भीष्म ने कहा था गणों को यदि जीवित रहना है तो उन्हें सदा संघ प्रणाली का अवलम्बन करना चाहिये। कौटिल्य ने भी इसी प्रकार अपने अर्थशास्त्र में भी उल्लेख किया है।

गणतंत्र राज्य में एक कौंसिल थी। उसमें नव मल्ल और नव लिच्छवि के सदस्य थे।। गणतंत्र करीब आठ सौ वर्ष चला।

वैशाली में लिच्छवियों के ७७०७ कुटुम्ब थे। हरेक कुटुम्ब का प्रमुख व्यक्ति गण सभा का सभासद होता था और वह गण राजा कहलाता था। लेकिन गण सभा की एक कार्य कारक सभा होती थी। जिसे अष्टकुलक कहते थे। आठ प्रमुख गण राजा इसके सदस्य थे। और प्रति गण सभा इनका चुनाव किया करती थी। आठ कुलक में से प्रत्येक का अलग अलग रंग निश्चित था। विशेष उत्सवों और अवसरों पर हर एक अष्ट कुलक अपने अपने निश्चित रंग के वस्त्र भूषण धारण करके उसी रंग के घोड़े पर सवार होकर आते थे।

जब गण सभा की बैठक होती थी, तो उसे गण संनिपात कहा जाता था और उस बैठक के स्थान और सभा भवन का नाम "सस्थागार" कहा जाता था। उस "सस्थागार" के निकट ही एक "पुष्करिणी" थी। जो कि आज घोमपोखर (तालाब) के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें केवल गण राजन ही स्नान करने के अधिकारी थे। जब नये गण राजन का अभिषेक होता, तब वह बड़े समारोह के साथ इस पुष्करिणी में स्नान करता था।

(१) वैशाली के सन्निकट एक कुण्डग्राम था। उस कुण्डग्राम में दो बस्तियां थी, एक क्षत्रिकुण्डग्राम, दूसरी ब्राह्मण कुण्डग्राम। एक में क्षत्रियों की बस्ती अधिक थी। दूसरे में ब्राह्मणों की। इनमें दोनों क्रमश एक दूसरे के पूर्व पश्चिम में थे। दोनों पास पास थे। दोनों बस्तियों के बीच एक बगीचा था। जो 'बहुशाल" चैत्य के नाम से विख्यात था। दोनों नगर के दो दो खण्ड थे। ब्राह्मण कुण्डपुर का दक्षिणी भाग ब्रह्मपुरी कहलाता था। क्यों कि यहां ब्राह्मणों का ही निवास था। दक्षिण ब्राह्मण कुण्डपुर के नायक ऋषभ-दत्त नाम के ब्राह्मण थे। जिनकी स्त्री का नाम देवानन्दा था। दोनों पार्श्वनाथ के द्वारा जैन धर्म को मानने वाले गृहस्थ थे। क्षत्रिय कुंड के नायक का नाम सिद्धार्थ था। इसके दो भाग थे। इसमें करीब ५०० घर "ज्ञाति" क्षत्रिय थे। तथा राजा की उपाधि से मंडित थे। वैशाली के तत्कालीन राजा का नाम चेटक था। जिनकी पुत्री त्रिशला का विवाह सिद्धार्थ राजा से हुआ था।

(२) कुमारग्राम, प्राकृत भाषानुसार "कम्मार" कर्मकार का अपभ्रंश है। अर्थात् कर्म का अर्थ है, मजदूरों का गाव, अर्थात् लुहारों का गाव। यह गांव क्षत्रिय कुण्डग्राम के पास ही था। महावीर स्वामी प्रवृज्या

(३) कोल्लाग सन्निवेश:—यह ग्राम क्षत्रिय कुण्डग्राम के नजदीक ही था। कुमार ग्राम से विहार कर भगवान महावीर यहाँ से पधारे थे और यहीं पारणा किया था। उपासकदशा के प्रथम अध्ययन में इस स्थान की स्थिति का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। यह नगर वाणिज्यग्राम के तथा इस वाणीयेके बीच में पड़ता था।

(४) वाणीय ग्राम। यह जैन सूत्र का "वाणिज्यग्राम" वणिकों का ग्राम है। गण्डकी नदी के दाहिने किनारे पर यह बड़ी भारी व्यापारी मण्डी थी। यहाँ बड़े बड़े धनाढ्य महाजनों की बस्तियाँ थी। यहाँ के एक करोड़पति का नाम आनन्द गाथापति था। जो महावीर स्वामी का भक्त था।

बौद्ध ग्रंथों के विशेषतः दीघनिकाय अनुशीलन से पता चलता है कि बुद्ध के समय में यह नगरी बड़ी समृद्धिशाली थी। इसमें ७७०७ महल थे। यहाँ एक वेणुग्राम था। यहाँ बुद्ध ने वर्षों तक निवास किया।

जैन ग्रंथ भी कल्पसूत्र में भगवान महावीर को विदेहे, विदेह दत्ते, विदेहजच्चे विदेहसूमाला अर्थात विदेह विदेह दत्ता विदेह जात्य। विदेहराजकुमार किया है। वे वैशालीक भी थे। जमाली भी इसी ग्राम के रहने वाले थे। जिन्होंने ५०० राजकुमारों के साथ दीक्षा ली थी।

भगवान महावीर ने प्रथम पारणा कोल्लाग सन्निवेश, में किया। जैन सूत्रों के विधान से ये दो ग्राम होते हैं। एक कोल्लाग सन्निवेश वाणिज्य ग्राम के पास दूसरा राजगृही के पास। एक दिन में चालीस मील जाना कठिन है क्यों कि राजगृही नामक स्थान वहाँ से ४ मील पड़ता है। अतः यही कोल्लाग सन्निवेश है।

भगवान महावीर ने प्रथम चातुर्मास अस्थिक ग्राम में दूसरा राजगृही में किया। राजगृही जाते समय श्वेताम्बिका नगरी से होकर गये और तदनन्तर गंगा को पार कर राजगृही में पहुँचे। बौद्ध ग्रन्थों से मालूम होता है कि श्वेताम्बिका श्रावस्ति से कपिल वस्तु की ओर जाते समय रास्ते मे पड़ती थी।

भगवान महावीर :

भगवान महावीर का निर्वाण "पावापुरी" मे माना जाता है। यह पावापुरी जो अभी मानी जाती है। उससे बिलकुल विपरीत बौद्ध ग्रन्थों के अनुशीलन मे मालूम पड़ता है कि यह जिला गोरख-पुर के पडरोना के पास पप-उर ही है। उस पावापुरी के अन्दर मल्ल गणतंत्र राज्य था। गणतंत्र की सीमा विदेह देश में मानी जाती है। राजगृही अग देश मे है। और वहा का राजा अजातशत्रु गणत त्र राज्यों से बिलकुल विरुद्ध था। सगीति परियासुत (दीघनीकाय का ३३ वा सुत) के अध्यन से पता चलता है कि यह मल्ल नामक गणतत्र लोगों की राजधानी थी। जिसको नये सस्थागार (संथागार) में बुद्ध ने निवास किया था। यह भी पता चलता है कि बुद्ध के आने के पहले ही "निगट्ठ नात पुत्र" का निर्वाण हो चुका था। बौद्ध ग्रन्थों में महावीर "निगट्ठ नात पुत्र श्री के नाम से प्रसिद्ध है। भ० महावीर का जन्म ई० स० ५९९ वर्ष पूर्व हुआ था। निर्वाण ५२७ वर्ष पूर्व।

विदेह दत्ता महावीर की माता का नाम था। आचारग सूत्र मे इस प्रकार लिखा है "समणस्सण भगवओ महावीरस्स, अम्मा वासिट्ठस्स गुत्तातिसेण तिन्नि नाम तजह। तिशला इवा, विदेह दिन्नावा, पियकारिणी इवा। यह नाम उनकी माता को इसलिए मिला था कि उनकी माता त्रिशला विदेह देश की नगरी वैशाली के

गण उपासक राजा चेटक की पुत्री थी। यह प्रान्त विदेह नाम से प्रसिद्ध था। इसी कारण माता त्रिशला को विदेह दत्ता कहा गया है।

निरयावलियाओं के अनुसार राजा चेटक वैशाली का अधिपति था और उसे परामर्श देने के लिए नौ मल्लि और नौ लिच्छवि गण राजा रहा करते थे। मल्ल जाति काशी में रहती थी और लिच्छवी कोशल में। इन दोनों जातियों का सम्मिलित गणतंत्र राज्य था। जिसकी राजधानी वैशाली और गणतंत्र का अध्यक्ष चेटक था। वैशाली नगरी में हैहय वंश में राजा चेटक का जन्म हुआ था। इस राजा की भिन्न भिन्न रानियों से ७ पुत्रियाँ थी। (१) प्रभावती (२) पद्मावती (३) मृगावती (४) शिवा (५) ज्येष्ठा (६) सुज्येष्ठा (७) और चेलना। प्रभावती वीतिभय के उदायन से पद्मावती चंपा के दधिवाहन से मृगावती कौशाम्बि के शतानिक से शिवा उज्जयनी के प्रद्योत से और ज्येष्ठा कुण्डग्राम के वर्धमान के बड़े भाई नन्दिवर्धन से सुज्येष्ठा और चेलना उस समय कुमारी ही थी।

अहिंसा के अवतार सत्य के पुजारी शान्ति के अग्रदूत भगवान महावीर का जन्म चैत्र सुदी १३ के दिन मध्यरात्री के पश्चात हुआ था।

अर्वाचीन वैशाली :

वैशाली बहुत ही प्रतिष्ठा प्राप्त स्थान है। यह तो निर्विवाद वस्तु है। जैन धर्म की अपेक्षा बौद्धों ने इस नगरी को बहुत महत्व दिया है। अभी भी बौद्ध राष्ट्रों में अनेक स्थानों में वैशाली नाम के नगर इसकी स्मृति के रूप में बसाये हैं। विदेशों से प्रतिवर्ष हजारों की संख्या में बौद्ध भिक्षु एवं गृहस्थ वैशाली की यात्रा को आते हैं और वहाँ की धूल पवित्र मानकर अपने सिर एवं शरीर पर लगाते हैं। पूछने पर वे कहते हैं कि यह धूल तथागत के चरणों से पवित्र बनी हुई है। वर्तमान समय में वैशाली छोटे से

ग्राम के रूप में है। पटना से उत्तर की ओर २३ मील आगे बढ़ने पर यह ग्राम आता है। अभी भी यहा महाराजा चेचट का अजय दुर्ग भग्नावशेष के रूप में अतीत की वीर गाथाएं और पवित्रता का नाद गूज रहा है। इस दुर्ग में से सरकार द्वारा खुदाई करने पर कुछ महत्त्वपूर्ण वस्तुए निकली हैं जिनको सुरक्षित म्युजियम बना कर रखी गई।

इस दुर्ग से पश्चिम की ओर निकटतम एक तालाब है। जिसमें लच्छवी गणतन्त्र के निर्वाचित अधिनायकों को ही स्नान करने का अधिकार था। इसका अभी नाम बोमपोम्वर है।

वैशाली से पूर्व में आधा मील आगे बढने पर एक हाई स्कूल आता है जिसका नाम तीर्थङ्कर भगवान महावीर हाई स्कूल है। यह हाई स्कूल स्थानीय व्यक्तियों द्वारा ही सचालित है। और वैशाली के अन्दर एक जनता द्वारा वैशाली सघ स्थापित किया हुआ है। जो कि इस ग्राम के विकास के लिए प्रति पल प्रयत्नशील रहता है।

भगवान महावीर का जन्म स्थान :

हाई स्कूल के उत्तर में २ मील की दूरी पर एक] वासु कुण्ड नामक ग्राम है। यह वही ग्राम है जो कि क्षत्रिय कुण्ड ग्राम के नाम से प्रसिद्ध था। यहा पर भ० म० के कुछ वशज लोग रहते हैं। उनके पास वंश परम्परा से कुछ एकड़ जमीन थी। जिसका कि वे सरकार को भूमिकर तो देते थे, किन्तु उस पर खेती नहीं करते थे। सरकारी कर्मचारियों द्वारा इसका कारण पूछने पर उन्होंने बताया कि यह वह स्थान है जहा महावीर का जन्म हुआ। परन्तु उन्हें यह मालूम नहीं था कि महावीर कौन है? क्योंकि महावीर हनुमानजी को भी कहते हैं।

सरकार के इतिहास विभाग ने इतिहास एवं कल्पसूत्र आदि ग्रन्थों का अवलोकन किया। और निश्चय किया कि यहा सिद्धार्थ पुत्र महावीर का जन्म हुआ है। यह शुभ समाचार विस्तार पूर्वक भग-

वान महावीर के वंशजों को मालूम हुआ तो बहुत ही उत्साह से यह जमीन बिहार सरकार को उसके विकास के लिए दे दी। करीब चार वर्ष पूर्व उसी स्थान पर भारत गणतन्त्र के राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद के कर कमलों द्वारा एक विशालकाय शिलान्यास किया गया है। जिसके एक तरफ हिन्दी में म० म० के जन्म का वर्णन है और दूसरी तरफ प्राकृत भाषा में।

सरकार द्वारा जयन्ती समारोह :

वैशाली में करीब १५ वर्ष से प्रत्येक चैत्र सुदी १३ के दिन भ महावीर का जन्म बिहार सरकार की तरफ से मनाया जाता है। इस प्रसंग पर करीब डेढ से २ लाख आदमी बहुत ही उत्साह पूर्वक उपस्थित होते हैं। और म० म० के प्रति अनन्य श्रद्धा व्यक्त करते हैं। मुझको भी दिनांक १९-४-२० ई० को बिहार सरकार के गवर्नर श्री आर आर० दिवाकर एवं वैशाली संघ के अति आग्रह से इस जयन्ती समारोह में सम्मिलित होने का एवं जनता को म० म का सन्देश सुनाने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

जैन प्राकृत इन्स्टिट्यूट :

भारत में मुख्यतया तीन संस्कृतियों का अग्रगण्य स्थान है। जैन, बौद्ध एवं वैदिक संस्कृति। भारत सरकार तीनों संस्कृतियों को जीवित रखने के लिए तीन इन्स्टिट्यूट चला रही है। बौद्ध संस्कृति के लिए नालन्दा वैदिक संस्कृति के लिए मैथिला (दरभंगा) एवं जैन संस्कृति के लिए वैशाली जैन प्राकृत इन्स्टिट्यूट मुजफ्फर में चला रही है। इसके प्रति वर्ष हजारों का व्यय सरकार करती है। इस इन्स्टिट्यूट के लिए निजि भवन बनाने का वैशाली संघ का निर्णय करने पर वासुकुण्ड ग्राम की जनता ने ३२ बीघा जमीन सरकार को भेंट की है। जिस पर कि हमारे राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू ने करीब चार वर्ष पूर्व शिलान्यास किया है। और साहु शान्तिप्रसाद जैन तथा

अन्य सद्गृहस्थ यहां अतिथि गृह, उपासना गृह आदि की योजनाएं बना रहे हैं।

इस प्रकार वैशाली जैनियों के लिए सभी तीर्थ स्थानों की अपेक्षा बहुत ही महत्व रखती है। अत समस्त जैनों से अनुरोध है कि वे अपनी कोन्फरेन्सों के साम्प्रदायिक ममत्व दूर कर इस पवित्र भूमि के विकास के लिए जल्दी से जल्दी प्रयत्न शील बनें। अन्यथा बौद्ध धर्मावलम्बी इस पवित्र भूमि को अपने हस्तगत कर लेंगे। इसमें कोई शंका नहीं है क्योंकि वे हजारों की संख्या में विदेश से आते हैं। और कुछ न कुछ निर्माण कार्य करके जाते हैं। किन्तु जैन अभी तक इस तरफ जागृत नहीं हुए हैं। अत इस ओर अपना ध्यान आकृष्ट करें। ऐसी आशा है।

वासुकुंड

ता० १४-४-५७ :

सरकार ने खोज करके यह निर्णय किया है कि अहिंसा के महान उपदेष्टा भगवान महावीर का जन्म-स्थान यहा पर ही है। यह जगह वैशाली से २ मील दूर है। महावीर जन्म दिन के अवसर पर यहा की साधारण जनता भी यहा पर दीपक जलाती है और लड्डू चढ़ाती है। यहां पर ही प्राकृत विद्यापीठ का शिलान्यास किया गया है और राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद के हाथ से शिलालेख की स्थापना की गई है। यहाँ पर, मीनापुर मे और वैशाली में आमतौर से लोग निरमिष भोजी हैं, यह भी महावीर प्रभु की परम्परा का प्रमाण है। यद्यपि अभी तक तो जैन लोग महावीर का जन्म स्थान एक दूसरी ही जगह मानते आये हैं, पर ऐतिहासिक प्रमाणों से यहीं पर महावीर का जन्म स्थान सिद्ध होता है।

मुजफ्फरपुर

ता० २५-४-५७ :

यह उत्तर बिहार का एक प्रमुख नगर है। बिहार में खादी का जो काम चलता है, उसका प्रधान केन्द्र यहां पर ही है। सैकड़ों कार्यकर्त्ता खादी के इस प्रधान कार्यालय में काम करते हैं और बिहार भर में विस्तृत लाखों रुपये के खादी कार्य का संयोजन करते हैं।

यहां पर ५ घर जैनों के हैं। बाकी गुजराती घर १६ और मारवाड़ियों के १० घर हैं। यहां पर ही अगला चातुर्मास किया जाय ऐसी आग्रह भरी प्रार्थना यहां के निवासियों की तरफ से आ रही है। हम ११-४-५७ को यहां आये तब से प्रतिदिन व्याख्यानों के कार्यक्रम रहते हैं और जनता अपार हर्ष तथा उत्साह के साथ भाग ले रही है। भले ही जैन श्रावकों के घर न हों पर लोगों में जो अनन्य श्रद्धा-भक्ति दीख पड़ती है, वह आश्चर्य पैदा करने वाली है।

ता० २६-४-५७ :

यहां की जनता के आग्रह को टालना कठिन था। इसलिए आखिर हमने यही निर्णय किया है कि इस वर्ष का चातुर्मास मुजफ्फरपुर में व्यतीत किया जाय। भक्त की भक्ति आखिर रंग लाती ही है। जो लोग जैन धर्मानुयायी भी नहीं हैं और जिनके साथ हमारा कोई पूर्व परिचय भी नहीं है उनकी इस प्रकार से अनिर्वचनीय भक्ति तथा श्रद्धा जब दृष्टिगोचर होती है, तब यह मानने के लिए हम बाध्य हो जाते हैं कि भक्त के सामने भगवान को भी झुकना पड़ता है।

जब हमने यह निर्णय किया कि अगला चातुर्मास यहां पर ही बितायेंगे तो सहज प्रश्न उपस्थित हुआ कि चातुर्मास के पहले के समय का कहां सदुपयोग किया जाय ? समस्या के साथ ही समाधान छिपा रहता है । नेपाल जाने का विचार तुरन्त सामने आया क्योंकि हजारी बाग की महारानी ललिता राज्य लक्ष्मी ने पहले ही नेपाल की विनति की थी, वे खुद नेपाल के राज्य कुमारी हैं । तथा मुजफ्फरपुर एक तरह से भारत नेपाल की सीमा के पास का ही शहर है । अत यह स्वाभाविक ही था कि नेपाल-यात्रा का कार्यक्रम बनाया जा सके । विचार विमर्श के बाद आखिर हमने यह निर्णय किया कि चातुर्मास के बीच का समय नेपाल यात्रा करके उपयोग में लाया जाय ।

रून्नि

ता० २८-४-५७ :

नेपाल की ओर हम बढे जा रहे हैं । उत्तर बिहार का यह प्रदेश भी अत्यंत सुहावना है । यहां के लोग अत्यत सरल और मेहनती होते हैं । आज हम अम्बर चरखा विद्यालय में ठहरे हैं । गाधीजी ने चरखे को अहिंसा का प्रतीक बनाया और चरखे के आधार पर सारे देश को सगठित करके आजादी हासिल की । उन्होंने विकेन्द्रित अर्थ व्यवस्था की मौलिक कल्पना उपस्थित की और कहा कि बडे बड़े कारखानों मे मानवता शोषित है । इसलिए घर घर में उद्योगों की स्थापना होनी चाहिए और चरखा एक ऐसा ग्रामोद्योग है, जो गांव-गाव और घर घर में प्रवेश पा सकता है ।

पहले का चरखा बहुत अविकसित था । बुद्धिजीवि वर्ग के लोग 'बुढ़िया का चरखा' कहकर उसकी हसी उडाते थे । तब गाँधीजी ने चरखे में सुधार करने की तरफ ध्यान दिया बाँस चरखे से लेकर

किसान चक्र, परवदा चक्र और सुदर्शन चक्र के रूप में उसके विविध रूप सुविकसित होते गए। गाँधीजी के निधन के बाद भी चरखे का अर्थशास्त्र उनके शिष्यों ने जीवित रखा और इसी के परिणाम स्वरूप अम्बर चरखे का आविष्कार हुआ।

अम्बर चरखा गरीबों के लिए मानप्रद सिद्ध हुआ। जो चरखा मिल के मुकाबले में किसी तरह टिक नहीं सकता था उसमें अम्बर चरखे ने नई क्रांति पैदा की और मिल के सामने भी खड़ा रह सके ऐसी एक चीज देश को मिलगई। हिन्दुस्तान में आज 'अम्बर चरखा' बहुत लोक प्रिय सिद्ध हो रहा है।

यहाँ पर इसी अम्बर चरखे का प्रशिक्षण दिया जाता है। आजकल करीब २० स्त्रियाँ प्रशिक्षण ले रही हैं। ३ महीने में अम्बर चरखे की पूरी शिक्षा प्राप्त हो जाती है।

सीता मढी

ता० २६-४-५७ :

हम जैसे साधु अपनी मंजिल पाने के लिए बढ़े चले जा रहे हैं। रास्ते में कहीं सम्मान तो कहीं अपमान। ठीक भी है। आज साधु-वेष के नाम पर जो दम्भ चलता है, उसके कारण लोगों को साधुओं के प्रति कुछ नफरत पैदा हो तो आश्चर्य ही क्या है? कोई साधु भंग और गाँजे का नशेबाज होता है तो कोई भूखों मरने के बजाय साधु वेश धारण किये हुए है। कोई लोगों को उनका भविष्य बता कर ठगता है तो कोई किसी दूसरी राह से अपना उल्लू सीधा कर लेता है।

सीतामढी, उत्तर बिहार का एक प्रमुख नगर है। यहा पर सराबगियों के ५ घर हैं। हमने व्याख्यानों का कार्यक्रम भी रखा और धर्म चर्चा भी खूब हुई। धर्म चर्चा में एक ऐसा रस है जो जीवन की शुष्कता को मिटा देता है और उसे मधुर सुखद बना देता है। लोग आते हैं तरह तरह के सवाल पूछते है शास्त्रों की बातें सामने आती हैं तर्क वितर्क होते हैं और इन सबके बाद एक सुखद समाधान मिलता है। धर्म चर्चा में भिन्न धर्मों, शास्त्रों, ग्रन्थों, परम्पराओं आदि का विश्लेषण होता है और इन सब में जो जीवन को समुन्नत बनाने का मार्ग मिलता है उसे स्वीकार करने की प्रेरणा होती है। इस दृष्टि से धर्म चर्चा का महत्व प्रवचन से कम नहीं। प्रवचन मे वक्ता किसी विशिष्ट समय का विश्लेषण करता है। पर धर्म चर्चा में प्रश्नकर्ताओं के साथ वक्ता का तादात्म्य संबंध जुड़ जाता है। हमारी यात्रा मे इस प्रकार धर्म चर्चा का अवसर खूब आता है।

सीतामढ़ी चम्पारण जिले का मुख्य शहर है। यह वही चम्पारण जिला है, जहा महात्मा गांधी ने ऐतिहासिक किसान सत्याग्रह किया था। किसानों पर होने वाले अन्याय के विरोध में जब गाधीजी ने आवाज उठाई तो सारे देश की नजरें चम्पारण की तरफ लग गई थी। सत्याग्रह के इतिहास में चम्पारण का एक तीर्थ स्थान की भाति महत्वपूर्ण स्थान है।

लोकहा

ता० २–५–५७ :

आज हम जिस गाव में ठहरे हैं, वहा हमने देखा कि छुआ-छूत का भूत अभी तक काफी मात्रा में विद्यमान है। यहा तक कि एक मुहल्ले के लोग दूसरे मुहल्ले में पानी भरने के लिए भी नहीं

जाते। इसी तरह एक जाति की कोई स्त्री यदि पानी भरती हो तो दूसरी जाति की स्त्री तब तक वहां नहीं जाएगी जब तक वह स्त्री वहां से हट न जाय।

हिन्दुस्तान को इस छुआ छूत के रोग ने बहुत नीचे गिराया है। मानव-मात्र की समानता के सिद्धान्त से दूर होकर ऊँच-नीच की भ्रांति पूर्ण मान्यताओं में यह देश फंसा इसीलिए हम गुलाम होना पड़ा गरीबी के दल दल में फंसना पड़ा और दुनिया के पिछड़े हुए देशों में इसकी गिनती होने लगी।

इस देश में कोई भी चीज चरमोत्कृष्ट अवस्था में पहुँच जाती है इसलिए आदर्श और व्यवहार में एक लम्बी खाई उत्पन्न हो जाती है। एक तरफ तो अद्वैतवाद का सिद्धान्त चलता है। जड़ चेतन सब में ईश्वर के होने का सशक्त प्रतिपादित किया जाता है। दूसरी ओर मानव-मानव के बीच घृणा के बीज बोये जाते हैं। ऊँच नीच की संकुचित दीवारें खड़ी की जाती हैं। यह स्थिति कितनी भयावह दुखद और हास्यास्पद है। यह गांव नेपाल का है हमने नेपाल में "गौर" से प्रवेश किया। यह प्रदेश नेपाल की तराई प्रदेश कहा जाता है। तराई प्रदेश में शिक्षा की बहुत कमी देखने में आई। गरीबी भी अधिक है।

वीर गज

ता ४-५-१७।

यह नेपाल का प्रवेश-द्वार है। वीरगंज में प्रवेश करते ही मन में उत्साह की लहर दौड़ गई। एक महिने की परीक्षा और पद यात्रा के बाद नेपाल का प्रवेश द्वार आया। सुरम्य प्राकृतिक सौन्दर्य के

वातावरण में जाते हुए यदि मन आनन्द-विभोर हो उठे, तो इसमें क्या आश्चर्य ? मनुष्य जब अपनी मंजिल के निकट पहुँचता है तो उमंगें दुगुने जोश के साथ लहरा उठती है।

उधर रक्सोल, हिन्दुस्तान का आखरी रेल्वे स्टेशन है और इधर ऊंचे हिमालय के मस्तक पर बसा हुआ रमणीय नेपाल है।

वीरगंज एक मध्यम स्थिति का कस्बा है। यहा मारवाड़ी भाइयों के भी १५० के लगभग घर है। कालेज भी है। यहा से नेपाल जाने के लिए रेल्वे मिलती है।

अमलेखगंज

ता० ८-५-५७ :

यह स्थान स्थल प्रदेश का आखिरी स्थान है। रेल्वे भी यहां समाप्त होजाती है। आगे दुर्गम घाटियों में से एक सड़क का मार्ग है जिसके द्वारा ही सारा यातायात सम्पन्न होता है। इसे त्रिभुवन राजपथ कहते हैं। भारत की सैन्य टुकड़ियों ने इसे बनाई है। सड़क भी साधारण स्थिति की है। नदी के किनारे से बढता हुआ मार्ग अत्यन्त सुहावने दृश्यों से भरा है। ऐसा घनघोर जगल कि जिसकी कल्पना ही की जा सकती है। इस घनघोर जंगल से आच्छादित दोनों ओर ऊंची पहाड़ियाँ तथा कलकल करती हुई बहने वाली स्वच्छ सलिला सरिता। नेपाल की राजधानी काठमाडू तक ऐसा ही सुहावना दृश्य है।

अमलेख गंज एक अच्छा व्यापार केन्द्र है। एक ओर सारा स्थल प्रदेश तथा दूसरी ओर पर्वतीय प्रदेश काठमाडू आदि। इन दोनों का मध्यबिन्दु है यह अमलेखगंज, जो दोनों को जोड़ने का

काम करता है। यहां भी मारवाड़ी व्यापारियों के १२ घर हैं। मारवाड़ी समाज एक ऐसा व्यापार कुशल समाज है जो दुर्गम से दुर्गम स्थान में भी पहुँच कर व्यापार-कार्य करता है। व्यापार समाज की सुव्यवस्था के लिए अत्यन्त आवश्यक है। हालांकि आज तो व्यापार में प्रामाणिकता, नैतिकता और सेवा भावना का अभाव हो गया है। व्यापार को केवल अधिकाधिक अर्थ-संग्रह का साधन बना लिया गया है। परन्तु यदि शुद्ध व्यापारिक नियमों के अनुसार प्रामाणिकता पूर्वक व्यापार किया जाय तो उसमें मारवाड़ी समाज का उल्लेखनीय योगदान माना जा सकता है।

भैंसिया

ता ६-४-५७ :

नेपाली भाइयों से अच्छा संपर्क आरहा है। इस प्रकार से जैन साधुओं का संपर्क इन लोगों के लिए सर्वथा नई बात है। इस लिये बड़ी उत्सुकता के साथ आते हैं। हमने अपना यह नित्यक्रम बनाया है कि रात्रि-काल में नेपाली भाषा में नेपाली भाइयों द्वारा ही भजन कीर्तन हो। यह कार्यक्रम बड़ा रुचिकर सिद्ध हो रहा है। नेपालियों में ईश्वर और देवी देवताओं के प्रति बहुत श्रद्धा होती है। इसलिए वे बड़े तन्मय होकर भजन कीर्तन का कार्यक्रम करते हैं।

पहाड़ों पर रहने वाले ये नेपाली स्त्री पुरुष बड़े परिश्रमी पुरुषार्थी और सरल स्वभाव के होते हैं। यहां स्त्रियां भी पुरुषों की तरह ही काम करती हैं। खेती की मुख्य जिम्मेवारी स्त्रियों पर ही होती है। ये लोग पर्वत चोटियों पर लघु-काय कुटिया का निर्माण बड़े चातुर्य के साथ करते हैं। कुटिया का रूप बहुत लुभावना होता

है। दूर से ऐसा ही प्रतीत होता है मानो कोई ऋषि कुटिया ही है। इन कुटियाओं के आस पास छोटी छोटी क्यारियों में ये लोग खेती करते हैं। दूर से ऐसा लगता है मानों ये क्यारिया नहीं बल्कि झोपड़ियों में जाने के लिये पहाड़ पर सीढ़ीयों का निर्माण किया गया है पर ये सच में सीढीया नहीं बल्कि क्यारिया होती है। जगह २ पर निर्मल स्वच्छ सलिल के स्रोत और झरने मन को मोह लेते हैं। प्रकृति मानों सोलह श्रृङ्गार करके यहा धरती पर अवतरित हो गई है। माग भी इस प्रकार टेढ़ी मेढ़ी घाटियों के बीच से निकलता है कि दूर से आभास तक नहीं होता कि आगे मार्ग जा रहा है। ऐसा ही लगता है मानों एक पर्वत श्रेणी दूसरी पर्वत श्रेणी से सट-कर खडी है, पर आगे जाने पर रहस्य खुल जाता है और स्पष्ट ही ये पर्वत श्रेणिया एक दूसरी से बहुत दूर हो जाती है।

इस प्रकार के मार्गों में से हम आगे बढ़े चले जा रहे हैं। यहा से दो रास्ते हैं एक रास्ता सडक का है जो कि करीब ८ मील के चक्कर का है दूसरे भीमफेरी का है जो पगरास्ता पहाड़ियों पर से नेपाल काठमाड़ू जाता है।

भीमफेरी

ता० १०–५–५७ :

यह भीमफेरी एक ऐतिहासिक स्थान है। ऐसा कहा जाता है कि लाक्षागृह से बचकर भागे हुए पाडवों ने इसी जगह विश्राम पाया था। और भीम ने यहीं पर हिडम्बा के साथ पाणिग्रहण (फेरी) किया था।

इधर पहाड़ी जातियों के लोग बहुत असरकृत भी मासाहारी तथा निर्दयी इतने कि खुले बाजारों में भैंसें काटते हैं।

राक्षसों की कल्पना ऐसे ही लोगों के आधार पर निर्मित हुई होगी। नेपाल के आड़े-टेढ़े रास्ते और ऊंची-नीची घाटियों की झोपड़ियों में रहने वाले ये लोग आज के युग के लिए चुनौती हैं। यह एक आवश्यक काम है कि इन लोगों का सुधार किया जाय तथा इन्हें मांसाहारी असंस्कृतिक जीवन से मुक्ति दिलाई जाय।

जिस युग में नेपाल की राजधानी काठमांडू तक पहुँचने के अन्य विकसित मार्ग नहीं थे तब भीमफेदी के पैदल-रास्ते से ही लोग काठमांडू पहुँचा करते थे। अब भी वह रास्ता है। पर भैंसिया से काठमांडू तक ८ मील की एक सड़क हिन्द-सरकार ने बनाई है। जिसका नाम त्रिभुवन राजपथ है। ८१२६ फीट की चढ़ाई नांघकर इस मार्ग से ही हमें काठमांडू पहुँचना है।

कुलेखानी

ता० ११-५-५७ :

भैंसिया और भीमफेदी के बीच में एक गांव है धुरसी। इस गांव से काठमांडू तक तार के सहारे से चलने वाली ट्रोलियों का मार्ग है। वह मार्ग आज हमने भीमफेदी से १ मील पूर्व दूर देखा। पहाड़ की चढ़ाई बहुत कठिन है। इसलिए इस आकाश-मार्ग का निर्माण किया गया है।

रास्ते में गढ़ी-पुलिस चौकी आई। यहां पर कमाई के साथ विदेशी-यात्रियों के सामान और पासपोर्ट की जांच की जाती है। हमसे भी पासपोर्ट के लिए पूछा गया। हमने अधिकारियों को बताया कि जैन साधुओं के कुछ विशिष्ट प्रकार के नियम होते हैं। ये किसी एक देश के नहीं होते। सारे संसार में मुक्त-विचरण करने

...लिए ऐसे साधुओं के लिए किसी प्रकार का प्रतिबन्ध भी नहीं होता। ... अप्रतिबन्ध विहारी होते हैं। ऐसा समझाने पर अधिकारी मान गये और हमें आगे बढ़ने का मार्ग मिला।

एक वह भी युग था, जब नेपाल, हिन्दुस्तान का ही अंग था। बर्मा, सिलोन और अफगानिस्थान तक भारत की सीमाएं थी, तथा यहा जैन धर्म का बोल बाला था पर एक यह भी युग है जब किसी मुनियों को नेपाल आदि देशों में मुक्त-प्रवेश का भी अधिकार नहीं है। संपूर्ण मानव-जाति एक है और सारे संसार में प्रत्येक मनुष्य को कहीं भी स्वतंत्र विचरण का अधिकार प्राप्त हो, तभी विश्व-मानुषत्व की एवं विश्व-बंधुत्व की कल्पना साकार होगी। कम से कम उन राष्ट्रों में, जो कभी एक ही राष्ट्र के अंग रहे है मुक्त-प्रवेश की सुविधा मिलनी ही चाहिए।

चितलांग

ता० ११-५-५७ :

प्रातःकाल हम कुलेखानी में थे। सायंकाल यहां आये। कुलेखानी तो नदी के किनारे पर ही बसा है। चितलांग तक रास्ते में पानी के झरनों का अपरिमित आनन्द मिला। नदियों व नालों पर झूलने वाले पुल बने हुए हैं। इन पुलों के नीचे से गुजारव करता हुआ पानी बहता है। एक झरने की शब्द-झंकृतियां कानों में गूंजती ही रहती है कि दूसरा झरना आजाता है। इनकी संख्या इतनी अधिक है कि गिनती करना भी संभव नहीं। जैसे कोई वाद्य बज रहा हो, या स र ग म का आलाप हो रहा हो, ऐसा ही भान होता है।

बाजार का और व्यवसाय का जीवन इन गांवों में नहीं के बराबर है। अत इन लोगों के लिए रात्रि फिर शांति तथा विश्राम का संदेश लेकर आती है। आज कल शहर में जहां व्यापार तथा उद्योग ही जीवन के संचालन का प्रधान माध्यम है सूर्यास्त के बाद चहल-पहल आरंभ होती है। बारह-एक बजे तक सिनेमा चलता है। होटल चलते हैं। लोग जागते हैं बिजली के तेज प्रकाश में रहते हैं इससे न केवल प्राकृतिक नियम टूटता है बल्कि शरीर पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है विदेशों में कई जगह बाजार २४ घंटों लगता है। हम जैन मुनियों के लिए तो यहीं भी एक व्यवस्थित जीवन-क्रम रहता है। सूर्यास्त से पहले पहले आहार आदि की क्रियाओं से निवृत हो जाते हैं। रात्रि का उपयोग विश्राम चिन्तन और ध्यान योग में करते हैं।

यहां के लोग किस प्रकार खेती करते हैं, यह विशेष दर्शनीय है। ऊंचा-नीचा पहाड़ी प्रदेश होने के कारण हल-बैल से तो खेती हो नहीं सकती। सारी खेती हाथ से ही होती है। रस्सू के नेता कहते हैं हाथ से की जाने वाली खेती न केवल सुन्दर होती है। अधिक उसमें उत्पादन भी ज्यादा होता है। एक एक पौधे से किसान का सीधा संपर्क आता है। फिर कुछ अब शास्त्रियों का यह भी कहना है कि एक समय ऐसा आयेगा, जब इस धरती पर मनुष्य संख्या अत्यधिक बढ़ जाने से बैलों को खिलाने के लिए और उनका पालन करने के लिए मनुष्य के पास जमीन ही नहीं बचेगी। यहां के लोगों ने तो प्राकृतिक अर्थशास्त्र से हाथ की खेती स्वभावत ही अपना ली है। खेती का रस्म इतना कलात्मक होता है कि देखते ही बनता है। कौन कहता है कि इन जनपद देहाती किसानों को कला का ज्ञान नहीं है।

काठमांडू

ता० १३-५-५७ :

नेपाल की यह सुप्रसिद्ध नगरी और राजधानी है। २४ मील के घेरे में दूर दूर बसी हुई नेपाल की इस रमणीय नगरी में पहुँच कर एक संतोष हुआ। काठ मांडू आधुनिक सभी साधनों से सम्पन्न है। वैसे नेपाल का पूरा क्षेत्रफल ५४,३४३ वर्ग मील है। जिसमें ३१,८२० गाव है और लगभग १ करोड़ की आबादी है। नेपाल का हृदय है काठमाडू। साधुओं के भक्त नेपाल नरेश ने किसी युग में अपने परम श्रद्धास्पद गुरुदेव के लिए एक ही वृक्ष की लकड़ी का एक 'काष्ठ मंडप' तैयार करवाया। धीरे धीरे आगे चलकर काष्ठ मडप के नाम को ही आम जनता ने काठमांडू कहकर प्रसिद्ध कर दिया।

यहीं है विश्व विख्यात हिन्दुओं के पशुपति नाथ का विशाल मन्दिर, जिसके सामने वागमती नदी अपने स्वच्छ प्रवाह के साथ बहती है। भगवान नीलकठ की एक सुषुप्तावस्था की प्रतिमा भी यहीं पर है, जिसके दर्शन के लिए यात्रियों को जलकुड के बीच जाना पड़ता है। वहा निरन्तर २२ धाराएँ गिरती है। इसी तरह प्राचीन कला-वैभव से सम्पन्न अनेक बुद्ध, कृष्ण आदि के मन्दिर काठमाडू में एक छोर से दूसरे छोर तक फैले हुए हैं।

यहा पर कहीं कहीं बुद्ध की प्रतिमाओं पर सर्प का चिन्ह भी देखने को मिलता है। एक विद्वान जैन यात्री ने इस प्रसग का उल्लेख करते हुए लिखा है "भगवान बुद्ध की प्रतिमा पर सप का जो चिन्ह है, उससे जैन तीर्थङ्कर पार्श्वनाथ की प्रतिमा का अद्भुत साम्य है। बारह वर्षीय दुर्भिक्ष के समय आचार्य भद्रबाहु ने नेपाल

में प्रवास किया था। पार्श्वनाथ उनके गुरु थे। उन्होंने तत्पश्चात् पार्श्वनाथ की प्रतिमाएं स्थापित करवाई हों और वे ही कालान्तर में बुद्ध-प्रतिमाओं के रूप में परिवर्तित हो गई हों। जैन साधुओं की नेपाल यात्रा स्थगित होने से हजारों वर्षों का परिणाम यह हो सकता है कि जिन-मूर्तियों को बुद्ध मूर्तियों के रूप में लोग पूजने लग जांय। बुद्ध परिचित रहे हैं, इसलिए पार्श्वनाथ का परिचय बुद्ध में समाहित हो गया हो।"

(गढ़ के संपर्क पृष्ठ १७)

नेपाल में द्वितीय भद्रबाहु स्वामी आठवीं शताब्दी में विचरण कर रहे थे उनको पूर्वो का ज्ञान था उनसे ज्ञान संपादन करने के लिये स्थूलीभद्रजी ने अपने दो साधुओं को लेकर नेपाल की ओर प्रयाण किया था तब नेपाल की विकट पहाड़ियों की चढ़ाई न चढ़ाकर स्थूलीभद्रजी के दो साथी साधु पुन. लौट गये और सिर्फ स्थूलीभद्रजी भद्रबाहु स्वामी की सेवा में पहुंचे। सुना है कि नेपाल में १२ वीं शताब्दी तक जैन धर्म था।

ता० २७-४-५७ :

दो सप्ताह तक नेपाल की इस राजधानी में बिताकर आज हम विदा हो रहे हैं। इस अरसे में जो मुख्य कार्यक्रम रहे उनमें से एक है नेपाल राज्य के कुछ प्रमुख व्यक्तियों से मिलन और दूसरा है २५ सौ वर्ष के बाद सारे संसार में मनाई जाने वाली बुद्धजयंती में भाग लेना।

जिन प्रमुख व्यक्तियों से मिलन हुआ उनमें से नेपाल नरेश श्री महेन्द्र वीर विक्रम वर्तमान प्रधान मन्त्री टंकप्रसाद आचार्य समरजं कर्नेल श्री केशर शमशेर जंगबहादुर आदि के नाम विशेष

रूप से उल्लेखनीय है। सभी के साथ जैन धर्म अहिंसा आदि विषयों पर बडी गभीरता के साथ विचार-विमर्श हुआ। सभी ने जैन साधुओं के जीवन मे उनकी आचार-क्रियाओं में और उनके व्रतों को जानने मे बडी अभिरुचि प्रगट की।

बुद्ध जयती का आयोजन वैसे तो सारे ससार में हो रहा है पर भारत तथा एशिया के अन्य बौद्ध देशों में बड़े जोर-शोर के साथ यह कार्यक्रम मनाया जा रहा है। हर जगह पर लाखों रुपये व्यय हो रहे हैं और विशाल पैमाने पर आयोजन किये जा रहे हैं यहा पर भी बहुत बड़े रूप में समारोह था, इस समारोह में मैंने अहिंसा के सूक्ष्म विश्लेषण के साथ बुद्ध के जीवन पर प्रकाश डाला--

"२५ सौ वर्ष पहले हुए महात्मा बुद्ध से ५६ वर्ष पूर्व भगवान महावीर हुए हैं जिन्होंने ससार को जो प्रेम, करुणा और मैत्रि का मार्ग बताया था, उसकी आज भी उतनी ही आवश्यकता है। क्योंकि ससार विनाश के कगारे पर खडा है। आणविक प्रतिस्पर्धा ने सपूर्ण मानव जाति के लिए खतरा पैदा कर दिया है। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र पर आख गडाए बैठा है। अपनी आर्थिक समृद्धि के लिए दूसरे को गुलाम बनाने में आज के राजनीतिज्ञ किंचित भी नहीं झिझकते। ऐसी दशा मे दुनिया का भविष्य अत्यत अधकार पूर्ण है'।

इसके अलावा एक और मुख्य आयोजन हमने किया। जैन, बौद्ध, और वैदिक धर्मावलम्बी एक साथ मिलकर एक अहिंसा सम्मेलन में आये। यह सम्मेलन नेपाल में १५०० सौ वर्ष के बाद सर्व प्रथम था। इस तरह के सम्मेलनों की आज भी कितनी आवश्यकता है, यह कहने की जरुरत नहीं। क्योंकि सभी

धर्मोपदेशकों के कंधों पर आज के समस्त सद्गुण वातावरण में यह जिम्मेदारी है कि आतंक, भय और हिंसा से संत्रस्त मानव को अहिंसा का मार्ग दिखाएं। धर्म स्थापना का यही वास्तविक उद्देश्य है। धर्म के छोटे मोटे साम्प्रदायिक मतभेदों को लेकर लड़ने से अब काम नहीं चलेगा। आज का मानव अंधेरे में कुछ टटोल रहा है, उसे मार्ग नहीं मिल रहा है। जब अहिंसा का प्रकाश फैलेगा तब अपने आप मनुष्य सशक्त होकर आगे बढ़ सकेगा।

इस सम्मेलन में भी मैंने अहिंसा का तात्त्विक विश्लेषण उपस्थित किया —

शक्ति का अक्षय स्रोत अहिंसा

(सामाजिक जीवन छोड़कर किसी गिरि कन्दरा में बैठकर कोई कहे कि मैं अहिंसा का पालन कर रहा हूँ तो यह कोई बड़ी बात नहीं। बड़ी बात है—दूकान पर सौदा लेते और देते समय यहां तक कि किसी को दण्ड देते और युद्ध करते समय भी अहिंसक बने रहना। मुनिश्री का यह विश्लेषणात्मक मानव अहिंसा के सम्बन्ध में नई दृष्टि नया विचार और नया चिन्तन देगा और तार्किक बुद्धि को नया समाधान।—सं०)

'मानव-विचार, मनन और मंथन में सुषम शक्तियों का पुञ्ज है। यह अपने जीवन को नितान्त उज्ज्वल बना सकता है। वैसे तो प्राणी मात्र में विवेक और पुरुषत्व जैसे गुणों की उपलब्धि की सम्भावनाएं हैं, किन्तु वे अपनी शारीरिक एवं मानसिक दुर्बलताओं के कारण दैवी सम्पत्ति के महत्व को हृदयङ्गम करने में बहुत

रूप अथवा स्थान है। नारकीय जीवों में शान्ति का अभाव रहता है तथा वे वातावरण से अभिभूत रहने के कारण, निरन्तर व्यथित एवं अशान्त रहते हैं। उनका सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है कि वे मानवों के समान अपने हिताहित कृत्याकृत्य को परख नहीं सकते। विवेक-बुद्धि का उनमें अभाव है। स्वर्गीय देवतागण भोग-विलास-मय जीवन व्यतीत करते हैं, जिससे केवल तप और त्याग से प्राप्त परमानन्द से वे वंचित ही रहते हैं। इस भांति केवल मानव ही एक ऐसा विचारशील एवं मननशील प्राणी है, जिसमें अपने वास्तविक हिताहित कृत्याकृत्य को परखने की विलक्षण क्षमता पाई जाती है। मानव ही अपने जीवन की संजीवन-विद्या के रहस्य को समझ सकता है।

समस्त भारतीय वाङ्मय एवं प्राचीन उपलब्ध साहित्य की सर्व प्रथम सर्व प्रमुख अन्तर्चेतना एवं अन्तर्प्रेरणा है—अहिंसा। हमारे समस्त पुराण एवं इतिहास ग्रन्थ अहिंसा के गुरु-गम्भीर जयघोष से गुञ्जित हैं। सर्वत्र ही इस बात पर जोर दिया गया है कि मानव-जीवन की सफलता एवं सिद्धि के लिए अहिंसा तत्त्व को जानना अत्यावश्यक है। यह अहिंसा तत्त्व वास्तव में अखिल शक्तियों का अजस्र स्रोत है। वैसे तो अहिंसा तत्त्व की विशद व्याख्या महाकाय ग्रन्थ द्वारा ही विवेचित की जा सकती है, फिर भी उसका सूक्ष्म आभास करना ही आज के प्रवचन का मूलोद्देश्य है।

अहिंसा के दो प्रमाण पक्ष हैं, जिनका हृदयङ्गम किया जाना सबसे पहले आवश्यक होगा। अहिंसा, विधेयात्मक होती है एवं निषेधात्मक भी। अहिंसा का साधारण अथवा विविध अर्थों में प्रयोग का अभिप्राय है—किसी को पीड़ा नहीं पहुँचाना, हिंसा न करना। यह तो केवल अहिंसा का निषेधात्मक अभिप्राय हुआ।

किन्तु अहिंसा का एक और अधिक गहन एवं रहस्यात्मक अभिप्राय भी है जिसका आशय है—अपने जीवन की विविध शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक क्रियाओं प्रक्रियाओं द्वारा किसी प्रकार की अशान्ति विक्षोभ एवं विषाद की अनुभूति होने की सम्भावना ही नष्ट हो जाए।

निषेधात्मक अहिंसा—इस तत्त्व के भी अनेक पक्ष हैं, जो मननीय एवं विचारणीय हैं। यह किसी गुण-विशेष का द्योतक न होकर एक सर्वतोमुखी आध्यात्मिक अनुशासन का प्रतीक है। सूक्ष्म दृष्टि से देखे जाने पर इसमें सभी उत्तम गुणों का समावेश पाया जाता है। उदाहरणार्थ क्षमा से अभिप्राय है—यदि कोई व्यक्ति, अपनी इच्छा के विरुद्ध भी व्यवहार करे, तो भी हमारे हृदय में उसके लिए रंचमात्र भी रोष न उपजे। यही नहीं, हम उसके अज्ञान का बोध कराने के अभिप्राय से उसके साथ ऐसा मधुर एवं स्नेहपूर्ण व्यवहार करें कि उसे अपनी भूल का स्वयं ही अनुभव हो जाए। क्षमा की परिणति एवं चरम अभिव्यञ्जना यही है। ध्यान पूर्वक विचार करने पर ज्ञात होगा कि क्षमा के इस सक्रिय रूप का मूल में अहिंसा ही प्रमुख आधार है। जो व्यक्ति क्रोध या आवेश के परिणाम में स्वयं जला जा रहा है उसके साथ आक्रोशपूर्ण व्यवहार तो उसकी क्रोधाग्नि में घृत-सिंचन का काम ही करेगा। ऐसा करने से तो स्वयं क्लेश की प्राप्ति एवं दूसरे को भी क्लेश का परिणाम मिलने के सिवाय कुछ भी हाथ नहीं लगेगा। ऐसे में स्वयं अहिंसक भाव को अपनाने से ही आत्म-सन्तोष एवं पर-मार्ग प्रदर्शन सम्भव हो पायेंगे। जो अपने साथ बुराई करे, उसके साथ हम मृदु-स्निग्ध व्यवहार करें—जहर देने वाले को अमृत दें और पत्थर बरसाने वाले पर फूलों की विरोर करें—ये सभी उदारतापूर्ण व्यवहार निषेधात्मक अहिंसा के संभावन पक्ष हैं।

विधेयात्मक अहिंसा—अहिंसा तत्त्व का गहनतर एवं रहस्यात्मक तत्त्व ज्ञान है और तदनुसार अपने जीवन का नव सृजन है। उससे आध्यात्मिक अर्थ-दृष्टि की उपलब्धि होती है। यह एक प्रकार से मानव जीवन का सुसंस्कृत, सुविकसित एवं समुज्ज्वल विकास का राज-मार्ग है। उससे सभी प्राणियों में समान भाव, शान्ति-पूर्ण व्यवहार एवं धैर्यशीलता के अद्भुत गुणों की सिद्धि होती है। यह विधेयात्मक अहिंसा की साधना, निरन्तर अध्यवसाय स्वात्मानुशासन एवं तपस्या की अपेक्षा रखती है और जल्दबाजी में सिद्ध नहीं हो सकती। श्रद्धा, विश्वास एवं तदर्थ कष्ट सहन की उद्यतता, उसके अनिवार्य उपकरण हैं। अहिंसा के इस बलशाली पक्ष से नीच विचार, अधीरता एवं क्षुद्रता के अवगुण विनष्ट हो जाते हैं। महाकवि मिल्टन ने अपनी एक विश्रुत कविता में कहा है कि—"अहिंसा एवं क्षमा अपूर्व गुण हैं, जिनके द्वारा मानव सर्वोत्तम सिद्धियों को प्राप्त कर सकता है और मानव-गुणों का मुख्य द्वार अहिंसा अथवा निर्वैर ही है।"

प्रेम अहिंसा का उद्गम स्रोत है। इसका प्रारम्भ होता है ममत्त्व से। और इसकी परिणति होती है तादात्म्य में। जब दूसरे के दुःख दर्द को हम अपना दुःख दर्द मानने लगते हैं तो हमारे मन में अहिंसा का प्रादुर्भाव होता है। इस भांति यह स्पष्ट है कि अहिंसा तथा उत्तम व्यवहार के मूल में प्रेम ही मौलिक तत्त्व है। प्रेम-मूलक अहिंसा के द्वारा ही एक दूसरे को परखने का अवसर मिलता है। ऐसी अहिंसा के राज्य में भय का अस्तित्व नहीं रहता। आज मानव को जितना भय एवं त्रास अन्य मानवों के द्वारा मिलता है, उतना तो उसे सिंह या सर्प से भी मिलने की आशा नहीं रहती। इसका कारण यही है कि मानव-हृदय में प्रेम का स्थान स्वार्थ ने प्राप्त कर लिया है। अहिंसा और प्रेम नैसर्गिक मानव गुण

है। उनके क्रियात्मक व्यवहार के लिये हमें किन्हीं कार्यों एवं व्यापारों की खोज करनी नहीं पड़ती। दूसरे शब्दों में इसी को यों भी कहा जा सकता है कि अहिंसा तो अपने आप में स्वयंभू है किन्तु हिंसा के प्रयोग के लिए हमें दूसरों की अपेक्षा रहती है। एक प्रकार से यदि व्यापक दृष्टि से देखें तो समस्त कर्म व्यापार एवं प्रत्येक क्रिया का आधार या तो अहिंसा है अथवा हिंसा। हिंसायुक्त आचरण एवं चिन्तन से मानव पाशविक बन जाता है। इसके अतिरिक्त अहिंसा के आचरण से मानव की प्रकृति में दिव्यत्व की प्रतिष्ठा होती है।

भगवान् महावीर ने कहा है

एवं खु नाणिणो सारं जं न हिंसइ किंचणं। —सू० १ १ ३ ४।

ज्ञान का सार तो यही है कि किसी भी प्राणी की हिंसा न करना आघात न पहुँचाना अथवा पीड़ा न देना। दूसरे शब्दों में समस्त प्राणियों को आनन्द पहुँचाने में ही ज्ञान की सार्थकता है। उपयुक्त सूत्र में अहिंसा के निषेधात्मक एवं विधेयात्मक—दोनों ही पक्षों की विशद एवं सम्पूर्ण परिभाषा आगई है। उपयुक्त सूत्र की पूर्ति हमें दशवैकालिक सूत्र में मिलती है, जहां कहा गया है कि—"अहिंसा निउणसा दिट्ठा" अर्थात्—दक्ष वही है जो कि अहिंसा के प्रयोग में निपुण है। इन थोड़े से शब्दों में गर्भित अहिंसा की विराट् व्याख्या बारम्बार माननीय है।

हिंसा क्यों नहीं करनी चाहिये इसको भी स्पष्ट किया गया है। उत्तराध्ययन-सूत्र में सव्वे पाणा पियाउया। आ० १८, ब० ३। सभी प्राणियों को जीवित रहना ही प्रिय है। कोई भी किसी भी अवस्था में मृत्यु एवं दुःख को नहीं चाहता। इसलिए किसी को भी दुःख या

मृत्यु अभीष्ट नहीं है, इसको सदा सर्वदा ही ध्यान रखना उचित है, अहिंसक व्यवहार इसीलिये सभी प्राणियों के लिए प्रेय भी है और श्रेयस्कर भी। इसी तत्त्व को यों कहा गया है—

"पाणे य नाइवाएज्जा .. निज्जाइ उदगं व थलाओ ॥" उ० ८-६

जो व्यक्ति प्राणियों का वध नहीं करता, वह उसी भांति हिंसा कर्मों से मुक्त हो जाता है, जैसे कि ढालू जमीन पर से पानी बह जाता है। उसको जन्म-मृत्यु के बीच परिव्याप्त विभिन्न हिंसात्मक कार्य कलापों की कालिमा नहीं लग पाती और वह आद्योपान्त आत्म शुद्ध बना रहता है। इसी हेतु भगवान महावीर ने शान्ति की उपलब्धि का मार्ग बताते हुए यों कहा है—'क्रमश प्राणीमात्र पर दया करना ही शान्ति प्राप्त करना है।'

इस प्रकार अहिंसा तत्त्व की यदि व्यापक परिभाषा की जाये तो आध्यात्मिक दृष्टि से अहिंसा का व्यावहारिक स्वरूप है—राग, द्वेष, क्रोध, मान, माया, लोभ, भीरुता, शोक आदि निकृष्ट भावों का परित्याग। केवल प्राणियों के प्राणों का हनन ही हिंसा नहीं है वरन् वास्तविक बात तो यह है कि जब तक मानव हृदय में क्रोध भाव आदि विद्यमान है, तब तक किसी के प्रति बुरा बर्ताव न करते हुए भी वह हिंसा से विमुक्त नहीं है। अहिंसा एक देशीय एवं सर्व देशीय—दो प्रकार की मानी जाती है। सांसारिक जीवन बिताने वाला व्यक्ति सर्व देशीय अहिंसा का पालन तो नहीं कर सकता, किंतु फिर भी वह नित्य प्रति के सामाजिक कर्त्तव्यों का निर्वाह करते हुए एक देशीय अहिंसा का पालन करता ही रह सकता है। अहिंसक गृहस्थ, बिना प्रयोजन के या प्रयोजन से प्रेरित होकर दोनों ही अवस्थाओं में तुच्छ से तुच्छ प्राणी को भी कष्ट नहीं पहुँचायेगा। साथ ही देश रक्षा एवं समाज रक्षा के अभिप्राय से यदि उसे किसी

कर्त्तव्य प्रेरणा से प्रेरित होकर अस्त्र शस्त्रों तक का प्रयोग भी करना पड़े तो वह अहिंसा व्रत का खण्डन नहीं माना जायेगा क्योंकि ऐसे शस्त्र प्रयोग में मौलिक प्रेरक तत्त्व तो वही 'सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय' ही है।

धर्मानुयायी गृहस्थ केवल स्थूल हिंसा का परित्याग कर पाता है। स्थूल हिंसा से अभिप्राय है—निरपराधी प्राणियों का संकल्प पूर्वक कुभावना या स्वार्थ से प्रेरित होकर हिंसा न करना। किसी भी प्राणी का भोजन के निमित्त मात्र हरण न करना। प्रत्येक प्राणी को उपयुक्त समय पर भोजन की आवश्यकता होती है। उसे रोकने का कभी भी आलस्य व प्रयत्न न करे। जैन शास्त्रों में—"भत्त पाण विच्छेदे" नामक दोष से गृहस्थ दूर रहे ऐसा उल्लेख है, अर्थात्—अपने आश्रित व्यक्ति से उसकी सामर्थ्य से अधिक काम लेना तथा उसे समय पर भोजनादि न देना भी हिंसात्मक दोष है। किसी भी प्राणी को अनुचित बन्धन में डालने से 'बन्धन नामक हिंसात्मक दोष लगता है। किसी को मारना पीटना या लाठी देना आदि 'वर्त विच्छेद' दोष कहलाता है। मारने की अपेक्षा अपराध का व्यवहार भी महादोष माना जाता है। इन पांच प्रकार के हिंसात्मक दोषों से परे रहना ही व्यावहारिक जीवन में अहिंसा का प्रयोग करना एवं हिंसा से दूर रहना है।

आध्यात्मिक दृष्टि से अहिंसा पथ के पथिक को इस भांति सोच विचार करना चाहिये कि जिसे मैं मारना चाहता हूँ वह भी मैं ही हूँ जिसके ऊपर मैं आधिपत्य स्थापित करना चाहता हूँ, वह भी मैं ही हूँ। जिसको मैं पीड़ा पहुँचाना चाहता हूँ वह भी मैं ही हूँ। आत्म-योग की दृष्टि के अनुसार जिसे दूसरे व्यक्तियों के साथ मैं भला या बुरा बर्ताव करना चाहता हूँ वह भी मैं ही हूँ दूसरों को

बंधन में डालना, वस्तुत स्वय को ही बंधन में डालना है।" इस प्रकार का निरन्तर चिन्तन साधक को अहिंसक जीवन की ऊंची आदर्श भूमि पर ला खड़ा करता है।

गृहस्थ जीवन की भूमिका पर, जीवन निर्वाह करने वाले व्यक्ति को चार प्रकार की हिंसा से बचना आवश्यक है—संकल्पी, विरोधी आरम्भी और उद्यमी। हिंसा के, इस दिन प्रतिदिन के जीवन में आरोप की परिभाषा करनी आवश्यक है। सबसे पहले हम संकल्पी हिंसा को ही लें। किसी विशेष संकल्प या इरादे के साथ किये गए, हिंसात्मक व्यापार को 'संकल्पी' हिंसा कहा गया है। शिकार खेलना मांस भक्षण करना आदि सकल्प कार्यों में 'संकल्पी' हिंसा होती है।

'विरोधी' हिंसा का अभिप्राय है—किसी अन्य द्वारा आक्रमण किये जाने पर उसके प्रतिकार करने में जो हिंसात्मक कार्य करना पड़ जाता है उससे। यह आक्रमण अपने व्यक्तित्व पर समाज पर या देश पर, किसी पर भी, किसी के द्वारा कभी किया जा सकता है। ऐसे संकट काल में अपनी मान प्रतिष्ठा अथवा आश्रितों की रक्षा के लिये युद्ध आदि में प्रवृत्त होने को 'विरोधी' हिंसा कहा जाएगा। गृहस्थ जीवन में ऐसे अनेक प्रसंग उपस्थित हो सकते हैं। ऐसे अवसर पर पीठ दिखा कर भागना अथवा जी चुराना, तो गृहस्थ अथवा सामाजिक कर्त्तव्य से प्रतिकूल होना है। हाँ, अपनी विवेक-बुद्धि द्वारा यदि विरोध को अपनी व्यवहार कुशलता से टाला जाना सम्भव हो, तो उसके टालने का प्रयत्न अवश्य ही किया जा सकता है।

अमरीका के राष्ट्र निर्माता अब्राहम लिंकन के कहे गये कुछ स्मरणीय शब्द यहाँ उल्लेखनीय हैं—'युद्ध एक नृशंस कार्य है। मुझे उससे घृणा है। फिर भी न्याय या देश रक्षार्थ युद्ध करना

वीरता है। अपने देश की स्वतंत्रता के लिये किये गये धर्म-युद्ध को मैं न्याय समझता हूँ। मुझे उससे दुःख नहीं होता। एक जैनाचार्य का इस सम्बन्ध में कथन है—

"केवल दण्ड ही निश्चय रूप से इस लोक की रक्षा करने में समर्थ होता है। किन्तु राजा द्वारा समान बुद्धि एवं निष्पक्ष भाव से प्रेरित होकर यथा दोष चाहे वह शत्रु हो या अपना पुत्र हो उसके साथ न्याययुक्त आचरण किया जाना उचित है। ऐसा दण्ड भी इस लोक में या परलोक में रक्षा करने वाला सिद्ध होता है।"

आरम्भी हिंसा मानव की नित्य प्रति की सहज जीवन-चर्या में भी जो हिंसात्मक कार्य-व्यवहार बिना संकल्प के चलते ही रहते हैं। उनसे लगे हुए दोष का नाम आरम्भी हिंसा है। मानव को धर्म-कार्य के लिये भी शरीर की रक्षा अभिप्रेत है। तदर्थ भूख-प्यास के निवारण और आतप शीत वर्षा आदि से रक्षण रूप में भी स्वाभाविक रूप से हिंसा होती रहती है। उसे हिंसा का 'आरम्भी' दोष कहा जाता है। 'हितोपदेश' में एक 'आरम्भी हिंसा के सम्बन्ध में एक मनोहर कथा को हरिणी के मुख से कहलाया गया है—

"जब वन में पैदा होने वाले शाक-सब्जी घास-पात आदि के खा लेने से ही किसी भी प्रकार उदर-पूर्ति की जा सकती है, तो भला फिर इस आग लगे पेट को भरने के लिये महा पाप क्यों करें?

जैनाचार्य श्री हरि विजय सूरि आदि के सम्पर्क में आने से जब सम्राट् अकबर के मन में अहिंसा के प्रभाव से विवेक-बुद्धि जागृत हुई उसका अबुलफजल ने यों वर्णन किया है कि— सम्राट्

अकबर ने कहा कि यह उचित नहीं जान पड़ता कि इन्सान अपने पेट को जानवरों की कब्र बनाये। माँस भक्षण मुझे प्रारम्भ से ही अच्छा नहीं लगता था। प्राणी रक्षा के संकेत पाते ही मैंने माँस भक्षण त्याग दिया।"

'उद्योगी हिंसा' आजीविका-सम्बन्धी वृत्ति के निर्वाह करते समय स्वत होती रहने वाली हिंसा को कहते हैं, जोकि कृषि आदि कर्मों मे, जाने-अनजाने बन हो जाती है। फिर भी कृषि एवं वाणिज्य के मूल में लोक मगल एव लोक-हित की भावना रहने पर 'उद्योगी हिंसा' के दोष का यत्किञ्चित परिमार्जन भी होना सम्भव होता है। इस भाति हम देखते हैं कि जीवन क्या है? एक सतत संग्राम है। इसमे अनन्त परिस्थितियों में होकर निकलना पडता है। किन्तु फिर भी यदि मानव अहिंसा के जीवन-सूत्र का निर्वाह करता हुआ इस धर्म-युद्ध में प्रवृत्त होता है तो उसकी विजय स्वत ही सुनिश्चित रहती है। सभी महा पुरुषों की जीवन घटनाएँ इस तथ्य की साक्षी है कि उन्होंने अपने अपने कर्त्तव्य-निर्वाह की दुर्गम यात्रा मे सदा ही 'अहिंसा को सर्व-प्रथम माना है।

मानव एक चेतनाशील प्राणी है। किसी कारण वश उसकी यह चेतना शक्ति मन्द पड़ जाती है, तब वह आततायी एव अत्याचारी हो जाता है। फिर भी उसकी नैसर्गिक सुषुप्त चेतना कभी न कभी जाग ही उठती है। तब उसे अपने किये हुए अज्ञानमय कार्यों पर पश्चाताप भी होता है। सिकन्दर, नेपोलियन, हिटलर आदि सभी ने अपनी जीवन सन्ध्या में यह अनुभव अवश्य किया कि उनके जीवन-काल में उनसे अनेक अन्यायपूर्ण एव अनुचित कार्य बन पड़े, जिनका निराकरण करने के लिए उनके पास अन्त में कोई भी उपाय नहीं रहा। अपनी महत्त्वाकाक्षाओं की पूर्ति की धुन में उन्होंने असख्य नर-नारियों के हँसते खेलते जीवनों को

ध्वंस कर डाला। सारांश तो यही है कि हिंसा में निरन्तर प्रवृत्त रहने पर भी अन्त में अहिंसा की ही स्नेहमयी गोद में मानव को शांति एवं विश्रान्ति मिल पायेगी।

आज के अविश्वासपूर्ण वातावरण में, इस बात पर विश्वास करना कठिन होता है कि हिंसक विचारों द्वारा आयु-बल क्षीण होते रहते हैं। निरन्तर हिंसात्मक विचारों में लीन रहना—निश्चित मृत्यु की ओर अग्रसर होने का ही द्योतक है। हिंसापूर्ण विचारों से मानव की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। उसकी शांति भंग हो जाती है। सद्वृत्तियाँ चली जाती हैं। इस भाँति वह अनजाने ही सर्व नाश एवं मृत्यु के गह्वर में स्वयं ही ढकेला चला जाता है।

वैज्ञानिक अभ्युदय के इस युग में अहिंसा सम्पूर्ण विश्व के लिए आवश्यक है। आज का मानव भौतिक पदार्थों के मायामोह में मतिमूढ़ हो रहा है। फिर भी उसका प्रत्यक्ष परिणाम सभी के समक्ष है। एक व्यक्ति, दूसरे व्यक्ति से आशंकित एवं भयभीत है। एक देश दूसरे देश से शंकित एवं त्रस्त है। अणुबम आदि अनंत परम संहारकारी अस्त्र-शस्त्रों की होड़ ने आज मानव-जाति के भविष्य पर भयंकर घटनाएँ ला खड़ी हैं। चन्द्रलोक में भी अपनी सत्ता जमाने की महत्त्वाकांक्षा रखने वाला मानव कहीं अपनी इस घातक, संहारक उपकरण निर्माण की विनाशक होड़ द्वारा कभी अपना अस्तित्व ही न मिटा ले इसकी सदा ही आशंका बनी रहती है। इस विश्व-व्यापी अविश्वास आतंक एवं हिंसा का निराकरण केवल अहिंसात्मक संजीवन विधा की साधना द्वारा ही सम्भव है।

अहिंसा के प्रयोग के लिए, प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के प्रत्येक पहलू पर व्यापक क्षेत्र खुला हुआ है। समाज का प्रत्येक नागरिक

अपने-अपने क्षेत्र एवं परिस्थिति के अनुसार अहिंसात्मक जीवन अपनाने की साधना में प्रवृत्त हो सकता है। एक डाक्टर या चिकित्सक यदि अपनी चिकित्सा वृत्ति एवं भेषज विद्या का लक्ष्य मात्र धनोपार्जन न रखकर, लोक सेवा रख पाए, तो वह अधिक से अधिक अर्थों में एक अहिंसक जीवन बिताने में समर्थ हो सकता है। यदि कृषक संसार के भरण पोषण की भावना से अन्न का उत्पादन करे, तो वह भी अहिंसा व्रत का व्रती कहा जा सकता है। व्यापारी लोक-हित को यदि प्रथम स्थान दे एवं धनार्जन को दूसरा, तो वह भी 'उद्योगी' हिंसा-दोष से बचा रह सकता है। श्रीमद् भगवद्-गीता के अंतर्गत् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को समझाया है कि—'जो व्यक्ति अपनी परिस्थिति के अनुसार अपने उत्तरदायित्व एवं स्व-धर्म का निर्वाह करता है, वह चिरस्थायी एवं शाश्वत श्रेय का भागी बनता है।'

इस संजीवन-विद्या की महाशक्ति 'अहिंसा' की आराधना-साधना द्वारा मानव ऊँची से ऊँची आध्यात्मिक सिद्धि का अधिकारी बन सकता है। भगवान् महावीर का आविर्भाव, महात्मा बुद्ध से ८२ वर्ष पूर्व हुआ था। उन्होंने अहिंसा की अमोघ शक्ति का ज्ञान जन-साधारण को हृदयंगम कराया एवं २५ सम्राटों ने उनके धार्मिक उद्‌बोधन को सुनकर राजपाट का परित्याग करके अपरिग्रह व्रत अपनाया था। उन्होंने श्रेणिक महाराजा बिम्बसार द्वारा, उसके संपूर्ण राज्य में हिंसा निषेध करवा दिया था। उन्हीं की प्रेरणा पाकर लाखों कोट्याधीशों एवं लाखों सुकुमार ललनाओं ने वैभव पूर्ण जीवन को ठुकराकर, वैराग्य वृत्ति स्वीकार की थी। आज भी भगवान् महावीर द्वारा प्रवर्तित जैन-धर्म के कारण विश्व में अहिंसात्मक भावनाओं एवं सिद्धान्तों का प्रचलन व अंगीकरण पाया जाता है।

(२५०१ वीं बुद्ध जयंती, स्थान नैपाल)

नेपाल यात्रा का इस तरह के सर्वजनोपकारी कार्यक्रमों का आयोजन होने से बहुत महत्त्व बढ़ गया।

नगर के अनेक प्रमुख लोगों के अलावा वर्तमान वाप मंत्री श्री सूर्य बहादुर मान पोत उपमंत्री श्री देवमानजी, प्रधान न्यायाधीश श्री धानिरुद्ध प्रसादजी आदि के साथ हुई मुलाकात तथा धर्म चर्चा भी खूब याद रहेगी।

अब यहाँ से जिस रास्ते से होकर आये थे उसी रास्ते वापस भारत के लिए लौट आना है। नेपाल-यात्रा बड़ी सुखद अनुभव वाली सब जनोपकारी एवं संस्मरणीय रहेगी। ऐसे प्रदेशों में आने से ही वास्तविक दुनिया का ज्ञान होता है और नई नई बातें सीखने-समझने का अवसर मिलता है

रक्सोल

ता० ४–६–५७ :

नेपाल की दुर्गम दुस्तर घाटियाँ लांघ कर अब हम पुन हिन्दुस्तान में प्रवेश कर रहे हैं। रक्सोल दोनों देशों के मध्य में पड़ने के कारण एक अच्छा सेंटर बन गया है। यहाँ से नेपाल और मुजफ्फरपुर के बीच के लिए एक सीधे राजमार्ग का निर्माण हो रहा है। यहाँ से सीतामढी दरभंगा, समस्तीपुर मुजफ्फरपुर आदि के लिए रेलें जाती हैं। हम भी इसी रास्ते से आगे बढ़ने वाले हैं। उत्तर बिहार की पूरी परिक्रमा हो जाएगी उत्तर बिहार का भारत में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। यहाँ कई विशिष्ट ऐतिहासिक स्थान भी हैं और इस क्षेत्र के लोगों ने देश के विकास में अपना उल्लेखनीय योग दिया है। क्योंकि हमें चातुर्मास के लिए मुजफ्फरपुर पहुँचना है, इसलिए समय तो थोड़ा ही है पर इस थोड़े समय का ठीक ठीक उपयोग करके उत्तर-बिहार का पूरा परिचय तो प्राप्त कर ही लेना है।

दरभंगा

ता २४–६–५७ :

हम दरभगा में २० जून को पहुँचे। यहा के लोगों की भक्ति और आग्रह ने हमें ४ दिन रोक लिया। दरभगा सस्कृत-प्रचार की दृष्टि से काशी के बाद सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान है। मिथिला-क्षेत्र का केन्द्र होने से दरभगा का अनूठा ही महत्त्व हो गया है। हमने यहा चार व्याख्यान दिये। व्याख्यानों में शहर की आम जनता बड़ी सख्या में आती थी।

जिन विषयों पर व्याख्यान हुए, वे इस प्रकार हैं—

(१) आज के युग की समस्याएँ कैसे हल हो ?
(२) व्यावहारिक जीवन मे अहिंसा का प्रयोग
(३) मानव के कर्त्तव्य
(४) मानवता के सिद्धात

लोगों का आग्रह रहा कि अगला चातुर्मास यहा पर ही सपन्न किया जाय। इस तरह यहा आना बहुत सार्थक रहा। मारवाड़ी भाइयों के भी यहा पर दो सौ घर हैं। एक राजस्थान विद्यालय भी है। हमने राजस्थान विद्यालय का निरीक्षण किया। अच्छे ढग से चल रहा है। विद्यार्थियों से दो शब्द कहते हुए मैंने बताया कि "आप आज विद्यार्थी हैं, लेकिन जब पढ लिखकर बड़े बनेंगे, तब आपके कधों पर देश के निर्माण तथा सचालन की जिम्मेवारी आयेगी। आप ही नेता, विचारक, डाक्टर, वकील, प्रोफेसर उद्योगपति, व्यापारी आदि बनेंगे। अत आपको अभी से अपने जीवन का निर्माण करना चाहिए। यदि आप अभी कुसगत, व्यसन, आलस्य,

प्रमाद वद्दता आदि दोषों के शिकार हो जायेंगे तो आगे कैसे राष्ट्र को कामयोर संभाल सकेंगे ? यह विचार करने की बात है। इसलिए अभी से अपने जीवन में संयम सदाचार आदि सद्गुणों को स्थान दीजिये। कोई भी आदमी आत्म-गुणों के आधार पर ही बड़ा बन सकता है। आज के विद्यार्थी अविनीत और उद्दंड होते हैं यह ठीक नहीं है। विद्या के साथ विनय तथा नम्रता आनी चाहिए।"

समस्तीपुर

ता० १ —६—५७ :

यहां पर आने से स्थानीय जन-समाज में एक विशेष प्रकार का औत्सुक्य फैल गया। हमें देखने के लिए, चर्चा तथा वार्तालाप करने के लिए विविध प्रकार के लोग आने लगे। हम जब २८ तारीख को यहां आये तो विभिन्न स्थानों पर व्याख्यान देने के लिए आग्रह भी होने लगे। आखिर ३ व्याख्यान स्वीकार किये। पहला व्याख्यान मारवाड़ी ठाकुरवाड़ी में 'विश्व की समस्याएं' विषय पर हुआ। इस व्याख्यान से आम लोगों में विशेष रुचि देखी गई। दूसरा व्याख्यान जैन मारकेट में हुआ जिसका विषय था 'दैनिक जीवन में अहिंसा का प्रयोग।" तीसरा व्याख्यान नई धर्मशाला में 'विकास के मूलभूत सिद्धांत' के संबंध में हुआ। समस्तीपुर में भी ३ दिन का दिलचस्प वातावरण रहा।

पूसारोड स्टेशन

ता० २—७—५७ :

पहले यहां पर भारत प्रसिद्ध कृषि महा विद्यालय था। जिसमें विभिन्न प्रकार की कृषि संबंधी प्रशिक्षित शिक्षा दी जाती थी। अब वह महा विद्यालय नई दिल्ली में इसी नाम से चल रहा है।

यहा पर अभी गाधीवादी कार्यकर्ताओं के बहुत बड़े २ केन्द्र चलते हैं। एक कस्तूरबा महिला विद्यालय और दूसरा खादी ग्रामोद्योग कार्यक्रम। दोनों में कुल मिलाकर सैंकड़ों भाई-बहन काम करते हैं। कस्तूरबा विद्यालय महिलाओं के शिक्षण का और उन्हें ग्राम सेविका बनाकर गावों मे भेजने का आदर्श कार्य कर रहा है। इस विद्यालय की बहनें प्रान्त भर में फैली हुई हैं और गावों में अशिक्षित महिलाओं को शिक्षा देना, ग्रामोद्योग सिखाना, सिलाई सिखाना, सफाई सिखाना, उनके गदे बच्चों को नहलाकर उन्हें तैयार करना, उनको नाचना, गाना भी सिखाना, बीमारों की सेवा करना आदि करुणा मूलक काम करती हैं। इनका सचालन बिहार शाखा कस्तूरबा स्मारक निधि की ओर से होता है। यहा की सचालिका सु श्री सुशीला अग्रवाल बहुत ऊचे विचारों की और सेवा-त्यागमय जीवन बिताने वाली ब्रह्मचारिणी तरुणी हैं। ये पहले किसी कालेज में प्रोफेसर थी। अब सब कुछ छोड़कर सेवा का काम करती हैं। एक यहा माताजी हैं जिन्हें लोग 'गायों की माताजी' के नाम से पुकारते हैं। वे भी बहुत उच्च कोटि की सेवा-भावी महिला हैं। और भी बहुत सी बहनें हैं। यह सस्था राष्ट्र के लिए आदर्श कार्य कर रही है।

यहा की दूसरी मुख्य प्रवृत्ति खादी ग्रामोद्योग की है। खादी का आरंभ से लेकर अंत तक समग्र दर्शन यहा होता है। कपास पैदा करना, धुनना, कातना, कपड़ा बनाना, इसी तरह चरखे तैयार करना आदि सब काम यहा होते हैं और सिखाए भी जाते हैं। यह सस्था एक गाव की तरह बहुत बड़े पैमाने पर बसी हुई है। इस सस्था की ओर से आसपास के देहाती-क्षेत्र में जो काम चल रहा है, वह भी दर्शनीय एव उल्लेखनीय है। अम्बर चरखे द्वारा स्वावलबन करने और गरीबी मिटाने का एक सफल प्रयोग यहा पर

हो रहा है। दिनभर खेती करने के बाद रात को स्त्री-पुरुष-बच्चे सब चरखा चलाते हैं। उनकी यह मान्यता है कि यह मजदूरी का तो सबसे बड़ा साधन है ही देश में जो बेकारी का भूत है उसे भगाने के लिए यह अचूक प्रयोग है। गांधीजी ने ग्राम स्वावलंबन का जो चित्र अपने मस्तिष्क में बनाया था वह यहां पर साकार-जैसा होता दीख रहा है।

यदि हम इस यात्रा में पूसारोड न आते तो एक कमी ही रह जाती। ये दोनों संस्थाएं बहुत दर्शनीय हैं। राष्ट्र सेवा का यदि सरकार के अलावा कोई ठोस आर्थिक कार्यक्रम चल रहा है तो वह सर्वोदय वालों की ओर से चल रहा है ऐसा कहा जाय तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी।

मुजफ्फरपुर

ता० ६-७-५७।

पूसा से हम लोग बखरी पीपरी तथा रोहुआ होकर आये हैं। इन तीनों गांवों में रात्रि प्रवचन हुआ। लोगों ने बहुत उत्साह के साथ स्वागत किया। धर्म चर्चा की ओर व्याख्यान सुना। इस क्षेत्र में वैष्णव ब्राह्मणों की तादाद काफी है। ये सब शुद्ध शाकाहारी होते हैं।

चातुर्मास व्यतीत करने के लिए आज हम पुन मुजफ्फरपुर आ गये हैं। चार महीने तक यहां रह कर हमें अपने आध्यात्मिक जीवन का विकास करते हुए जन मानस को आध्यात्मिक चिन्तन की ओर प्रवृत्त करने की कोशिश करनी है। क्योंकि आखिर साधु का कर्तव्य यही तो है। उसे अपने और समाज के आध्यात्मिक जीवन की ओर निरन्तर ध्यान रखना है। जो साधु अपने इस

पावन कर्तव्य से विमुख हो जाता है वह अपने उद्देश्य तक पहुँचने में सफल नहीं हो सकता।

यह नया क्षेत्र है इसे तैयार करना हमारा काम था अत हमने सम्प्रदाय के भेदभावों को जनता के सामने न रखते हुए हमने मानवता के सिद्धान्त ही जनता के सन्मुख रखे।

ता० २–६–५७ :

इस चातुर्मास का सबसे मुख्य कार्यक्रम आज सानंद सम्पन्न हुआ है। यह कार्यक्रम सांस्कृतिक सप्ताह समारोह का था। ता० २५-८-५७ को सप्ताह आरम्भ हुआ और आज समाप्त हुआ। इन ७ दिनों में विविध विषयों के सम्बन्ध में विद्वान वक्ताओं ने जो विचार प्रस्तुत किये, वे न केवल विद्वतापूर्ण थे बल्कि चिन्तनीय एवं मननीय भी थे।

कार्यक्रम इस प्रकार रहा:—

ता० २५–८–५७ रविवार :—

सभापति—डा० सुखदेवसिंह शर्मा, M A Ph., D,
प्राध्यापक, दर्शन विभाग,
लङ्गटसिंह कालेज, मुजफ्फरपुर।
वक्ता—डा० हीरालाल जैन, M. A., LL B, D Litt,
निर्देशक, प्राकृत जैन विद्यापीठ, मुजफ्फरपुर।
विषय—भारतीय संस्कृति और उसको जैन धर्म की देन।

ता० २६–८–५७ :

सभापति—डा० एस० के० दास, M A, P R S Ph D,
अध्यक्ष, दर्शन विभाग, लङ्गटसिंह कालेज।

वक्ता—श्री चन्द्रानन ठाकुर, लंगटसिंह कालेज।
विषय—वेदान्त दर्शन।

ता० २७-८-५७ :

सभापति—पं० रामनारायण शर्मा M.A., वेदान्ततीर्थ
साहित्याचार्य, व्याकरणशास्त्री साहित्यरत्नादि,
अध्यक्ष—संस्कृत विभाग लंगटसिंह कालेज।
वक्ता—पं० सुरेश द्विवेदी वेद व्याकरण वेदान्ताचार्य
प्रिंसिपल धर्मसमाज संस्कृत कालेज मुजफ्फरपुर।
विषय—वैदिक संस्कृति।

ता० २८-८-५७ बुधवारः—

सभापति—डा० हीरालाल जैन, M.A. LL.B D Litt.,
वक्ता—डा० भाई मसीह,
प्राध्यापक, दर्शन विभाग, लंगटसिंह कालेज।
विषय—वर्तमान युग में धर्म का स्थान।

ता० २९-८-५७ बृहस्पतिवारः—

सभापति—पं० रामेश्वर शर्मा
वक्ता—मुनि श्री रामचन्द्रजी महाराज।
विषय—अहिंसा एवं विश्वमैत्री।

ता० ३०-८-५७ शुक्रवारः—

सभापति—प्रिंसिपल राम प्रसाद
रामदयालुसिंह कालेज मुजफ्फरपुर।

वक्ता—श्री रामस्वरूपसिंह, M.A
दर्शनविभाग, लंगटसिंह कालेज।
विषय—वर्तमान युग में धर्म की आवश्यकता।

ता० ३१-८-५७ शनिवारः—

सभापति—डा० याई० मसीह, M A, Ph D, (Eden) D. Litt,
दर्शनविभाग, लंगटसिंह कालेज।
वक्ता—प्रिंसिपल एल० घोष,
महन्त दर्शनदास महिला कालेज।
विषय—ईसाई धर्म।

ता० १-९-५७ रविवारः—

सभापति—प्रिंसिपल एल० घोष,
महन्त दर्शनदास महिला कालेज।
वक्ता—श्रीमती रत्नाकुमारी शर्मा, अध्यक्षा हिन्दी विभाग,
महन्त दर्शनदास महिला कालेज।
विषय—बौद्ध धर्म।

ता० २-९-५७ सोमवारः—

सभापति—श्री सीतारामसिंह, M A,
प्राध्यापक, इतिहास विभाग, लंगटसिंह कालेज।
वक्ता—श्री राजकिशोर प्रसाद सिंह, M A,
अध्यक्ष, इतिहास विभाग, रामदयालुसिंह कालेज।
विषय—सैन्धव सभ्यता।

इस कार्यक्रम में मुजफ्फरपुर की जनता ने आशातीत संख्या में भाग लिया। संस्कृति ही जीवन के विकास की सीढ़ी है। मानव-समाज प्रकृति की ओर बढ़े यह परम आवश्यक है। आज तो चारों ओर विकृतियां दिखाई दे रही हैं। खान पान रहन-सहन वेष-भूषा बोल चाल इत्यादि सब कार्यों में ऐयाशी दिखावापन, आडम्बर, स्वार्थ और अधार्मिकता का समावेश हो रहा है। यह दिशा संस्कृति की नहीं बल्कि विकृति की है। अतः जगह-जगह सांस्कृतिक सप्ताहों के द्वारा जनता को शिक्षित करने की जरूरत है और उसे सांस्कृतिक-जीवन अपनाने की प्रेरणा देनी चाहिए। मुजफ्फरपुर में सांस्कृतिक सप्ताह के इस आयोजन ने एक प्रकार की वैचारिक जागृति उत्पन्न की और लोगों को यह अनुभूति हुई कि उन्हें अपने जीवन में संयम स्वाध्याय आध्यात्मिकता आदि को प्रश्रय देना चाहिए और प्रत्येक प्रवृत्ति के पीछे एक निश्चित उद्देश्य होना चाहिए। इस सांस्कृतिक सप्ताह से यहां की जनता बहुत प्रभावित हुई एवं जैन-धर्म की विशालता एवं सर्व धर्म समन्वय करने की स्याद्वाद नीति की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

ता० ३-११-५७ :

मुजफ्फरपुर के इस चतुर्मास में विभिन्न मुहल्लों और बाजारों में आध्यात्मिक विषयों पर प्रवचन होते रहे एवं जनता को सद् प्रेरणा मिलती रही। इसके साथ ही महिला-जागृति की ओर भी विशेष ध्यान दिया। क्योंकि बिना दोनों चक्कों के समाज रूपी रथ आगे नहीं बढ़ सकता। पर आज भारतीय समाज में और विशेष रूप से उच्च एवं मध्यमवर्ग में महिलाओं की दशा अत्यंत शोचनीय है। उनमें शिक्षा का तथा अच्छे संस्कारों का अभाव है। उन्हें किसी प्रकार की स्वतंत्रता नहीं है, अतः वे हर क्षेत्र में बहुत पिछड़ी हुई हैं। इसलिए हमने इस पहलू की ओर विशेषरूप से ध्यान दिया।

पहला महिला सम्मेलन ता० १३-१०-५७ को गंगाप्रसाद पोद्दार स्मृति भवन में किया गया। दूसरा सम्मेलन ता० १८-१०-५७ को हुआ। तीसरा सम्मेलन ३१-१०-५७ को किया गया। चौथा सम्मेलन आज महिला मण्डल में हुआ। इन सम्मेलनों का स्वरूप काफी विराट था और कुल मिलाकर हजारों स्त्रियों ने भाग लिया।

इन सभी प्रवचनों में हमने नारी-जागृति के लिए विशेषरूप से प्रेरणा देते हुए कहा कि—

"नारी ही समाज की रीढ़ है। मा, पत्नी और बहन के रूप में उस पर बहुत बड़े-बड़े सामाजिक उत्तरदायित्व हैं। किन्तु आज हर क्षेत्र में चाहे, शिक्षा का क्षेत्र हो, चाहे सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्र हो, चाहे दूसरा कोई क्षेत्र हो पुरुष ने नारी को किनारे कर रखा है। यह स्थिति स्वस्थ नहीं है। नारी समाज को अपने उत्तर-दायित्वों का भान करना चाहिए और उसे हर क्षेत्र मे आगे बढ़ना चाहिए।

आज नारी के पीछे रहने का बड़ा कारण उसकी रुढ़िवादिता एव अशिक्षा है। यदि वह इन दो रोगों से मुक्त होकर जीवन पथ में आगे बढे तो निश्चय ही अनेक क्षेत्रों में उसे पुरुषों से अधिक सफलता प्राप्त होगी।"

ता० ८–११–५७ :

ता० ६-७-५७ को यहां चातुर्मास व्यतीत करने के लिए हम आये थे और आज यहा से आगे रवाना हो रहे हैं। संयोग के साथ ही वियोग जुड़ा है और आने के साथ ही जाना जुड़ा है। यही प्रकृति का नियम है और इसी नियम के सहारे पर संपूर्ण सृष्टि चल रही है।

डा० हीरालालजी तथा डा० मथमलजी टोंटिया जैसे धुरंधर जैन विद्वानों का सहयोग सदा याद रहेगा। वे भाव विदा के अवसर पर भी उपस्थित थे। इसी तरह इस मवेशियों की बस्ती में अवसर भाइयों ने हमें जो सहयोग दिया प्रचार कार्य में हमारा साथ दिया और आध्यात्मिक मार्ग को समझने का प्रयत्न किया, वह सब प्रशंसनीय है। विहार के समय पर गद्-गद् हृदय से विदाय देने के लिये हजारों भक्त सत्यम् अजायब की तरह अपने नेत्रों में आंसु धाराएं बहाते हुए २ मील तक चले। उस समय का दृश्य बड़ा करुणाप्रद था और चातुर्मास की महान् सफलता, भी यही एक बड़ा सबूत भी है।

आरा

ता –१७–११–१७।

आरा में दिगंबर समाज के काफी घर हैं। कई विद्वान भी यहां पर है। दिगम्बर समाज की ओर से महिला-शिक्षण और महिला जागृति का यहां पर जो काम हो रहा है, वह बहुत ही प्रशंसनीय है। इस प्रकार के केन्द्र देश के कोने कोने में होने से ही स्त्री-शक्ति का जागरण संभाव्य है।

आरा का सरस्वती पुस्तकालय भी अपने आप में एक अनुपम संग्रह है। पुस्तकें मानवजाति की सबसे बड़ी निधि होती है। मनुष्य का ज्ञान-कोष पुस्तक में ही सुरक्षित रहता है। आदमी चला जाता है, पर पुस्तक में प्रतिष्ठापित उसका अनुभव और ज्ञान सदा अमर रहता है। अगर मानव समाज के पास पुस्तक न होती तो आज जो हजारों वर्षों पुराना वेद पुराण सूत्र आगम त्रिपिटक कुरान

बाइबिल, रामायण महाभारत आदि हमें उपलब्ध है, वह कहां से मिलता। इसीलिए ज्ञान भंडार, आगम भंडार, पुस्तकालय आदि का बहुत महत्त्व होता है। यहां के सरस्वती पुस्तकालय में भी महत्त्वपूर्ण ग्रथों का सग्रह कनड़ी भाषा में करीब १५००० हस्तलिखित पुस्तकों का ताड़पत्र पर है।

शांतिनाथ मन्दिर में दिगम्बर जैन मुनि श्री आदिसागरजी के साथ व्याख्यान देने का अवसर मिला। जनता पर इस प्रेम पूर्ण मिलन का अत्यत अनुकूल प्रभाव पड़ा। हम सभी संप्रदायों के जैन मुनि अनेकान्तवादी भगवान महावीर के पुजारी हैं। पर आपस में प्रेम पूर्वक व्यवहार नहीं रखते। इससे जैन धर्म की स्थिति क्षीण होती जा रही है। मान्यताओं और सिद्धांतों में मतभेद होने के बावजूद आपसी प्रेम का व्यवहार नहीं तोड़ना चाहिए।

इसी प्रकार श्री चन्द्रसागरजी महाराज के साथ भी जो मिलाप हुआ वह सदा स्मरण रहेगा।

आज भगवान महावीर का पवित्र शासन दिगम्बर, श्वेताम्बर, स्थानकवासी मूर्तिपूजक, तेरापथी आदि विभिन्न सप्रदायों में बटगया है। एक संप्रदाय वाले दूसरी सप्रदायवालों को अपने में शामिल करने की धुन में रहते हैं। तथा एक दूसरे के विरुद्ध वातावरण तैयार करने में शक्ति लगाते हैं। इससे जैन धर्म का आगे विस्तार नहीं हो पाता। अत इस समस्या के बारे में जैन विद्वानों को गंभीरता से विचार करना चाहिए।

सहसराम

ता० २४-११-५७।

सहसराम मुगल युग में एक महत्त्वपूर्ण नगर था। इसलिए अब इसका ऐतिहासिक महत्त्व माना जाता है। शेरशाह ने १४४५ में एक

सुन्दर जलागार वहां पर बनाया था, वह अभी भी इतिहास-जिज्ञासु पर्यटकों के लिए आकर्षण एवं दिलचस्पी का केन्द्र है। इसी पक्के जलागार के बीच में वह "रोज़ा" बना हुआ है जिसे देखने के लिए दूर दूर के लोग आते हैं।

सहसराम एक केन्द्र-स्थान है। वहां से चारों ओर जाने के लिए पक्के राजमार्ग बने हुए हैं। पटना धनबाद कलकत्ता दिल्ली आगरा आदि की ओर सड़कें गई हैं।

सड़क पर ही बालीराम बक्शीचरन की जो धर्मशाला है उसमें हम लोग ठहरे। वहां से हमें मध्य प्रदेश तथा महाराष्ट्र होते हुए आन्ध्र-हैदराबाद की ओर आगे बढ़ना है। लंबा रास्ता है।

वाराणसी

ता० १६–१२–५७ :

वाराणसी भारत का प्रसिद्ध तीर्थ ही नहीं है बल्कि वह विद्या संस्कृति और साहित्य का एक अमूल्य केन्द्र भी है। एक ही शहर में २ विश्व विद्यालय और वे भी अपने अपने ढंग के अद्वितीय।

हमने हिन्दू विश्व विद्यालय और संस्कृत विश्व विद्यालय का निरीक्षण करके यह महसूस किया कि काशी नगरी सचमुच विद्या की नगरी है। हिन्दू विश्व विद्यालय तो अपने आप में एक सुन्दर नगर ही है। इसकी स्थापना पं० मदन मोहन मालवीय के सद्प्रयत्नों का परिणाम है उन्होंने दिन रात एक करके इस संस्थान को खड़ा किया। ४ फरवरी १९१६ में तत्कालीन वाइसराय लार्ड हार्डिंग ने इसका शिलान्यास किया। सन् १९२१ में मेड ब्रिटेन के

राजकुमार प्रिंस ओफ वेल्स ने इसका उद्घाटन किया। पाच स्क्वायर मील की परिधि के अन्दर लगभग १३०० एकड़ भूमि में विश्व-विद्यालय बना हुआ है। छात्रालय, महाविद्यालय, अध्यापकों के निवास, पुस्तकालय, चिकित्सालय आदि की सुन्दर इमारतें शिल्प कला की दृष्टि से उत्कृष्ट नमूने की हैं। विश्व विद्यालय के मध्य में लाखों रुपये खर्च करके विश्वनाथजी का एक दर्शनीय मंदिर भी बनाया गया है। यहा पर जैन दर्शन के अध्ययन का भी विशेष प्रबंध है। पहले भारत विश्रुत जैन विचारक प० सुखलालजी जैन दर्शन के अध्यापक थे और आजकल उन्हीं के शिष्य तथा प्रकाण्ड विद्वान प० दलसुख मालवणिया अध्यापक हैं।

विश्व विद्यालय से संबद्ध एक जैन संस्था भी है जो पंजाब की श्री सोहनलाल जैन-धर्म प्रचारक समिति की ओर से चलती है। इस सस्था का नाम है— श्री पार्श्वनाथ विद्याश्रम। हम यहा पर भी आकर रहे। अधिष्ठाता पं० कृष्णचन्द्राचार्य तथा मुनि भाईदानजी से मिलाप हुआ। यह सस्था जैन-समाज की उत्कृष्ट सेवा कर रही है। जैन-विषयों पर एम ए, आचार्य ओ पी. एच डी के अध्ययन के लिए, छात्रवृति, निवास, पुस्तकालय आदि की सुविधाएँ दी जाती हैं। एक उच्चस्तर का मासिक पत्र' श्रमण" भी यहा से निकलता है। काशी के घाट भी बहुत सुन्दर हैं, इसलिए बहुत प्रसिद्ध है। गंगा नदी काशी के चरणों को पखारती हुई आगे बढ़ती है।

न केवल हिन्दुओं के लिए बल्कि जैनों और बौद्धों के लिए भी काशी तीर्थ स्थान है। तीन जैन तीर्थंकरों के चरणों से काशी नगरी पवित्र हुई है। हम एक दिन भेलूपुर के श्री पार्श्वनाथ मन्दिर में भी रहे। इस ऐतिहासिक मन्दिर के दर्शनों के लिए हजारों जैन धर्मावलम्बी प्रतिवर्ष आते हैं।

बौद्धों का तीर्थ स्थान सारनाथ है। ऐसा बताया जाता है कि तपस्या करते समय महात्मा बुद्ध के पाँच शिष्य उन्हें छोड़कर यहाँ आगये थे। इसके बाद बोधगया में बुद्ध को बोधि (आत्म ज्ञान) मिली। तब बुद्ध ने सोचा कि सबसे पहले मुझे अपने उन पाँचों शिष्यों को ही उपदेश देना चाहिए। अतः वे बोधगया से चलकर वाराणसी आये और सारनाथ में ठहरे हुए अपने पाँचों शिष्यों को प्रथम उपदेश दिया। यह प्रथम उपदेश ही धर्म चक्र प्रवर्तन के रूप में विख्यात हुआ। यही स्थान यह सारनाथ होने के कारण इसका बहुत महत्त्व माना जाता है।

हम बनारस में ता० ३-१२-५७ को ही आगये थे। यहाँ १३ दिन रहकर विभिन्न स्थानों का पर्यवेक्षण किया। यहाँ पर भूतपूर्व तेरापंथी मुनि श्री हस्तीमलजी 'साधक' से मिलाप हुआ। वे बहुत अच्छे विचारक और सर्वोदय कार्यकर्ता हैं। बनारस में सर्वोदय का साहित्य प्रकाशन मुख्य रूप से होता है। अखिल भारत सर्व सेवा संघ इस काम को करता है। विभिन्न पहलुओं से विविध प्रकार का साहित्य यहाँ से निकाला गया है। इस प्रकार लगभग दो सप्ताह का वाराणसी प्रवास बहुत अच्छा रहा। यहाँ पर स्थानक वासी समाज के करीब १० घर हैं। बाकी श्वेताम्बर तथा दिगम्बर समाज के घर काफी संख्या में हैं। और सभी बिना भेद भाव के आपस में अच्छा व्यवहार रखते हैं।

पन्नी

ता २८-१२-५७ :

पैदल यात्रा में अनुकूल तथा प्रतिकूल अनेक परिस्थितियों में से गुजरना पड़ता है। हम महगांव से पन्नी पहुँचे। रास्ते में

आहारादि की सुविधा न मिली। हम "पन्नी" गाव के श्रीमान राजा राम के मकान पर पहुँचे। राजारामजी बाहर गए हुए थे। केवल महिलाएँ ही थी। सिफ तीन घर का छोटा गाव। हमको भूख और प्यास लग रही थी, अत हमने छाछ की याचना की। बहनों ने कुछ छाछ बहराई और हम आगे चले। करीब १ मील की दूरी पर स्कूल में रात्री विश्राम लिया।

श्री राजारामजी जब घर आये तो महिलाएँ उनसे बोली कि आप तो बाहर गए हुए थे और पीछे से यहा मु ह बाधकर दो डाकू आये थे। अपना घर वगैरा देखकर गये हैं और स्कूल में हैं। यह सुनते ही श्री राजारामजी ने आस-पास के ३-४ व्यक्तियों को एकत्रित कर, लाठिया भाले वगैरा ले जहा हम ठहरे हुए थे वहा आये। स्कूल में सर्व प्रथम श्री राजारामजी भाला लेकर आये और बोले तुम कौन हो? कहा रहते हो? कहा से आये हो? उनका विकराल रूप देखकर हम डरे नहीं और हसते हुए कहा—हम जैन साधु हैं, और पैदल यात्रा करते हुए हम नागपुर की तरफ जा रहे हैं। हम पैसे वगैरा-धातु मात्र नहीं रखते हैं। और पैदल यात्रा द्वारा ससार की सेवा करते हैं।

इस प्रकार निखालस भाव के शब्द सुनकर वे रोने लगे, और बोले—हमने आपका बहुत बड़ा अपराध किया। माफ करना। हम तो आपको डाकू समझते थे क्योंकि आप जैसे मुनियों का यह प्रथम दर्शन हमको हुआ है। सभी लोगों ने करीब दो घंटे तक सतसग किया, और बहुत प्रभावित हुए।

२६ जनवरी को जबलपुर में जो गणतन्त्र दिवस समारोह हुआ उसके सदर्भ में आज का दिन बड़ा भयानक सा मालूम देता है। क्योंकि जिस व्यक्तिकी तपस्या से भारत में गणतंत्र का उदय हुआ वही व्यक्ति एक भारतीय हिन्दू की गोली का शिकार हो गया।

हम १६ जनवरी को जबलपुर पहुँचे और कल यहा से आगे विहार करना है। इस अरसे में जबलपुर के शहर, और कैंट एरिया दोनों में रहे। दोनों ही क्षेत्रों में कत्ल खाने बंद हो, इस आशय का प्रस्ताव भी पारित किया गया। एव उसी से गणतंत्र के रोज कत्ल खाने बन्द रहे।

जबलपुर मध्यप्रदेश का विशिष्ट नगर है। सारे मध्यप्रदेश की राजनैतिक, सामाजिक, साहित्यिक एव सास्कृतिक गतिविधियों का संचालन करने में इस नगर का प्रमुख योगदान है। नित्य प्रवचन और धर्म चर्चा होती रही।

नागपुर

ता० २४–२–५८ :

मध्यप्रदेश से महाराष्ट्र ! शिवाजी का मराठा देश। भारत के इतिहास में महाराष्ट्र की अपनी विशिष्ट देन है। शिवाजी जैसे देश भक्त राजाओं से लेकर तिलक एवं गोखले तक की कहानी भारतीय इतिहास में गौरव के साथ कही जाती रहेगी। न केवल राजनीतिज्ञों की दृष्टि से बल्कि सतों की दृष्टि से भी महाराष्ट्र उर्वर भूमि रही है ज्ञानदेव, नामदेव, तुकाराम, स्वामी रामदास और भी ऐसे कितने ही संतों ने भारतीय संत परम्परा की प्रथम श्रेणी को सुशोभित किया और आज भी आचार्य विनोबा जैसे सत महाराष्ट्र ने दिये हैं।

गांधीजी ने भी महाराष्ट्र को अपना कार्यक्षेत्र बनाया था और जमनालालजी बजाज जैसे साथी भी उन्हें महाराष्ट्र की भूमि से ही प्राप्त हुए थे। गांधीजी की तपोभूमि वर्धा और सेवाग्राम यहां से केवल ४० माइल है जिन दिनों में आजादी का आन्दोलन चल रहा था उन दिनों में सारे देश की नजरें वर्धा और सेवाग्राम पर रहती थी।

इस महाराष्ट्र भूमि से होकर जब हम गुजर रहे हैं तो यहां की ये समस्त विशेषताएँ हमारे मन पर एक विशिष्ट प्रभाव डालती हैं।

नागपुर हिन्दुस्तान का शिखर है। कलकत्ता बंबई मद्रास और दिल्ली ये चारों यदि इस देश के मजबूत स्तंभ हैं और बाकी सारा देश इन स्तंभों पर खड़ा महल है तो नागपुर सारे देश के ठीक बीच में सुशोभित होने वाला शिखर है ऐसा कहना अत्युक्ति नहीं।

जैनशाला के विद्यार्थियों और शहर के नागरिकों ने हमारा भाव भरा स्वागत किया।

नागपुर में कुछ दिन रुककर आगे बढ़ेंगे। रास्ता बड़ा लम्बा है नेपाल देश के उत्तरी सिरे पर है और मद्रास दक्षिणी सिरे पर है। यहीं हैदराबाद होकर आगे मद्रास एवं दक्षिण भारत की ओर बढ़ना है।

हिंगन घाट

ता० १२-२-१८।

हिंगनघाट एक छोटासा सुन्दर नगर है। यहां पर स्थानक वासी समाज के भी काफी घर हैं। मूर्तिपूजक समाज के लोग भी

अच्छी सख्या में हैं। स्थानक, मन्दिर उपाश्रय सभी हैं। चातुर्मास के लायक गाव है। भाव-भक्ति बहुत अच्छी है।

यहां पर कपड़े की मिलों के कारण आस-पास के मजदूरों का तथा व्यापार का अच्छा केन्द्र है। कुछ बाग बगीचे भी अच्छे हैं।

हम आये, तो भाई बहनों ने अच्छा स्वागत किया। जैन-समाज के रूप में सभी लोग आये। वातावरण बहुत सुन्दर रहा। वास्तव में यही तो जैन-धर्म का सच्चा लक्ष्य है। यदि जैन लोग आपस में ही छोटे छोटे मतभेदों को लेकर झगड़ते रहेंगे तो दुनिया को प्रेम, मैत्री, तथा अहिंसा का पाठ कैसे पढा सकेंगे।

बोलारम

ता० १८-५-५८ :

यहा स्थानकवासी समाज के ३० घर हैं। पहुँचने पर खूब स्वागत हुआ। प्रतिदिन प्रवचन होते रहे। सिकन्दराबाद से काफी सख्या में श्रावकगण व्याख्यान सुनने आते थे।

मुनिवर श्री हीरालालजी महाराज एव दीपचन्दजी महाराज से मिलाप हुआ। इस तरह के मिलन से सारी पूर्व-स्मृतिया जागृत हो उठती है और सात्विक- सौजन्य व भक्ति का सागर उमड़ पड़ता है। आज मुनिराजों से मिलन होने पर वैसा ही आनन्द हुआ जैसा किसी बिछुड़े के मिलने पर होता है। साधु तो आत्म-साधना करने वाला मुक्त विहारी होता है पर गुरु परम्परा की डोर से वह बधा हुआ भी है। यह डोर बहुत कोमल है और इस डोर में एक ही गुरु-परम्परा में विहरण करने वाले एक दूसरे से दूर होकर भी बधे ही रहते हैं।

– इस वर्ष का चातुर्मास सिकन्दराबाद करना है। अतः यहाँ से सीधे सिकन्दराबाद के लिए ही विहार होगा।

सिकन्दराबाद

ता २५–६–५८

चातुर्मास करने के लिए आज सिकन्दराबाद में प्रवेश करने पर समस्त संघ ने हार्दिक स्वागत किया। बालक-बालिकाओं ने एक भव्य जुलूस बनाकर सुन्दर दृश्य उपस्थित कर दिया था। मुनियों का चातुर्मास के लिए किसी भी नगर में आना उस नगरवासी जनता के लिए अत्यंत आनन्द और उल्लास की बात होती है। चार महीने तक लगातार धर्म प्रवचन श्रवण का लाभ भी तो अपने आप में एक महनीय लाभ है।

ता १५ अगस्त ५८ :

यह आजादी का दिन। १५ अगस्त १९४७ की वह रात्रि में जब सारा संसार सो रहा था तब हिन्दुस्तान जाग रहा था और स्वातंत्र्य की खुशियाँ मना रहा था। आज आजादी प्राप्त हुए ११ वर्ष हो गये एक बहुत बड़ी क्रांति हुई कि सदियों से राजनैतिक गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा हुआ देश मुक्त हुआ पर वह क्रांति अधूरी थी। क्रांति की पूर्णता तो तभी होती जब इस देश के लोग आत्म-जागृति का और आन्तरिक स्वातन्त्र्य का पाठ सीखते। आजादी के इतने वर्ष बाद भी देश में दुःख दैन्य पाप भ्रष्टाचार हिंसा भेदभाव आदि दोष घटने के स्थान पर निरन्तर बढ़ते ही जा रहे हैं। क्या आजादी का अर्थ करप्ट बनना है। कभी नहीं। आजादी का अर्थ

सयमित स्वातन्त्र्य से है। पर देश में सयम के स्थान पर, अनुशासन के स्थान पर असयम और उद्दडता बढ रही है।'

१५ अगस्त के अवसर पर आयोजित एक विशाल सार्वजनिक सभा में मैंने उपरोक्त विचार प्रस्तुत किये।

ता० ३१-८-५८ :

एस० एस० जैन विद्यार्थी संघ ने एक विराट सभा का आयोजन किया, जिसकी अध्यक्षता प्रमुख नागरिक श्री ताताचार्यजी एडवोकेट ने की। विषय रखा गया "भारतीय सस्कृति एव सभ्यता" मैंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि "संस्कृति के टुकड़े नहीं किये जा सकते। संपूर्ण मानव सस्कृति अखण्ड है। अत भारतीय और अभारतीय इस तरह के भेद सस्कृति में नहीं हो सकते। मानव-संस्कृति पर जब हम विचार करेंगे, तब इतना ही कह सकते हैं कि मानव दो प्रकार के होते हैं सत् और असत्। अत संस्कृति भी दो प्रकार की हो सकती है—सत सस्कृति एव असत सस्कृति। ये दोनों तरह की सस्कृतिया हर जाति और हर देश में पाई जाती है। भारत में यदि महावीर हुए तो गोशालक भी हुए। राम हुए तो रावण भी हुए। कृष्ण हुए तो कंस भी हुए। इसी तरह भारत से बाहर भी मुहम्मदसाहब तथा ईसा मसीह जैसे सत हुए हैं।

प्रत्येक मानव को सत संस्कृति के आधार पर अपने जीवन का निर्माण करना चाहिए।

ता० २१-६-५८ :

२१-६-५८ को क्षमापना पर्व मनाया गया प्रगति समाज की ओर से, आज सभी संप्रदायों के लोग मिलकर क्षमायाचना करें, ऐसा

आयोजन किया गया। हमने इस आयोजन में सहर्ष शामिल होना स्वीकार किया। दिगंबर पंडित, तेरापंथी साधु सागर मुनि मूर्ति पूजक साधु प्रभावविजयजी आदि ने भी इस आयोजन में भाग लिया। इस तरह के आयोजनों से परस्पर प्रेम और मैत्रि बढ़ती है। विभिन्न संप्रदायों को मानने के बावजूद आखिर सब तो सबका एक जैन धर्म ही है। आयोजन खूब सफल रहा।

पर्युषण पर्व भी बहुत उत्साह और शान के साथ मनाया गया। स्वाध्याय प्रवचनमाला, तपस्या पौषध प्रतिक्रमण सभी कार्यों में स्थानीय समाज ने अत्यंत उत्साह के साथ भाग लिया। इस प्रकार हमारी विलम्बपशात् यह भी पैदल यात्रा सफल समाप्त हुई।

●●●●

यात्रा संस्मरण

卐

कलकत्ता से १६१ मील झरिया

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
१५	सेवड़ा फूली	अग्रवाल भवन	अग्रवाल भाई अच्छे सज्जन हैं।
६	चन्द्रनगर	अग्रवाल भाई के यहा	" " "
६	मगरा	मारवाडी राइस मिल	तीन घर मारवाड़ी भाईयों के।
६	पाडुवा	सिनेमा	सरदारमलजी काकरिया।
१२	मेहमारी	मारवाड़ी राइस मिल	
६	शक्तिगढ	बंगाली राईस मिल	
८	वर्धमान	रमजानी भवन	गुजराती मारवाड़ी के बहुत घर हैं।
५	फगुपुरा	स्कूल	
६	गलसी	स्कूल	

मील	ग्राम	स्थान	विशेष वर्णन
।।	पुरुलिया	पचेश्वर महादेव मन्दिर	
।।	पानागढ़	हजारीमल बनारसीदास	बीस मारवाड़ी भाई के घर हैं।
।।	आसनसोल	स्कूल	
८	फरीदपुर थाना	थाना का बरामदा	
३	मोहनपुर	डाक बंगला	
५	करसोड़ा	पेट्रोल पम्प	
५	रानीगंज	धर्मशाला	यहां गुजराती स्था० जैन के १० घर हैं
४	सावग्राम कोलयारी	कोलयारी	
६	आसनसोल	स्कूल	
७	मिर्जापुर रोड	भीमसेनजी के यहां	
७	बराकपुर	बागे स्टोर	यहां गुजराती भाईयों के तथा मारवाड़ी भाईयों के १० घर हैं।
६	श्यामनगर	शांतिलाल एंड कंपनी	गुजराती मारवाड़ी भाईयों के अनेक घर हैं।
६	बराकर	मारवाड़ी विद्यालय	
११	तलगा	डाक बंगला	
८	गोविन्दपुर	मन्दिर	मारवाड़ी के ७ घर हैं।
७।।	धनबाद	मेहता हाउस	गुजराती मारवाड़ी भाईयों के अनेक घर हैं।
४	झरिया	स्थानक	१५ घर हैं।

मील	ग्राम	स्थान	विशेष वर्णन
५	करकेन्द	धर्मशाला	गुजराती मारवाड़ी भाईयों के बहुत घर हैं।
६	कतरास	स्थानक	३० घर हैं।
११	माताडीह कोल्यारी	गेस्ट हाउस	गुजराती भाईयों के घर हैं
७	बागमारा	नवलचन्द महेता	मारवाड़ी जैन के अनेक घर हैं।
७	चन्द्रपुरा	स्टेशन	
७	घोरी कोल्यारी	गेस्ट हाउस	
६	वेरमो	स्थानक	
६	बोकारो बोध	दयालजी भाई	
७	साडिम	दि० जै० मन्दिर	
६	बडगाव	रामसती भवन	
६	दिगवाड्	स्कूल	
४	रामगढ	बी० ओ० सी० पेट्रोल पप	
६	चुटुपालु	डाक बगला	
५	ओर मांझी	सुशीला भवन	
५	विकाश विद्यालय		
७	राची	गुजराती स्कूल	

रांची से १६८ मील पटना

मील	ग्राम	स्थान	विशेष वर्णन
७	विकाश विद्यालय		
१०	चुटुपालु		
६	रामगढ़		
७	कुजु	जगदीश बाबू	एक घर गुजराती का है।

मील	नाम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
७	मांडु	माध्यमिक विद्यालय	
१॥	मोरांगी	स्कूल	
७॥	हजारी बाग	स्कूल	
७	सिम्पुर	दि० जैन धर्मशाला	
५॥	सूरजपुरा गेट (पद्मा गेट)	स्कूल	
७	बरही	गृहस्थ का मकान	
५	मकमाम	" " "	
६	झुमरीतिलैया	मारवाड़ी धर्मशाला	
४	कोडरमा	जैन पेट्रोलपंप	
७	तारापाडी	सरकारी मकान	
४	दिवौर	डाक बंगला	
७	रजौली	उच्च विद्यालय	
५	बान्दरपोरी	महावीर महतो	
६	फरहा	माध्यमिक स्कूल	
४	गुणावा	धर्मशाला	
८॥	गिरियक	गृहस्थ के यहां	
३	पावापुरी	जैन धर्मशाला	
८	बिहार शरीफ	" "	
॥	पेठना	स्कूल	
२	बोपना	स्टेशन	
१	बख्तियारपुर	धर्मशाला	
६	बाढ़पुर	शंभु बाबू	
९	बख्तपुर	शिवमन्दिर	
६	फतुहा	महन्तजी का आश्रम	
६	सबलपुर	शिवमन्दिर	

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
१	मवरपुर	धर्मशाला	
३	पटना	श्वे० जैन मन्दिर	

पटना से २०६ मील नेपाल

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
६	सोनापुर	हाई स्कूल	यहा की जनता धर्म प्रेमी है
४	हाजीपुर	गाधी आश्रम	" " "
८	चानिधनुकी	श्री तृप्तिनारायणसिंह	" " "
६	लालगंज	जगन्नारायण शाहु	" " "
६	भगवान पुररति	मन्दिर	" " "
३	वैशाली	जैन विश्राम गृह	यहा श्री तीर्थङ्कर भगवान हाई स्कूल है
२॥	वासुकुण्ड	जैन मन्दिर	यहा से दो फर्लाङ्ग पर एक स्थान है जहा भगवान महावीर का जन्म स्थान है।
२	सरौया कोठी	एक सोनी के मकान पर	ग्राम ठीक है
६	करजाचट्टी	रामलखन शाहु	" " "
७	पताही गोला	सेठ नागरमल वका का वगीचा	" " "
२	मुजफ्फरपुर	मारवाड़ी धर्मशाला	नागरमल वका आदि मारवाड़ियों के ६०० घर हैं यहा प्राकृत जैन इन्स्युच्युट चलता है
८	धरमपुरा	प्राईमरी राष्ट्रीय स्कूल	ग्राम साधारण
२॥	रामपुरा हरी	हाई स्कूल	ग्राम ठीक है
५॥	रुन्नि	अंबर चरखा संघ विद्यालय	" " "

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
५	धुमा	संस्कृत विद्यालय	यहां महन्तजी अच्छे प्रेमी हैं
२	हुसवा	वकील नारायणसिंह	ग्राम ठीक है
३	सीतामढ़ी	धर्मशाला	जन्मस्थान जगमग्धरा जगधाम आदि के अनेकों घर हैं
११॥	समालसोब	शिवमन्दिर	ब्राह्मणों के बहुत घर हैं मांसिक हैं
४॥	रेंग	पाबू सूर्यनारायणजी मोमिकार	ग्राम अच्छा है
५	गोर	मारवाड़ी भाई के यहां	मारवाड़ियों के यहां ० घर हैं नेपाल की सरहद शुरु होती है
४	बलुआ	सनातनमगत	ग्राम ठीक है
३	सेकड़ा	मठ	" " "
१०	भिमवाहा	रामचरितसिंहजी का मठ	" " "
५	बरीयारपुर	मठ	
६	फर्बिसगंजबाजार	बगीचा	
९	वीरगंज	महावीर प्रसाद धर्मशाला	मारवाड़ी भाईयों के १८० घर हैं रामकुंवार सुन्दर मजबी आदि अच्छे हैं
८	श्रीपुर	गौशाला	ग्राम साधारण
३	सीमरा	धर्मशाला	हमाईजहाज का अड्डा है

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
१०	अमलेसगंज	विश्वनाथ दीनानाथ की गादी	मारवाड़ी ● दुकानें हैं यहां से रेल का यातायात बन्द हो जाता है।
६॥	रोडसेस की चोकी	चोकी	
६॥	हटोडा	चेनराम मारवाड़ी	४ घर मारवाड़ी के हैं
६	भैंसिया	कृष्णमन्दिर	यहा से सड़क काठमाण्डु को जाती है। और पैदल रास्ता भी है।
६	भीमफेरी	धर्मशाला	यहां से पहाड़ की विकट चढाई चालू होती है।
४	कुलेखानी	धर्मशाला	ग्राम साधारण
८	चितलाग	धर्मशाला	
६	थानकोट	रामेश्वर श्रेष्टि का मकान	" " "
६	काली माटी	सुन्दरमल रामकुवार	" " " ग्राम ठीक है
१॥	काठमाण्डु	दुर्गाप्रसाद घडसीराम	मारवाड़ियों के ६० घर हैं

वीरगंज से १५८ मील मुज्जफरपुर

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
३	रक्सोल	भारतीय भवन	यहा मारवाड़ी भाइयों के १० घर हैं
७	आदापुर	बंशीधर मारवाड़ी	तीन घर मारवाड़ी के हैं
७॥	छोडादाना	स्टेशन	
७॥	छोडा सहन	विश्वनाथ प्रशाद जयवाल	मारवाड़ी के ६ घर हैं
३॥	चेनपुर	स्टेशन	

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
६	बेरगनिया	महावीर मराज मारवाड़ी	मारवाड़ी के ६ घर हैं
५	ढेंग	बाबू सूर्यनारायण जी की	
४	सभा सभोल	योगिन्द्र माधवजी त्रिपाठी	
६	रीगा	सुगर फैक्ट्री गेस्ट हाउस	मैनेजर सुरजकरण जी पारिक जोधपुर वाले तथा अन्य ४ घर जैन के हैं
५	सीतामढी		
६	मासर पचकी	जयकिशोर बाबू	ग्राम अच्छा है
४	वाजपट्टी मधुबजार	जसकीराम रामकुमार	कुल ४ घर मारवाड़ियों के हैं
८	जनकपुर रोड (पुपरी)	धर्मशाला	१० घर मारवाड़ियों के हैं
४	रामपुर पचासी	स्कूल	शिवजी शाह आदि अच्छे हैं
८	कमतोल	शिव मन्दिर	सूरजनारायणजी झिन्दी आदि अच्छे सज्जन हैं
०	अहमदपुर	शिवनारायण मारवाड़ी	
६	दरभंगा	अमरचन्द बालचन्द छुविया	मारवाड़ियों के १०० घर हैं
३	कठरीया सराय	अमरचीलाल महादेव	ग्राम अच्छा है
८	किशनपुर	रामचन्द्र गोयले	
५	जमालपुर	महन्तजी के मठ में	
०	समस्तीपुर	जैन मारकेट	जैन के तथा मारवाड़ी के ८ घर हैं
७॥	माधपुर	दुर्गामाता का मन्दिर	ग्राम अच्छा है

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
५	पुषा स्टेशन	कालुराम चत्रभुन मारवाड़ी	अम्बर चरखा एवं कस्तुरबा राष्ट्रीय स्मारक निधि की ओर से महिला विद्यालय चल रहा है।
७	बखरी	ठाकुरवाड़ी	ब्राह्मण वस्ती अधिक है
५॥	पीलखी	स्कूल	अनिन्द्र बाबू आदि अच्छे सज्जन हैं
८	राहुआ	वैष्णव मठ	ब्राह्मणों की अच्छी वस्ती है तथा बहुत प्रेमी हैं
३॥	मुज्जफरपुर	मारवाड़ी धर्मशाला	यहा की प्रजा प्राणवान है

मुज्जफरपुर से १२५ मील सासाराम

३	भगवानपुर चट्टी	नागरमलजी बंका का बगीचा	यहां धर्म प्रेम अच्छा है
७॥	करजा	रामदेव मिश्र	ग्राम ठीक है
३	पोखरेरा	मधुमंगल प्रसाद	जनता भाविक है
३॥	सरैया कोठी	भगवान प्रशाद साहु	ग्राम ठीक है
३	बखरा	हाई स्कूल	ग्राम ठीक है
४	मकेर	शिवचन्द मिश्र	" "
४	खोनोटो (भाथा)	ईश्व विकास सघ की ओफिस	" "
६॥	गरखा	मठ	मनिलाल शाहु आदि अच्छे सज्जन हैं
२	अनुनि	कमालपुर बोड ऊपर प्रा स्कूल	ग्राम साधारण
६	छपरा	जैन मन्दिर	ललनजी जैन आदि अच्छे सज्जन हैं

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
७	बखेरापुर	बैसिक सिनियर स्कूल	ग्राम अच्छा है
७	आरा	हरप्रसाद जैन धर्मशाला	जैन बस्ती अच्छी है
४।।	उदवन्त नगर	मठ	गाँव ठीक है
८।।	गड़हनि	मठ	गाँव साधारण
६	सेमराँव	सरयु विद्या मन्दिर	ग्राम अच्छा है कुछ दूरी पर है
६	पीरो	धर्मशाला	गाँव अच्छा है
४।।।	सहजनि	वैद्य नारायणसिंह	,, ,, ,,
७।	बिक्रमगंज	मढ़िया	,, ,, ,,
२	मढ़िया	रामभगासिंघके	,, ,, ,,
८।	मोका	शंकर राईस एण्ड मिल्स	मालिक अच्छा है
५	कसमवरोल	वपरी बलदेव सिंह	ग्राम साधारण
७	सासाराम	धर्मशाला	मारवाड़ी के अच्छे घर हैं

सासाराम से ११० मील मिरजापुर

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
७।	शिवसागर	शिव मन्दिर	सहदेव साधु बड़े सज्जन हैं
२	डेकारी	बुनियादी विद्यालय	जंगल में
६	कुदरा	नवयुवकों जैन के गोले पर	सरावगियों के तीन घर हैं
३।।	पुसोली	जयप्रकाश मिडिल स्कूल	
६।।	मोहनिया	सत्यनारायण मील	मील मालिक सज्जन
७।।	दुर्गावति	श्री महावीरजी का स्थान	महन्तजी बड़े सज्जन
११	सय्यदराजा	चौथमल लक्ष्मीनारायण धर्मशाला	चौथमलजी आदि लोग बड़े सज्जन हैं

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
५	चन्दोली	प्राईमरी स्कूल	ग्राम ठीक है
५	जन्सो की मठी	मठ	वहां के बाबाजी बड़े सज्जन हैं
५	मोगल सराय	परमार भवन	गुजराती भाई बड़े सज्जन हैं
७॥	बनारसी	अंग्रेजी कोठी	श्वे. जैन के ३० घर हैं
२	भेलुपुर	दिगम्बर जैन मन्दिर	
१०	राजा तालाब	राजकीय लोटा जाली उत्पादन केन्द्र	ग्राम साधारण
४।	मिरजा मुराद	धर्मशाला	ग्राम के लोग बड़े सज्जन हैं
७॥	वायूसराय	डाक बंगला	श्रीरामजी वर्णलाल आदि लोग सज्जन हैं
७	औराई थाना	बड़ा मन्दिर	सभापति रामनाथजी ब्राह्मण आदि लोग बड़े सज्जन हैं
२॥	सहसेपुर अमरटोला	धर्मशाला	राधा कृष्ण अग्रवाल आदि लोग बड़े सज्जन हैं
७	मिरजापुर	बुढेनाथ श्वे जैन मन्दिर	श्वेताम्बर दिगम्बर भाइयों की अच्छी बस्ती है

मिरजापुर से ६६ मील रींवा

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
६	समग्रा	मन्दिर	ग्राम अच्छा है
८	बलसी	मठ	सज्जनता की कमी है

मील	गांव	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
४	लालगांव	डाक बंगला	ग्राम अच्छा है
६	बराया	प्राईमरी स्कूल	ग्राम ठीक है
७	महेशपुर	द्वारकादास बनिया	साधारण ग्राम
१	दरामगंज	संस्कृत महाविद्यालय	ग्राम साधारण है
५	मुड़ियारद	सरकारी क्वाटर	
६	हनुमना	धर्मशाला	मारवाड़ी ५ घर हैं
८	बरमरी	स्कूल	बालचन सेठ आदि लोग बड़े सज्जन हैं
८।	मऊगंज	शिव मन्दिर	ग्राम साधारण है
४	पति	स्कूल	ग्राम ठीक है
६॥	सेमोर	स्कूल	आगे पाखिया ग्राम अच्छा है।
७॥	पत्थरहा	कुमरसाफसिंह	ग्राम ठीक है
१२	सुरमा	सोलागाम	मध्यम बस्ती ठीक है
१२	रीवा	जैन धर्मशाला	दि जैन के १२ घर है

रीवा से २२७ मील नागपुर

मील	गांव	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
८॥	बेला	तेजसिंह ठाकुर	ग्राम ठीक है
७	रामपुर	दयीराम की धर्मशाला	दयीराम हलवाई अच्छा सज्जन है
६	सज्जनपुर	हाई स्कूल	ग्राम अच्छा है
४	माधोगढ़	हाई स्कूल	यहां प्रेमप्रसाद तिवारी जी बड़े सज्जन हैं
६	सतना	जैनमन्दिर	श्वे जैन के १ घर तथा दि जैन के १२ घर हैं

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
६॥	लगरगवा	केबिन	
६॥	उचेहरा	कामदार बिल्डिंग	ग्राम ठीक है
४॥	इचोल	स्कूल	जंगल
४।	मैयर	दि जैन मन्दिर	दि० जैन के १० घर हैं
८॥	कुसेहि	जगन्नाथ प्रशादजी मिश्र	ग्राम ठीक है
८	अमदरा	जूनियर हाई स्कूल	" "
६	पकरिया	स्कूल	
६	भूठेही	स्कूल	बचुप्रशादजी शुक्ल आदि बड़े सज्जन हैं
५	कोलवारा	स्कूल	ग्राम साधारण
७॥	कटनी	श्री सम्पतलालजी जैन	रबर फेक्टरी वाले
८॥	पीपरोद	पूर्णचन्द जैन	दि जैन के ३ घर हैं
८॥	तिवारी सलेमाबाद	जैनमन्दिर	दि जैन के ५ घर हैं
३	छपरा	पंचायत का मकान	ग्राम साधारण है
४	धनगवां	हुकुमचन्द बनिया	४ घर बनियों के हैं
७	सिहोरा	हाई स्कूल	दि जैन के २० घर हैं
७	गोसलपुर	दि जैन मन्दिर	दि जैन के १६ घर हैं
४	गाधीग्राम	स्कूल	
६	पनागर	दि जैन मन्दिर	दि जैन के ७५ घर हैं
४	महाराजपुर	जैन का मकान	स्था जैन के ६० घर हैं
६	जबलपुर	धर्मशाला	
१॥	गोलबाजार	दीक्षितजी के मकान पर	
२	गढा	गृहस्थ के मकान पर	
१	निगरी	स्कूल	
३॥	बरघी	दि० जै० मन्दिर	दि० के २२ घर हैं
६	सुकरी	हाई स्कूल	दि० के १ घर है

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
३॥	काद्री	सिंडीकेट प्राइवेट लिमिटेड कादी माईन	कच्छी भाईयों के बहुत घर हैं।
३॥	आमडी	नीलकंठ	यहा तुकाराम मंडप अच्छा है।
३।	कन्हानकादरी	घुसाराम तेली	
५	गोरा बाजार कामठी	दीपचंदजी छलाणी	स्था० के ४ घर हैं
१॥	कामठी	शुक्रवारिया	
६	पाली नदी	मांगीलालजी मुणोत का बंगला	
४	नागपुर	इतवारिया जैन स्थानक में	

नागपुर से ३०३ मील हैदराबाद

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
४	अजनी	पोपटलाल शाह	
८	गुमगाव मोटरस्टेंड	स्कूल	गांव साधारण
६	बुटिबोरी	दि० जैन मन्दिर	४ घर ओसवालों के हैं।
५	बमनी	स्कूल	
३॥	सोनेगांव	देशमुख पाडे	ग्राम ठीक है
४॥	कादरी	स्कूल	” ” ”
८॥	जाम	स्कूल	” ” ”
७॥	हिंघनघाट	स्थानक	भक्तिमान श्रावक लोग हैं।
३	कवलघाट	गृहस्थ के मकान पर	साधारण ग्राम
८॥	वडनेरा	सोभागमलजी बागा	पंजाबी भाईयों के ३ घर हैं।

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
१२	अरगुल	शिवमन्दिर	ग्राम ठीक है
१२	दिन्छपली	रामजी मन्दिर	ग्राम ठीक है
१२	कलवराल	डाकबंगला	ग्राम साधारण है
४॥	सदाशिवनगर	होटल	ग्राम साधारण है
७॥	कामारेड्डी	स्थानक	ग्राम ठीक है स्था १० घर है
६	जगलपेली	शिव मन्दिर	" "
६	भिकनु स्टेशन	भीमजीभाई कच्छा	ग्राम ठीक है
४	रामायण पेठ	गिरनी मण्डक पर	ग्राम ठीक है
५॥	नारसींगी	शिवमन्दिर	ग्राम ठीक है
४	वलुर	सतनारायण घोषी	ग्राम साधारण
६	मासाइ पेठ	हनुमानजी का मन्दिर	ग्राम ठीक है
४	तुपराम	सतनारायण कलार	ग्राम ठीक है
७	मनुरावाद	व्यकटरेड्डी	ग्राम ठीक है
४	कालकठी	हनुमानजी का मन्दिर	" "
६	मेड्चल	ग्राम पचायत ओफिस	
६	कोंपल्ली	ग्रहस्थ के मकान पर	
२॥	बोलारम	स्थानक	
३	लाल बाजार	सरक्युलर इन्सपेक्टर	
३	सिकन्दराबाद	स्थानक	
६	हैदराबाद	कबीरपुरा स्थानक	

मद्रास प्रांत

१ सेठ मोहनमलजी चोरडिया C/ सेठ अमरचन्दजी मानमलजी चोरडिया ठो मीन्टस्ट्रीट साहूकार पेठ नं० १०३ मु. मद्रास १
२. एस एस जैनसंघ मीन्टस्ट्रीट साहूकार नं० १११ मु० मद्रास १
३ सेठ मेघराजजी महता C/ हिन्द बोतल स्टोर्स नं ६३ मवसाप्पा नायकस्ट्रीट मु० मद्रास ३
४ सेठ अवरचन्दमलजी मोहनलालजी चोरडिया नं ० मेलापुर मु० मद्रास ४
५ सेठ शंभूमलजी माणकचन्दजी चोरडिया नं० १५/१६ मेलापुर मु मद्रास ४
६ सेठ अमोलकचन्दजी भंवरलालजी विनायकिया नं० १३६ माउन्ट रोड मु० मद्रास ६
७ सेठ हेमराजजी लालचन्दजी सिंघवी नं० ११ बाजार रोड रायपेठ मु० मद्रास १४
८. श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन बोर्डिंग होम नं० ८ मॉडलीय रोड टी नगर मु० मद्रास १७
९ ए. किशनलाल म १४ एस एच रोड मु पेरम्बूर मद्रास ११
१ सेठ गणेशमलजी रतनमलजी मरलेचा मु० पो रेडहिल्स (मद्रास)
११ स्वामी रिखबदासजी केसरबाबी C/ श्री आदिनाथ जैन टेम्पल मु पो पोलाल-रेडहिल्स व्हाया मद्रास
१२. सेठ मिरदीचन्दजी कमलचन्दजी मरलेचा ठी रामपुरम् (मद्रास)
१३ सेठ मोहनलालजी C/० पी एम जैन नं ८५ वाचा स्ट्रीट मु० मद्रास ७
१४ गोलछा बैंक नं० ३ परीयनपकारन स्ट्रीट, साहूकार पेठ मु० मद्रास १

१५ सेठ खीमराजजी चोरडिया नं० ३६ जनरल मुथिया मुदालि स्ट्रीट साहूकार पेठ मु० मद्रास १

१६ सेठ मिसरीमलजी नेमीचन्दजी गोलेछा ठी० पो० अड्नावरम् कोतूरहाई रोड न० ३६ मद्रास २३

१७ सेठ जुगराजजी पारसमलजी लोढा न० २६ बाजार रोड मु० शैदापेठ मद्रास १५

१८ सेठ मूलचन्दजी माणकचन्दजी मावकर ४ कारस्ट्रीट शैदापेठ मद्रास १५

१९ सेठ विजयराजजी मुथा ४६७ थी थी रोड मु० पो० अलदूर मद्रास १६

२० सेठ गुलाबचन्दजी घीसुलालजी मरलेचा न० ४६ बाजार रोड मु० पो० पल्लावरम् जिला चंगलपेठ (मद्रास)

२१ सेठ देवीचन्दजी भवरलालजी विनायकिया मु० पो० ताम्बरम् जिला चंगल पेठ (मद्रास)

२२ सेठ धनराजजी मिश्रीमलजी सुराना मु० पो० ताम्बरम् जिला- चगल पेठ (मद्रास)

२३ सेठ सुमेरमलजी माणकचन्दजी धोका न० ४४ जनरल पीठ रसरोड माउन्टरोड मु० मद्रास २

२४ सेठ बस्तीमलजी धरमीचन्दजी खिवेसरा १६५ अमन कुलई स्ट्रीट नेहरू रोड मु० मद्रास १

२५ सेठ घीसुलालजी पारसमलजी सिंघवी मु० चंगल पेठ (मद्रास)

२६ सेठ दीपचन्दजी पारसमलजी मरलेचा मु० चंगल पेठ (मद्रास)

२७ सेठ मिश्रीमलजी पारसमलजी बरमेचा न० २१४ बाजार रोड मु० पुन्नमल्ली कन्टोनमेन्ट (मद्रास)

४० सेठ सोभागमलजी धरमचंदजी लोढा बाजार रोड
मु० मधुरान्तकम् जिला चंगल पेठ (मद्रास)
४१. सेठ कचरूलालजी करणावट साहूकार
मु० पो० अचरापाकम् जि लाचंगल पेठ (मद्रास)
४२ सेठ चन्दनमलजी घेवरचन्दजी मकलेचा पेरूमाल कोइलस्ट्रीट
मु० तिण्डीवनम् जिला-चंगल पेठ मद्रास
४३ एम सी धर्मीचन्दजी गोलेछा कासीकेड
मु० तिन्डीवनम् जिला चंगल पेठ (मद्रास)
४४ सेठ मंगलजी मणिलाल महेता C/o ओवरसीज ट्रेडर्स २२
डुप्लेच स्ट्रीट मु० पान्डीचेरी
४५ सेठ हीरालालजी लदमीचन्द मोदी C/oएच एल मोदी वैशाल
स्ट्रीट मु० पांडीचेरी
४६ सेठ शान्तिलाल वछराज महेता C/o एस. वछराज न० १
लबोरदनी स्ट्रीट मु० पाडीचेरी
४७ सेट जशवंतसिंह संग्रामसिंह महेता C/o इम्पोर्ट एक्सपोर्ट
कोरपोरेशन पोस्ट बाक्स नं० २८ कोसेकडे स्ट्रीट मु० पाडीचेरी
४८. सेठ जसराजजी देवराजजी सिंघवी मु० वलवानूर (मद्रास)
४९ सेठ प्रेमराजजी नेमीचन्दजी बोहरा मु० वलवानूर (मद्रास)
५० सेठ प्रेमराजजी महावीरचन्दजी भंडारी मु० वलवानूर (मद्रास)
५१ सेठ जशराजजी अजीतराजजी सिंघवी मु० पन्नरूटी
५२ सेठ आईदानजी अमरचन्दजी गोलेछा ज्वेलर्स बाजार रोड
मु० विल्लुपुरम् (मद्रास)
५३ सेठ सुखराजजी पारसमलजी दुगड़ बाजार रोड
मु० विल्लू पुरम् (मद्रास)

५४ सेठ मक्खनजी दुगड़ C/ श्री जैन स्टोर्स ठी पांजीरोड
मु० विल्लुपुरम् (मद्रास)

५५ सेठ देवराजजी मोहनलालजी चौधरी मु तिरु कोईलूर

५६ सेठ चुनीलालजी धरमीचन्दजी नाहर मु० भरगमगलूर स्टेशन
तिरु कोइलूर

५७ सेठ ए [illegible] जन रोकस मु० तिरुवन्नामलै जिला एन म

५८ सेठ तनराजजी बाबूलालजी बालेचा मु० पोलूर जिला-एन ए.

५९. सेठ भंवरलालजी बगरीलालजी बांठियामु पोलूर जिला एन ए.

६० सेठ बालचन्दजी भागरमलजी मुथा
मु० तिरुवन्नामलै जिला-एन ए.

६१ सेठ सेसमलजी माणकचन्दजी सिंघवी मु० आरनी जिला-एन ए.

६२. सेठ भंवरलाल भंडारी मु चेटपेट जिला-एन. ए.

६३ सेठ हीराचन्दजी नेमीचन्दजी बांठिया
मु० मॉरप्पक्कम जिला-एन. ए.

६४ सेठ माणकचन्दजी संपतराजजी चोरडिया ठी बाजार स्ट्रीट
मु० मॉरप्पक्कम जिला-एन ए

६५ सेठ धनेचन्दजी मिश्रीमलजी मरलेचा नं० ४२४ मेन बाजार
मु० वेल्लूर (मद्रास)

६६ श्री रघुनाथमलजी नं ४१९ मेन बाजार मु वेल्लूर

६७ एन. चेनराजचन्दजी मरलेचा नं० ४११ मेन बाजार मु वेल्लूर

६८. सेठ नेमीचन्दजी ज्ञानचन्दजी गोलेछा नं ७२ मेन बाजार
मु० वेल्लूर

६९ सेठ केवलचन्दजी मोहनलालजी मरलेचा नं० ७४ मेन बाजार
मु० वेल्लूर

७० सेठ तेजराजजी घीसुलालजी घोड़ा मु० पो० विरंचीपुरम

७१. सेठ लालचन्दजी मोहनलालजी मु० पो० विरंचीपुरम्

७२ सेठ सोहनराजजी धर्मीचन्दजी मु० पुन्नरी जिला चंगलपेठ (मद्रास)

७३ सेठ पुखराजजी भवरलालजी घूरड मु० राणी पेठ जिला एन ए

७४ सेठ केसरीमलजी मिसरीमलजी आछा
मु० थाला लाजाबाद जिला एन ए.

७५ सेठ केसरीमलजी अमोलकचन्दजी आछा
मु० धीग काचीपुरम् एस रेल्वे

७६ सेठ मिसरीमलजी घेवरचन्दजी मचेती
मु० छोटी काजीवरम् जिला-चगलपेठ

७७ सेठ उगमराजजी माणकचन्दजी सिंघवी
मु० वन्दवासी जिला-एन ए.

७८ सेठ सेममलजी सपतराजजी सकलेचा
मु० उत्तरमलुर जिला चंगलपेठ

७९ सेठ नेमीचन्दजी पारसमलजी आछा मु० चंगलपेठ (मद्रास)

८० सेठ सुपारसमलजी धनरूपमलजी चौरडिया
मु० नेलीकुपम् (एस ए.)

८१ सेठ जालमचन्दजी गोलेछा मु० मजाकुपम् (एस ए)

८२ सेठ पारसमलजी दुगड मु० परगी पेठ (एस ए)

८३ सेठ जुगराजजी रतनचन्दजी मुथा मु० काटपाड़ी (एन ए)

८४ सेठ समरथमलजी सुगनचन्दजी ललवानी मु० चंगम (एन ए)

८५ सेठ अम्बूलालजी संजतराजजी दुगड़ मु० गुडीयातम (एन ए)

८६ सेठ जसवतराजजी चम्पालालजी सिंघवी मु० आम्बुर (एन ए)

८७ सेठ मिसरीमलजी पारसमलजी मुथा मु० मान्पुर (एम. प.)

८८ सेठ पुखराजजी भनराजजी कटारिया मु० आरकोणम्

८९ सेठ गुलाबचन्दजी कन्हैयालालजी गादिया मु० आरकोणम्

९० सेठ सुखाममलजी बोहरा मु० सीयाली जिला-तन्जावर (मद्रास)

९१ सेठ मोपालसिंहजी पोकरना मु० चिदंबरम् (एस आर. रेल्वे)

९२ सेठ मोहनलालजी सुराना नं० ४२ बीग स्ट्रीट
मु० कुम्भ कोणम् जिला-तन्जावर

९३ सेठ मोतीलालजी श्री श्रीमाल ठी बीग स्ट्रीट
मु० कुम्भ कोणम् जिला- तन्जावर

९४ सेठ बीसमलजी मुकुनचन्दजी कानुगा
मु पो मायावरम् जिला- तन्जावर

९५ सेठ जेठमलजी बरडिया मु० मायावरम् जिला-तन्जावर
(एस आर.)

९६ सेठ ताराचन्दजी कोठारी ६/१ बाफरा राव स्ट्रीट
मु त्रिचनापल्ली (मद्रास)

९७ सेठ मोतीलालजी श्री श्रीमाल मु कोयाम्म बी. (एस रेल्वे)

९८. सेठ गणेशरामजी तिलोकचन्दजी मु० कब्बूर (एम डी)

९९ सेठ चम्पालालजी जैन मु कब्बूर (एम डी)

१०० सेठ मूलचन्दजी पारख मु० वीरची (मद्रास)

१०१ सेठ धनराजजी मोतीलालजी रांका नं० ५८ एलीफेन्ट गेट
मु० मद्रास

१०२. सेठ सुगनराजजी भंवरलालजी बोहरा नेहरू बाजार मु० मद्रास

१०३. सेठ चम्पालालजी लालेड़ा मोची बाजार मु० मद्रास

१०४. सेठ हीरालालजी रीकबचन्दजी पाटनी मु० सेलम
१०५ सेठ सुरजलालजी मगलचन्दजी गुलेछा मु० तीरुपातुर (एन ए)
१०६ सेठ गणेशमलजी मुथा मु० भुवनगीरी (यम. ये)
१०७ सेठ दीपचन्दजी घेवरचन्दजी चौरडिया
मु० डलुन्दर पेठ (यस ये)

१०८ सेठ चम्पालालजी बाबूलालजी लोढा ठी० बाजार रोड
मु० चीक बालापुर
१०९ सेठ जुगराजजी खिवराजजी मु० पेरम्बतुर जिला चगल पेठ
११० सेठ शंकरलालजी भवरलालजी काकरिया मु० पेरना पेठ (एन० ए०)

१११. सेठ भीकमचन्दजी भुरट मु० कलवे (एन० ए०)
११२. सेठ शकरलालजी बाकलीवाल मु० केथि कुपम (एन० ए०)
११३ एल० पुखराजजी साहूकार मु० सुगुवा छत्रम्
जिला चगल पेठ
११४ सेठ हस्तीमलजी साहूकार मु० कावेरी पाकम् (एन० ए०)
११५ सेठ धनराजजी केवलचन्दजी मु० तिरूमास (जिला० चंगल पेठ)
११६. सेठ अमोलकचन्दजी साहूकार मु० पालसिटी छत्रम् (जिला चंगल पेठ)
११७ सेठ केवलचन्दजी सुराना मु० त्रीमसी (जिला चंगल पेठ)
११८ सेठ जुगराजजी दुगड मु० अमजी केरा (मद्रास)
११९ सेठ दीपचन्दजी तिलोकचन्दजी नास्टा मु० वंगार पेठ
१२० सेठ आर० कंवरलालजी गोलेछा मु० वीरपातुर (एन० ए०
१२१ सेठ जीवराजजी साहूकार मु० सोलींगर (एन० ए०)

१३८ सेठ मिलापचन्दजी बोहरा मु० मंडिया (मैसूर)

१३६ सेठ पुखराजजी कोठारी मु० रामनगर (मैसूर)

१४० सेठ पन्नालालजी जैन मु० चिन्पटन (मैसूर)

१४१. सेठ किशनलालजी फूलचन्दजी लूणिया दीवान सुराप्पा लेन मु० बैंगलोर सिटी २

१४२. सेठ किस्तुरचन्दजी कुंदनमलजी लूकड़ ठी० चीकपेठ मु० बैंगलोर सिटी २

१४३ सेठ मिश्रीलालजी पारसमलजी कातरेला ठी० मामूल पेठ मु० बैंगलोर सिटी २

१४४ सेठ सिरेमलजी भवरलालजी मुथा न० ४५ रंग स्वामी टेम्पल स्ट्रीट मु० बैंगलोर सिटी २

१४५ सेठ घेवरचन्दजी जसराजजी गुलेच्छा रंगस्वामी टेम्पल स्ट्रीट मु० बैंगलोर सिटी २

१४६ सेठ मगनलाल केशवजी तुरकिया ठी० बोम्बे फैन्सी स्टोर्स चीक पेठ मु० बैंगलोर सिटी २

१४७ सेठ रूपचन्दजी शेषमलजी लूणिया ठी० मोरचरी बाजार मु० बैंगलोर १

१४८ सेठ गणेशमलजी मानमलजी लोढ़ा ठी० सर्पिसरोड़ मु० बैंगलोर १

१४६ सेठ मिश्रीमलजी भवरलालजी बोहरा मारवाड़ी बाजार मु० बैंगलोर १

१५० सेठ हीराचन्दजी फतहराजजी कटारिया ठी० केवलरीरोड़ मु० बैंगलोर १

१५१ सेठ मीठालालजी खुशालचन्दजी छाजेड़ तिमैयारोड़ बैंगलोर १

१६५ सेठ सेहसमलजी चेवरचन्दजी बागमत जिला धारवाड़
मु० गजेन्द्रगढ़

१६६. सेठ मदनमलजी सुगनचन्दजी मुथा कुष्टगी जिला रायपुर

१६७ राजेन्द्र क्लोथ स्टोर्स मु० गंगावती जिला रायचूर

१६८ सेठ गुलाबचन्दजी मनोहरचन्दजी बागमार
मु० गदक जिला-धारवाड़

१६९. सेठ हजारीमलजी हस्तीमलजी जैन मारकीट मु० बल्लारी

१७० सेठ मुलतानमलजी जशराजजी फानूगा मु० गुटकल

१७१ सेठ इन्द्रमलजी धोका C/o सेठ गुलाबचन्दजी घनराजजी
मु० आधोनी

१७२ सेठ छोगमलजी नगराजजी खीवसरा मु० सिघनूर
जिला-रायचूर

१७३. सेठ बादरमलजी सूरजमलजी धोका मु० यादगिरी

१७४ सेठ चुन्नीलालजी पीरचन्दजी बोहरा मु० रायचूर

१७५ सेठ कालुरामजी हस्तीमलजी मूथा गाधी चौक मु० रायचूर

१७६ सेठ जालमचन्दजी माणकचंदजी ६० राजेन्द्रगंज मु० रायचूर

आन्ध्र प्रांत

१७७ सेठ बचनमलजी गुलाबचन्दजी सुराना ठी० बड़ा बाजार
मु० बोलारम

१७८ सेठ समर्थमलजी आलमचन्दजी रांका ठी० पोस्ट मारकीट
मु० सिकन्दराबाद

१९२. सेठ छोगालालजी मुलतानमलजी क्लोथ मर्चेन्ट
ठी० सुभापरोड मु० धारवाड (मैसुर)
१९३ सेठ मुलतानमलजी हरकचन्दजी ठी० खड़ा बाजार
मु० बेलगाव (मैसूर)

महाराष्ट्र प्रांत

१९४ सेठ ठाकरसी देवसी वसा पो० ब० न० २०३ साहुपुरी
मु० कोल्हापुर
१९५ सेठ नेमचन्दजी डायाभाई वसा ठी० नवीं पेठ मु० सांगली
१९६ सेठ रतीलाल विठ्ठलदास गोसलिया मु० माधव नगर
१९७ सेठ कालीदास भाई चन्दभाई मु० सतारा
१९८ जयसिंगपुर आईल मील मु० जयसिंगपुर
१९९ सेठ बालचन्दजी जशराजी १३३५ रविवार पेठ मु० पुना २
२०० सेठ दौलतरामजी माणकचन्दजी जैन मु० बारामती जिला पुना

॥ समाप्तम् ॥